अली आदिल शाह

का

काव्य-संग्रह

प्रधान संपादक

डा० विश्वनाथ प्रसाद



संपादक

श्रीराम शर्मा

मुबारिज़ुद्दीन 'रफ़त'

क० मु० हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ

आगरा विश्वविद्यालय

आगरा

प्रकाशक—
संचालक,
क० मुं० हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ
आगरा विश्वविद्यालय आगरा।

प्रथम संस्करण १९५८ ई०
मूल्य ४॥)

मुद्रक
एस० के० कपूर
आगरा यूनीवर्सिटी प्रेस
आगरा

अली आदिल शाह का काव्य-संग्रह

अनुक्रमणिका

*सूचना—भूमिका में मुद्रित शीर्षक "दीवान" के स्थान पर "काव्य-संग्रह" होना चाहिए। कृपया यह सुधार कर लें।

प्रस्तावना

"दक्खिनी" को मैं हिन्दी का अभिन्न अंग मानता हूँ। उसके बिना न तो हिन्दी के और न उर्दू के उद्गम, विकास और प्रसार का विवरण पूरा हो सकता है। वस्तुतः हिन्दी ही उत्तर से दक्खिन जाकर और कुछ नये शब्द-भंडार से सँवर कर "दक्खिनी" बन गई। मूल हिन्दी या 'हिन्दवी' को ही कालान्तर में एक दूसरा नाम "दक्खिनी" दे दिया गया था। सोलहवीं-सत्रहवीं सदी तक मुस्लिम लेखक और कवि इसके लिए 'हिन्दी जबान' हिन्दी बोल या 'हिन्दवी' नाम का ही प्रयोग करते रहे। पर जब १४वीं शताब्दी में दिल्ली के अधिकार से मुक्त होकर दक्खिन स्वतंत्र हो गया, तब वहाँ बहमनी राज्य विजयनगर साम्राज्य और तदुपरान्त १५वीं सदी में बीजापुर में आदिलशाही गोलकुण्डा में कुतुबशाही, बीदर में बरीदशाही बरार में इमादशाही तथा अहमदनगर में निजामशाही सल्तनतें कायम हुईं। बहमनी राज्य का संस्थापक हसन गंगो (१३४७-७५ ई०) मधू ब्राह्मण का चेला था। इसलिए उसके राज्य में ब्राह्मणों का बहुत आदर और प्रभाव था। यहाँ तक कि बहमनी सुल्तान इब्राहीम आदिलशाह ने हुकूमत के लिए दक्खिन के ब्राह्मणों को मुकर्रर करना शुरू किया और जो हिसाब-किताब पहले फारसी में लिखे जाते थे वे अब उसके हुक्म से 'हिन्दवी' में लिखे जाने लगे। इसके अतिरिक्त १४वीं से १७वीं सदी तक के उपर्युक्त इन सभी केन्द्रों में हिन्दी के कवियों को बराबर आश्रय और प्रोत्साहन मिलता रहा। हिन्दी को ही वहाँ की सल्तनतों में राज भाषा का पद मिला क्योंकि उत्तर-भारत से गये हुए मुस्लिम अमीर सैनिक सिपाही पदाधिकारी तथा विद्वान् पूर्वी पंजाब दिल्ली और मेरठ की भाषा से ही परिचित थे मराठी-तेलुगु आदि दक्खिनी भाषाओं से नहीं। मुस्लिम सुल्तानों ने अपने दल-बल के साथ १४वीं सदी में विजेता के रूप में जब दक्षिण में प्रवेश किया था तो वे अपनी इसी पूर्वपरिचित तथा अभ्यस्त भाषा को अपने साथ ले गए थे। मुस्लिम सुलतानों के साथ उनके मुसाहिब परिजन और सहचर रूप में हिंदू कर्मचारी व्यापारी योद्धा और हिसाब किताब रखने वाले मुंशी आदि भी वहाँ गए। मलिक काफूर के समय से ही गूजरों की काफी बड़ी संख्या उधर पहले ही जा चुकी थी जिसके कारण दक्खिनी को उनके कवि गूजरी भी कहते थे। इसके अतिरिक्त उसके लिए कभी-कभी 'भाखा' या 'भाषा' नाम का भी प्रयोग हुआ करता था। उधर दक्खिन के लोग मुस्लिम शासकों की फारसी भाषा से बिल्कुल अनभिज्ञ थे। इसलिए संस्कृत प्राकृत तथा अपभ्रंश की परम्परा में विकसित हिन्दी ही उन्हें अपनी भाषाओं के समीप और परिचित सी लगी। अपनी संस्कृतमूलक शब्द-सम्पत्ति की उन्होंने हिन्दी में समानता पाई। इसके अतिरिक्त पुरातन सांस्कृतिक सम्बन्धों तीर्थ-स्थानों साधु-सन्तों वाणिज्य-व्यवसाय आदि के सम्पर्कों के कारण हिन्दी से उनका पहले से परिचय था। इसलिए इस भाषा को वहाँ जमने देर न लगी। अतः वहाँ के दरबारों के आश्रय और संरक्षण में दक्खिनी हिन्दी में एक समृद्ध

साहित्य का विकास हुआ। मुल्ला वजही ने अपनी मसनवी 'कुतुब मुश्तरी' में लिखा है —

"दखिन में जो दखिनी मिठी बात का
अदा नै किया कोई इस भात का।"

और सच पूछिए तो दक्खिन में ही क्यों मुस्लिम अमीर या फकीर और सूफी सन्त जहाँ-जहाँ गए अपने साथ पूर्वी पंजाबी और दिल्ली मेरठ की इसी खड़ी हिन्दी को लिए गए और पूरब में अवध या बिहार तक अपने नये निवास-स्थानों की बोल-चाल की भाषाओं के साथ इसका मिश्रण करते हुए नई-नई सूक्तियाँ (दोहे और गीत) जन साधारण की मंडली में सुनते-सुनाते गए। उन रचनाओं और सूक्तियों की भाषाओं के लिए उन्होंने बराबर हिन्दी ही नाम का व्यवहार किया परन्तु दक्खिन में जब मुस्लिम दरबारों के संरक्षण में इस भाषा को सर्वाधिक प्राधान्य और 'सरकारी जबान' का पद मिला तब इसका एक स्वतन्त्र नाम भी पड़ गया। 'दक्खिनी' विशेषण से विशष्य बन गया।

लगभग तीन चार शताब्दियों तक स्वतन्त्र रूप से दक्खिन में विकास प्राप्त करती हुई इस भाषा में वहाँ के जन-साधारण में प्रचलित मराठी तथा तेलुगु, कन्नड आदि द्रविड़ भाषाओं के प्रभाव भी स्वाभाविक रूप में पड़ते गए। यह आश्चर्य की बात नहीं है। इसका अध्ययन होना चाहिए कि हिन्दी पर ये प्रभाव किन-किन रूपों में पड़े हैं। साथ ही इसका भी ध्यान रहे कि इन कई शताब्दियों में उत्तर भारत में जो प्रवृत्तियाँ हिन्दी, उर्दू के निर्माण में काम करती रहीं उनसे यह दक्खिनी हिन्दी रूप विच्छिन्न सा रहा। परिणाम स्वरूप उसमें कई ऐसी विशेषताओं का विकास हुआ, जो उत्तर की हिन्दी या उर्दू में नहीं मिलती है। अपने उपर्युक्त संसर्गों के प्रभाव से दक्खिनी का शब्द-भण्डार उर्दू की तरह अरबी फारसी के दबाव में नहीं पड़ने पाया। उसमें परम्परा सिद्ध संस्कृत तथा प्रचलित भाषा के ठेठ देशी शब्दों का ही व्यवहार होता रहा। स्वतन्त्र इन्द्रिय ज्योत्स्ना विकार, तन मन चेष्टा तथा पिड इत्यादि जैसे संस्कृत शब्दों का प्रयोग उसमें बहुतायत से हुआ करता था। इस प्रकार यह भाषा नाम से ही नहीं रंग रूप से भी हिन्दी ही थी।

इस ग्रंथ के रचयिता अली आदिल शाह सत्रहवीं सदी में (१६२६ ई०) जब बीजापुर के बादशाह हुए तो उनके फारसी प्रेम के कारण उनके दरबार में हिन्दी के अतिरिक्त फारसी काव्य की चर्चा जोरों से शुरू हुई। उन्हीं के राजकवि नुसरती थे जिनके लिखे हुए तीन प्रामाण प्रंथ-मिलते हैं—गुलशने इश्क तारीखे सिकन्दरी और अलीनामा। इनमें से अलीनामा में आदिल शाह के दस वर्ष (१६५६–१६६५) तक के शासन का वर्णन है। यह ग्रंथ आज भी आदर से देखा जाता है। इसी नुसरती ने दक्खिनी से हिन्दीपन को दूर करके उसे फारसी रूप देने का सिलसिला खड़ा किया। फिर भी हम देखते हैं कि १८वीं सदी के प्रारम्भ तक दक्खिनी में हिन्दी काव्य-परम्परा का क्रम निर्मूल नहीं हुआ था। यहाँ तक कि वली औरंगाबादी के भी (जिनके दिल्ली-आग

सन से (१७०० ई०) उर्दू-काव्य की परम्परा दिल्ली में शुरू हुई) पहले के कई ऐसे शेर हैं जिनमें हिन्दी का रूप स्पष्ट है ।

आज भी अपनी अनेक विशेषताओं के साथ दक्खिनी आंशिक रूप में हैदराबाद मैसूर, बरार, बम्बई, गुजरात आदि में बसे हुए मुस्लिम और कुछ हिन्दू-परिवारों में बोली जाती है । ग्रियर्सन के 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया' में दक्खिनी बोलने वालों की संख्या १६२४१७२० आँकी गई है । इस प्रकार हिन्दी भाषा भाषी जनसमूह के साथ दक्खिनी का अटूट सम्बन्ध है । उत्तर और दक्खिन के भाषायी सम्बन्ध की यह एक सुनहरी शृंखला है । दक्खिनी इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी के विकास में उत्तर की ही नहीं, दक्खिन की भी महत्वपूर्ण देन है और उसमें दक्खिनी भाषाओं का भी योगदान है । वस्तुतः यदि दक्खिनी के रूप में हिन्दी का प्रसार और विकास नहीं हुआ होता तो आज राष्ट्र-भाषा या राज भाषा के रूप में उसमें उस व्यापकता का समावेश नहीं हो पाता जिसे उसने अपने प्रवासियों के इन सुदूर सम्पर्कों से अर्जित किया है । क्या भाषा और क्या साहित्य दोनों ही दृष्टियों से हिन्दी के इतिहास के अन्तर्गत दक्खिनी का विशिष्ट स्थान है । उसके यथावत् विवरण के बिना हिन्दी का कोई भी इतिहास पूर्ण नहीं कहा जा सकता । इस ग्रंथ के प्रकाशन में इसी अपूर्णता की पूर्ति की ओर हमारा ध्यान है ।

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है, इस संग्रह का रचयिता अली आदिल शाह [द्वितीय] फारसी का बड़ा प्रेमी था । कहा जाता है कि फारसी पढ़ने में वह इस कदर मशगूल था कि हिन्दुस्तानी बोलना तक भूल गया था । परन्तु इस संकलन को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐसी बात हरगिज नहीं थी । अपने फारसी-प्रेम के बावजूद भी वह हिंदी को भूला नहीं और हिंदी में भी चमत्कार पूर्ण रचनाएँ कीं । एक ओर जहाँ उसने अपना उपनाम 'शाही' रखा था वहाँ दूसरी ओर हिंदी उपनाम 'मन्त पीर' मदन रूप' का भी प्रयोग किया । एक ओर जहाँ उसने कसीदा मसनवी गजल मुखम्मस और मुसम्मन, रुबाई आदि में रचनाएँ कीं तो दूसरी ओर कबित्त दाहा (दोहरा) झूलना आदि प्रचलित हिंदी छंद तथा भूपाली आसावरी नट, बिहागरा केदारा देसी, टोड़ी सोगड़ा सारंग श्री गौड़ी भैरव अड़ाना गौड़मल्लार, यमन (ईमन) रामकली पूरबी बिलावल आदि शास्त्रीय तथा लोकप्रिय राग रागनियों के हिंदी गीत भी लिखे । एक ओर जहाँ उसने अरबी-फारसी के शब्दों का प्रयोग किया है वहाँ दूसरी ओर हिंदी के "अखंड अपर' "अलख" "मुख' (मुख) "दरसन' नयन" निरमल" "भूषण" "नदी" (नदियाँ) "तिरलोक" (त्रिलोक) "कलंकी" परताब' (प्रताप) 'सजन' 'पीव' आदि जैसे परम्परागत शब्दों का भी स्वाभाविक और निधड़क प्रयोग किया है । भाषा विज्ञानियों के लिए यह भी एक ध्यान देने की बात है कि उसकी भाषा के अनेक प्रयोगों में मराठी का प्रभाव भी स्पष्ट लक्षित है । अली आदिल शाह की अनेक रचनाएँ और अनेक स्थल फारसी काव्यों की परिपाटी का छोड़कर सर्वथा भारतीय वातावरण म रंजित हैं ।

इस संकलन में अली आदिल शाह की रचनाओं को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि कवि की पूरी रचना-शैली का परिचय पाठकों को एकत्र प्राप्त हो जाय। इस संग्रह (कुल्लियात) की मूल हस्तलिखित प्रति हैदराबाद के सरकारी संग्रहालय में सुरक्षित है, वहाँ से उसकी फोटो प्रतिलिपि प्राप्त करके श्री श्रीराम शर्मा और श्री मुबारिजुद्दीन 'रफ़अत' ने उसका नागरी रूपान्तर तैयार किया है। मूल रचना के साथ उसके शाब्दिक विकास का क्रम प्रकट करते हुए अर्थ भी दे दिया गया है। इसके अतिरिक्त कठिन शब्दों के अर्थ तथा उनके तत्सम और व्युत्पत्तिगत रूपों का निर्देश भी कर दिया गया है, जिससे पाठकों को इस कृति का पूरा आनंद प्राप्त करने में सुगमता हो।

मूल पुस्तक की हस्तलिखित प्रति को देखने से इस बात का ठीक-ठीक पता नहीं चलता कि उसका पहला पत्र और अन्तिम पत्र कौन सा है। इसलिए पुस्तक के बीच से एक पत्र और अन्तिम अंशों से एक पत्र लेकर उनके चित्र लिखावट के नमूनों के तौर पर दिए जा रहे हैं। कवि के इतिहास आदि के सम्बन्ध में सम्पादकों ने विस्तार से प्रकाश डालकर आवश्यक जानकारी सुलभ कर दी है। इसके लिए वे हम सब की ओर से साधुवाद के पात्र हैं।

यह संग्रह (कुल्लियात) उर्दू में भी अब तक नहीं छपा है। हमें इस बात का हर्ष और गौरव है कि यह महत्त्वपूर्ण संग्रह पहले पहल हिंदी में ही छप रहा है और इसे प्रथम प्रथम प्रकाश में लाने का श्रेय हिंदी विद्यापीठ को ही प्राप्त हो रहा है। इसके संकलयिता प्रिय श्री श्रीराम शर्मा अनुसंधान और अनुशीलन के कार्यक्रम में निश्चित् हमारे विद्यापीठ-परिवार के अंग बन चुके हैं। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक में साहित्यानुरागियों तथा भाषाशास्त्र के प्रेमियों को एक समान मनोरंजन और अध्ययन-अनुशीलन की महत्त्वपूर्ण सामग्री मिलेगी।

क० मुं० हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ
आगरा विश्वविद्यालय,
आगरा
धन्वन्तरि त्रयोदशी २०१२ वि०

विश्वनाथ प्रसाद
संचालक

अली आदिल शाह

का

काव्य-संग्रह

भूमिका

बहमनी साम्राज्य किसी समय दक्षिण भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य था। १५वीं शती के आरम्भ में यह साम्राज्य उन्नति की चरम सीमा पर पहुँचा हुआ था। इस शती की समाप्ति के साथ-साथ यह साम्राज्य नष्ट हो गया। गुलबर्गा और बीदर में जो विशाल राजभवन बनाये गये थे वे खँडहरों में परिवर्तित होने लगे। इन दोनों नगरों में बहमनी वंश के सुल्तानों के जो बड़े-बड़े मकबरे बने थे वे निर्जीव रहने लगे। गुलबर्गा और बीदर दोनों नगर उजड़ गये किन्तु बीजापुर, गोलकुण्डा और अहमदनगर में नये दुर्गों की दीवारें उठने लगीं आकाश छूने लगीं। मनीषियों और कवियों के लिए नया आश्रय मिला। गुलबर्गा और बीदर के खंडहर आज भी विद्यमान हैं, किन्तु इन नगरों में संस्कृति और ज्ञान-ध्यान के जो आयोजन प्रारंभ हुए थे वे समाप्त नहीं हुए। इन अनुष्ठानों के यजमान और पुरोहित दोनों दक्षिण के नवोदित तीन नगरों बीजापुर, गोलकुण्डा और अहमदनगर—में बस गये और कुछ ही दिनों में शान्त वातावरण ने उस अनुष्ठान की पूर्ति में सहायता प्रदान की।

पन्द्रहवीं शती के उत्तरार्द्ध में बहमनी साम्राज्य बुरी तरह लड़खड़ा रहा था। राजवंश के महत्वाकांक्षी किन्तु अदूरदर्शी वंशधरों की प्रतिस्पर्द्धा और सामन्तों के षड्यन्त्रों और गुजरात के शाहों के आक्रमणों ने जब इस साम्राज्य को जर्जर बना दिया था तो उन दिनों साम्राज्य की सेवा में कुछ महत्वपूर्ण व्यक्ति दत्तचित्त थे और शुभ अनुष्ठानों का सम्पन्न किया जा रहा था। साम्राज्य का संचालन उन दिनों प्रधान मंत्री महमूद गावान के हाथ में था। महमूद गावान ने बीदर में एक विद्यालय की स्थापना की थी। इस विद्यालय में अध्यापन-कार्य के लिए दूर-दूर से विद्वानों को निमंत्रित किया गया था। महमूद गावान सामन्तों के षड्यन्त्र के फलस्वरूप प्राणदण्ड का भागी बना किन्तु उसके निमंत्रण पर जो विद्वान बीदर में एकत्रित हुए थे उन्हें बहुत दिन तक निराश्रित नहीं रहना पड़ा। दक्षिण के नवोदित मुस्लिम राज्यों में उन्हें आदर के साथ बुलाया गया।

बीजापुर गोलकुण्डा अहमदनगर

जिन दिनों बहमनी साम्राज्य जर्जरित अवस्था में लड़खड़ा रहा था साम्राज्य को ऐसे सामन्तों की सेवाएं उपलब्ध थीं जिन पर किसी भी राजवंश को गौरव प्राप्त हो सकता था। बहमनी साम्राज्य को इससे पूर्व इतने वीर दूरदर्शी और योग्य सामन्त प्राप्त नहीं हुए थे। महमूद गावान का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। यूसुफ आदिल कुली कुतुब और निज़ामुलमुल्क तीन ऐसे सरदार थे जो सम्पूर्ण साम्राज्य की बागडोर सम्भाले हुए थे। यह आश्चर्य की बात थी कि इन सुयोग्य सामन्तों के रहते हुए भी साम्राज्य की रक्षा न हो सकी। इन दूरदर्शी सामन्तों ने भविष्य को पहचान लिया था अतः उन्होंने स्वतंत्र राज्यों की स्थापना की। सब से पहले यूसुफ आदिल साम्राज्य की सेवा से पृथक हुआ। यूसुफ आदिल को महमूद गावान बहुत चाहता था। उसका पालन-पोषण भी महमूद गावान की देख-रेख में हुआ था। महमूद गावान उसे पुत्र तुल्य मानता था। जब महमूद गावान को प्राणदंड दिया गया तो यूसुफ को बहुत बुरा लगा। समय पाकर उसने बीजापुर में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। इसी तरह कुली कुतुब ने गोलकुंडा और निज़ामुल मुल्क ने अहमदनगर को राजधानी बनाकर नये राज्यों की नींव डाली। यद्यपि तीनों सामन्तों ने बहमनी साम्राज्य के तीन बड़े भागों पर शासन स्थापित किया था किन्तु बहुत दिनों तक बहमनी वंश के प्रति उनकी आस्था बनी रही। जिस समय इस वंश के उत्तराधिकारी बड़ी विपन्नावस्था में थे यूसुफ आदिल ने उन्हें अपने यहाँ आश्रय दिया और उनके साथ ऐसा बर्ताव किया जैसा सेवक स्वामी के साथ करता है।

कुली कुतुब ने जीते जी कभी अपने को शासक नहीं माना। उसके मरने के बाद ही कुतुब शब्द के साथ 'शाह' शब्द जुड़ा और कुतुब वंश के स्थान पर कुतुबशाह शब्द का प्रयोग होने लगा।

बीजापुर के अधीन वह कन्नड़ भाषी प्रदेश था जो उन दिनों विजय नगर के शासन में नहीं था। आन्ध्र के कुछ भाग पर विजय नगर का आधिपत्य था और कुछ भाग पर गोलकुंडा का। अहमदनगर का शासन मराठी भाषी क्षेत्र पर था। बीजापुर राज्य के अन्तर्गत कुछ मराठी भाषी क्षेत्र भी शासित होता था। बीदर में कुछ दिनों के लिए बरीद शाही राज्य रहा किन्तु इस वंश का अधिकार-क्षेत्र बहुत सीमित था। बीदर का बरीदशाही वंश अधिक समय तक शासन न कर सका।

विजयनगर साम्राज्य

इन तीनों राज्यों को सबसे अधिक भय विजयनगर साम्राज्य से था। अलाउद्दीन खिलजी और उसके सेनापति मलिक काफ़ूर के सामने देवगिरि के यादव वरंगल के काकतीय और द्वारसमुद्र के होयसला अपने राज्यों की रक्षा न कर सके किन्तु इन तीनों राज्यों के पतन के पश्चात् शीघ्र ही विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हुई और इस साम्राज्य ने दक्षिण भारत की जनता में नई आस्था और नया विश्वास उत्पन्न किया। भूमि के सम्बन्ध में नई व्यवस्था काम में आई। व्यापार में वृद्धि हुई। कला और साहित्य

के सम्बन्ध में इस साम्राज्य के संचालकों ने जो कुछ प्रयत्न किये उन्हें भुलाया नहीं जा सकता। इस साम्राज्य की छत्र-छाया में तेलुगु के श्रेष्ठ शिल्पकारों ने साहित्य की उस शैली का अवलम्बन किया जो दुर्दिनों में भी हरी-भरी बनी रही। कन्नड़ साहित्य को पुनर्जीवन मिला। वैदिक वाङ्मय के उद्धार के लिए इस साम्राज्य ने जो प्रयत्न किये उनकी तुलना पूर्ववर्ती किसी राजवंश से नहीं की जा सकती। विजयनगर साम्राज्य और दक्षिण के नवोदित मुस्लिम राज्यों में सदैव संघर्ष चलता रहा। अन्त में तीनों राज्यों के संयुक्त प्रयत्नों ने विजय नगर की शक्ति को तालीकोटा के युद्ध क्षेत्र में परास्त किया। कुछ समय के लिए दक्षिण भारत में बीजापुर, गोलकुण्डा और अहमदनगर बहुत शक्तिशाली राज्य बन गए। यह प्रश्न हो सकता है—यदि मुग़ल साम्राज्य इन तीनों राज्यों का विरोधी न बनता, महाराष्ट्र में शिवाजी जन्म न लेते और तीनों राज्यों में विजयनगर से लड़ते समय जो एकता उत्पन्न हुई थी वह बनी रहती तो दक्षिण भारत का इतिहास किस तरह लिखा जाता? ये तीनों राज्य भारतवर्ष के इतिहास पर क्या प्रभाव डालते? आज इन प्रश्नों का उत्तर कौन दे सकता है?

इन प्रश्नों का उत्तर चाहे कोई न दे सके, किन्तु यह कहा जा सकता है कि इन राज्यों ने कुछ नई परम्पराएँ स्थापित की थीं। बहमनी शासकों ने अनुभव किया था कि स्थानीय जनता की संस्कृति और उसके साहित्य में कुछ उत्कृष्ट तत्त्व विद्यमान हैं। उस समय अकबर का जन्म नहीं हुआ था। फ़ीरोज़शाह बहमनी का जो मज़ार गुलबर्गा में बना हुआ है वह मुस्लिम और हिन्दू स्थापत्य कला के मिलन का अच्छा उदाहरण है। अकबर ने जो रंग ढंग और नीति अपनाई थी वह अकबर के साथ समाप्त हो गई किन्तु दक्षिण भारत में जिस परम्परा का सूत्रपात फ़ीरोज़शाह बहमनी ने किया था वह गोलकुण्डा में मुहम्मद क़ुली क़ुतुबशाह के युग में पूर्णतया विकसित हुई और अबुल हसन तानाशाह के समय में भी विद्यमान रही और बीजापुर ने भी उसे विकसित करने के लिए पूरा योग दिया। इन दोनों राज्यों के नरेशों को संगीत तथा साहित्य से बड़ा प्रेम था। इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय) ने भिन्न भिन्न राग रागिनियों में गीत लिखे जो 'नवरस' नामक संकलन में संकलित हैं। उसने 'जगद्गुरु' की उपाधि स्वीकार की थी। उसके दरबार में दूर-दूर के संगीतज्ञ आते और समादृत होते। हिन्दुस्तानी संगीत में गोलकुण्डा और बीजापुर के नरेशों की समान रुचि थी। बीजापुर और गोलकुण्डा के पुराने भवनों का निरीक्षण किया जाये अथवा वहाँ के पुराने संगीतज्ञ घरानों के वंशजों से गीत सुने जायें, हम समन्वय की प्रवृत्ति को शक्तिशाली रूप में देखते हैं।

दक्खिनी भाषा

समन्वय की यह प्रवृत्ति पूरी तरह प्रतिफलित हुई भाषा के क्षेत्र में। निस्सन्देह इन राज्यों में कुछ सामन्त और राज्याधिकारी तथा धर्मोपदेष्टा ऐसे थे जिनकी मातृभाषा तुर्की ईरानी अथवा अरबी थी। राज्य का कार्य फ़ारसी में होता था, किन्तु साधारण कर्मचारी या तो दिल्ली बीजापुर और अहमदाबाद से आये थे या फिर दक्षिण भारत के निवासी थे। दक्षिण भारत के बहुत से हिन्दू बड़े-बड़े पदों पर नियुक्त थे और कुछ

हिन्दुओं ने धर्म-परिवर्तन भी किया था। जो लोग दिल्ली जौनपुर और अहमदाबाद से यहाँ आये थे वे घरेलू बोलचाल में हिन्दी के उस रूप का प्रयोग कर रहे थे जो क्षेत्रीय प्रभावों को लिये हुए था। जो हिन्दी क्षेत्रीय बोलियों के प्रभावों को ग्रहण कर वर्तमान बिहार, उत्तर प्रदेश राजस्थान और पंजाब के बड़े भाग की सांस्कृतिक भाषा बनने जा रही थी जिसमें अमीर खुसरो ने पहेलियाँ लिखीं जिसमें विद्यापति ने गद्य लिखा और जिसमें कबीर दिव्य चिन्तन को शब्दों का रूप दे रहे थे। निस्सन्देह इस भाषा में उस समय तक फारसी के समान उच्चकोटि के काव्य नहीं लिखे गये थे अरबी के समान उसमें चिन्तन-सामर्थ्य नहीं था फारसी और अरबी की तरह भावों की अभिव्यक्ति नहीं थी, इतना होने पर भी इस हिन्दी के अपने गुण कम नहीं थे। उसमें साहित्यिक भाषा बनने की क्षमता थी। संस्कृत प्राकृत और अपभ्रंश के विकास में योग देने वाले दाक्षिणात्य बाहर व्यक्ति हिन्दी के इस स्वरूप से परिचय प्राप्त करने में कठिनाई अनुभव नहीं कर रहे थे। यह भाषा दक्षिणी भाषाओं से विशेष कर मराठी से शब्दावली ले सकती थी। बीजापुर और गोलकुण्डा के शासकों ने इस भाषा के विकास में उल्लेखनीय योग दिया। फारसी के बड़े से बड़े लेखक और कवि के समान इस बोली के कवि और लेखक दरबार में आदर पाते थे। शासक स्वयं इस बाली में कविता लिखने लगे। बड़े-बड़े धर्मोपदेष्टाओं ने इस बोली में उपदेश देना प्रारंभ किया। धार्मिक विषयों पर टीकाएँ लिखी जाने लगीं। इस भाषा न शीघ्र ही सांस्कृतिक भाषा का पद ग्रहण किया और जीवन के सभी क्षेत्रों में इसका व्यवहार होने लगा। यह बोली हिन्दी की एक विशेष शैली है। हिन्दी की अन्य शैलियों और विभाषाओं से इसका पार्थक्य प्रकट करने के लिए इस बोली को दक्खिनी कहा जा सकता है। इस विभाषा के लिए आजकल यही नाम प्रयुक्त होता है।

तीनों राज्यों का अन्त

विजय नगर साम्राज्य की समाप्ति के पश्चात दक्षिण के ये तीनों मुस्लिम राज्य बहुत दिनों तक शक्तिशाली नहीं रहे। दिल्ली के मुगल शासक इन राज्यों को अच्छी दृष्टि से नहीं देखते थे। अहमद नगर उत्तर भारत के निकट था। उसकी सीमाएँ मुगल साम्राज्य की सीमा से मिलती थीं। अकबर ने सबसे पहले इसी राज्य पर आक्रमण किया। अहमदनगर का अस्तित्व समाप्त हो गया। अहमदनगर का शासन-भार मुगल साम्राज्य में चला गया। जहाँगीर और शाहजहाँ के समय में बीजापुर और गोलकुण्डा फलते-फूलते ने ज्यों ... के संकटों से छुटकारा पाया उसने दक्षिण के ... स ... निश्चय किया। इन्हीं दिनों महाराष्ट्र में ... ने ... में एक बड़े पद पर था। शिवाजी ... लिया ... शासों तथा ... गजेब पहले ... । ताज ... को

प्रदेश शिवाजी ने नहीं लिया था उस पर उसने अधिकार कर लिया। बीजापुर के पश्चात्
औरंगजेब ने गोलकुण्डा पर आक्रमण किया। जब बीजापुर और गोलकुण्डा के स्वतंत्र राज्य
न रहे तो दक्षिण भारत का शक्ति-सन्तुलन जाता रहा। औरंगजेब को सीधे मराठों से
लड़ना पड़ा। वह औरंगाबाद में बस गया। राजधानी दिल्ली के बहुत से परिवार औरंगाबाद
में आये और अन्त में औरंगजेब की अन्त्येष्टि भी औरंगाबाद के निकट ही हुई।

यहाँ इतना और उल्लेख करना आवश्यक है कि बीजापुर और गोलकुण्डा के
शासक शिया थे। धर्म के बारे में इस सम्प्रदाय के लोग सुन्नी तथा अन्य सम्प्रदायों से
सम्बन्धित मुसलमानों की तरह आस्था रखते हैं किन्तु उनमें कुछ विशेष बातें हैं जो उन्हें
दूसरे मुसलमानों से पृथक करती हैं। रहन-सहन में भी उनकी कुछ विशेषताएँ स्पष्ट
दिखाई देती हैं। ईरानी साहित्य के सम्बन्ध में इन लोगों की रुचि स्पष्ट है। ईरानी
परम्परा के बहुत से चिन्ह इन लोगों में विद्यमान हैं। ये ऐसे चिन्ह हैं जो बीजापुर
और गोलकुण्डा के शासकों को भारतीय जनता के निकट किन्तु दिल्ली के सुन्नियों से
पृथक करते थे।

अहमदनगर का निजामुलमुल्क वंश अधिक समय तक शासनारूढ़ न रह सका।
आदिलशाही वंश और कुतुबशाही वंश लगभग दो सौ वर्ष तक राज्य करते रहे। इन
दोनों राज्यों में इन दो शतियों में बहुत से उल्लेखनीय कार्य किये। संगीत स्थापत्य आदि
के अतिरिक्त दक्खिनी वाणी के विकास में भी इन दोनों राजवंशों ने समान रूप से
योग दिया।

प्रस्तुत संकलन आदिलशाही वंश के सातवें राजा अली आदिलशाह (द्वितीय) का
लिखा हुआ है। इस वंश के नरेशों की तालिका निम्न प्रकार है—

	शासन काल
(१) यूसुफ आदिलशाह	(१४९० ई०–[illegible])
(२) इस्माइल आदिलशाह	(१५२८ ई०–१५३४ ई०)
(३) इब्राहीम आदिलशाह (प्रथम)	(१५३४ ई०–१५५७ ई०)
(४) अली आदिलशाह (प्रथम)	(१५५७ ई०–१५८० ई०)
(५) इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय)	(१५८० ई०–१६२६ ई०)
(६) मुहम्मद आदिलशाह	(१६२६ ई०–१६५६ ई०)
(७) अली आदिलशाह (द्वितीय)	(१६५६ ई०–१६७२ ई०)
(८) सिकन्दर आदिलशाह	(१६७२ ई०–१६८६ ई०)

बीजापुर साहित्य साधना

यूसुफ आदिल शाह ने महमूद गावान का धर्म पुत्र था उसने सबसे पहले बहमनी साम्राज्य
के कुछ भाग पर स्वतंत्र शासन स्थापित किया था जब बीदर के मुस्लिम विद्वान और
कवि बीजापुर चले आये। इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय) के शासनकाल में बीजापुर
साहित्य संगीत और धार्मिक चिन्तन का केन्द्र बन गया। उसकी उपाधि 'जगद्गुरु' थी।
संगीत के साथ साथ उसमें साहित्य के प्रति रुचि थी। स्वयं ब्रज भाषा में गीत लिखता

हिन्दुओं ने धर्म-परिवर्तन भी किया था। जो लोग दिल्ली जौनपुर और अहमदाबाद से यहाँ आये थे वे बरेलू बोलचाल में हिन्दी के उस रूप का प्रयोग कर रहे थे जो क्षेत्रीय प्रभावों को लिये हुए था। जो हिन्दी क्षेत्रीय बोलियों के प्रभावों को ग्रहण कर वर्तमान बिहार, उत्तर प्रदेश राजस्थान और पंजाब के बड़े भाग की सांस्कृतिक भाषा बनने जा रही थी जिसमें अमीर खुसरो ने पहेलियाँ लिखीं जिसमें विद्यापति ने गद्य लिखा और जिसमें कबीर दिव्य चिन्तन को शब्दों का रूप दे रहे थे। निस्सन्देह इस भाषा में उस समय तक फारसी के समान उच्चकोटि के काव्य नहीं लिखे गये थे अरबी के समान उसमें चिन्तन-सामर्थ्य नहीं था फारसी और अरबी की तरह भावों की अभिव्यक्ति नहीं थी, इतना होने पर भी इस हिन्दी के अपने गुण कम नहीं थे। उसमें साहित्यिक भाषा बनने की क्षमता थी। संस्कृत प्राकृत और अपभ्रंश के विकास में योग देने वाले दाक्षिणात्य साक्षर व्यक्ति हिन्दी के इस स्वरूप से परिचय प्राप्त करने में कठिनाई अनुभव नहीं कर रहे थे। यह भाषा दक्षिणी भाषाओं से विशेष कर मराठी से शब्दावली ले सकती थी। बीजापुर और गोलकुण्डा के शासकों ने इस भाषा के विकास में उल्लेखनीय योग दिया। फारसी के बड़े से बड़े लेखक और कवि के समान इस बोली के कवि और लेखक दरबार में आदर पाते थे। शासक स्वयं इस बोली में कविता लिखने लगे। बड़े-बड़े धर्मोपदेष्टाओं ने इस बोली में उपदेश देना प्रारंभ किया। धार्मिक विषयों पर टीकाएँ लिखी जाने लगीं। इस भाषा ने शीघ्र ही सांस्कृतिक भाषा का पद ग्रहण किया और जीवन के सभी क्षेत्रों में इसका व्यवहार होने लगा। यह बोली हिन्दी की एक विशेष शैली है। हिन्दी की अन्य शैलियों और विभाषाओं से इसका पार्थक्य प्रकट करने के लिए इस बोली को दक्खिनी कहा जा सकता है। इस विभाषा के लिए आजकल यही नाम प्रयुक्त होता है।

तीनों राज्यों का अन्त

विजय नगर साम्राज्य की समाप्ति के पश्चात दक्षिण के ये तीनों मुस्लिम राज्य बहुत दिनों तक शक्तिशाली नहीं रहे। दिल्ली के मुगल शासक इन राज्यों को अच्छी दृष्टि से नहीं देखते थे। अहमद नगर उत्तर भारत के निकट था। उसकी सीमाएँ मुगल साम्राज्य की सीमा से मिलती थीं। अकबर ने सबसे पहले इसी राज्य पर आक्रमण किया। अहमदनगर का अस्तित्व समाप्त हो गया। अहमदनगर का शासन क्षेत्र मुगल साम्राज्य में चला गया। जहाँगीर और शाहजहाँ के समय में बीजापुर और गोलकुण्डा फलते-फूलते रहे। औरंगज़ेब ने ज्यों ही घरेलू झंझटों से छुटकारा पाया उसने दक्षिण के शेष दो मुस्लिम राज्यों को समाप्त करने का निश्चय किया। इन्हीं दिनों महाराष्ट्र में शिवाजी का उदय होता है। शिवाजी का पिता बीजापुर में एक बड़े पद पर था। शिवाजी ने महाराष्ट्र के मुगल राज्य को पहले ज्यों का त्यों छोड़ दिया और बीजापुर के ग्रामों तथा दुर्गों पर अधिकार करना प्रारंभ किया। यह स्पष्ट दिखाई देता है औरंगज़ेब पहले शिवाजी से नहीं बीजापुर के आदिलशाहों से निपटना चाहता था। इस स्थिति का लाभ शिवाजी ने पूरी तरह से उठाया। औरंगज़ेब ने बीजापुर पर आक्रमण किया और जो

प्रदेश शिवाजी ने नहीं लिया था उस पर उसने अधिकार कर लिया। बीजापुर के पश्चात औरंगज़ेब ने गोलकुण्डा पर आक्रमण किया। जब बीजापुर और गोलकुण्डा के स्वतंत्र राज्य न रहे तो दक्षिण भारत का शक्ति-सन्तुलन जाता रहा। औरंगज़ेब को शेष मराठों से लड़ना पड़ा। वह औरंगाबाद में बस गया। राजधानी दिल्ली के बहुत से परिवार औरंगाबाद में आये और अन्त में औरंगज़ेब की समाधि भी औरंगाबाद के निकट ही हुई।

यहाँ इतना और उल्लेख करना आवश्यक है कि बीजापुर और गोलकुण्डा के शासक शिया थे। धर्म के बारे में इस सम्प्रदाय के लोग सुन्नी तथा अन्य सम्प्रदायों से सम्बन्धित मुसलमानों की तरह आस्था रखते हैं किन्तु उनमें कुछ विशेष बातें हैं जो उन्हें दूसरे मुसलमानों से पृथक करती हैं। रहन-सहन में भी उनकी कुछ विशेषताएँ स्पष्ट दिखाई देती हैं। ईरानी साहित्य के सम्बन्ध में इन शासकों की रुचि स्पष्ट है। ईरानी परम्परा के बहुत से चिन्ह इन शासकों में विद्यमान हैं। ये ऐसे चिन्ह हैं जो बीजापुर और गोलकुण्डा के शासकों को भारतीय जनता के निकट किन्तु दिल्ली के सुल्तानों से पृथक करते थे।

अहमदनगर का निज़ामुलमुल्क वंश अधिक समय तक शासनारूढ़ न रह सका। आदिलशाही वंश और कुतुबशाही वंश लगभग दो सौ वर्ष तक राज्य करते रहे। इन दोनों राज्यों ने इन दो शतियों में बहुत से उल्लेखनीय कार्य किये। संगीत स्थापत्य आदि के अतिरिक्त दक्खिनी भाषा के विकास में भी इन दोनों राजवंशों ने समान रूप से भाग लिया।

प्रस्तुत संकलन आदिलशाही वंश के सातवें राजा अली आदिलशाह (द्वितीय) का लिखा हुआ है। इस वंश के शासकों की तालिका निम्न प्रकार है—

	शासन काल
(१) यूसुफ़ आदिलशाह	(१४९० ई०–१५१० ई०)
(२) इस्माइल आदिलशाह	(१५१० ई०–१५३४ ई०)
(३) इब्राहीम आदिलशाह (प्रथम)	(१५३४ ई०–१५५७ ई०)
(४) अली आदिलशाह (प्रथम)	(१५५७ ई०–१५८० ई०)
(५) इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय)	(१५८० ई०–१६२६ ई०)
(६) मुहम्मद आदिलशाह	(१६२६ ई०–१६५६ ई०)
(७) अली आदिलशाह (द्वितीय)	(१६५६ ई०–१६७२ ई०)
(८) सिकन्दर आदिलशाह	(१६७२ ई०–१६८६ ई०)

बीजापुर साहित्य-साधना

यूसुफ़ आदिल महमूद गावान का दास पुत्र था उसने सबसे पहले बहमनी साम्राज्य के कुछ भाग पर स्वतंत्र शासन स्थापित किया था जब बीदर के मुस्लिम विद्वान और कवि बीजापुर चले आये। इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय) के शासनकाल में बीजापुर साहित्य संगीत और धार्मिक चिन्तन का केन्द्र बन गया। उसको उपाधि 'जगद्गुरु' थी। संगीत के साथ साथ उसमें साहित्य के प्रति रुचि थी। स्वयं इस भाषा में ग्रंथ लिखा—

था। इसके शासनकाल में एक महत्वपूर्ण घटना घटित हुई जिससे बीजापुर का महत्व बहुत बढ़ गया। गुजरात में बहुत दिनों से मुसलमानों का स्वतंत्र राज्य था। दिल्ली में आये दिन कोई न कोई उत्पात होता रहता था। गुजरात में बहुत दिन तक शान्ति बनी रही। उन दिनों अहमदाबाद सूफी सन्तों का एक अच्छा केन्द्र था। ये सूफी सन्त पश्चिम भारत राजस्थान और दिल्ली की यात्रा किया करते थे और कभी कभी दक्षिण में भी धार्मिक चर्चा तथा धर्म-प्रचार के लिए पहुँचा करते थे। अकबर ने जब राज्य विस्तार की नीति अपनाई तो गुजरात का राजवंश समाप्त हो गया। इसी तरह अहमदनगर भी पराजित हुआ। गुजरात और अहमदनगर के पतन से बहुत से विद्वान और कवि विस्थापित हो गये। इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय) ने अपने दूत भेजकर इन विद्वानों और कवियों को बीजापुर में निमंत्रित किया। नित्यप्रति राजधानी में किसी न किसी विद्वान का आगमन होता रहता था। इसके शासनकाल में नूरुद्दीन जहूरी रफ़ीउद्दीन शीराज़ी और मुहम्मद अबुल कासिम फरिश्ता जैसे विद्वान तथा कवि दरबार में थे। फरिश्ता ने फारसी में भारत का इतिहास लिखा।

अली आदिलशाह (द्वितीय) का राज्यकाल

ऊपर जो विवरण दिया गया है, उससे यह स्पष्ट हो गया कि अली आदिलशाह (द्वितीय) के सिंहासन पर आसीन होने से पहले बीजापुर में साहित्य और कला के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार हो चुका था। अली आदिलशाह (द्वितीय) केवल समृद्ध राज्य ही नहीं एक समृद्ध साहित्यिक परम्परा का उत्तराधिकारी भी था। उसने अपने पिता से बीजापुर की साहित्यिक परम्परा और मां से गोलकुण्डा की सांस्कृतिक निधि उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त की थी। इसके पिता मुहम्मद आदिलशाह का विवाह गोलकुण्डा के मर्मज्ञ कवि तथा प्रसिद्ध शासक मुहम्मद कुली कुतुबशाह के भतीजे मुहम्मद कुतुबशाह की पुत्री और अब्दुल्ला कुतुबशाह की बहन खदीजा सुलताना शहरबानू (बड़े साहब) के साथ हुआ था। यह खदीजा बीजापुर पहुँची तो उसने साहित्यिक आमोदों में बड़ी रुचि ली। उसके पिता चाचा और भाई आदि या तो कवि थे या कवियों के आश्रयदाता थे। उसके दहेज में वहाँ बहुत-सी सामग्री दी गई खुशनूद नामक कवि भी दिया गया।

बीजापुर दरबार के लेखकों ने अली आदिलशाह (द्वितीय) को मुहम्मद आदिलशाह और खदीजा का औरस पुत्र माना है किन्तु औरंगज़ेब के साथ जो लेखक बीजापुर के अभियान में सम्मिलित थे उन्होंने इस बात का उल्लेख किया है कि आदिलशाह (द्वितीय) मुहम्मद आदिलशाह का औरस पुत्र नहीं था। खदीजा ने किसी दरिद्र परिवार से उसे लेने का अनुरोध किया था, खदीजा ने ही उसका पालन-पोषण किया था। मुहम्मद आदिलशाह के देहान्त होने पर सामन्तों ने अली आदिलशाह को गद्दी पर बैठा दिया। इसके बारे में बीजापुर के लेखक ही अधिक प्रामाणिक प्रतीत होते हैं। जो लेखक गोलकुण्डा के अभियान में औरंगज़ेब के साथ थे उन लेखकों ने गोलकुण्डा के तत्कालीन शासक अबुलहसन के सम्बन्ध में भी अली आदिलशाह (द्वितीय) से मिलती-जुलती कहानी लिखी है। इन

लेखकों ने बताया है कि अबुल हसन एक मामूली घराने में पैदा हुआ था और संयोगवश गद्दी पर बैठा दिया गया था ।

अली आदिलशाह (द्वितीय) जब गद्दी पर बैठा तो चारों ओर शान्ति थी, किन्तु कुछ समय पश्चात् ही विपत्ति के बादल घिर आये । शिवाजी ने बीजापुर के कई किलों पर अधिकार कर लिया । अली आदिलशाह का एक विश्वस्त सरदार अफजलखाँ शिवाजी के बघनख का शिकार हुआ । मुगल सम्राट औरंगजेब बीजापुर पर अधिकार करने का प्रयत्न करता है । बीजापुर राज्य के पतन के सभी साधन उपस्थित हो चुके थे किन्तु संयोगवश अली आदिलशाह (द्वितीय) आदिलशाही वंश का अन्तिम नरेश बनने से बच गया ।

चारों ओर विपत्ति ही विपत्ति दिखाई देती थी । इस विपरीत परिस्थिति में भी अली आदिलशाह (द्वितीय) के कला-प्रेम में कोई अन्तर नहीं आया । उसने अपने दादा[1] की परम्परा का निभाने का प्रयत्न किया । अन्य आदिलशाही नरेशों की तरह इसे भी भवन निर्माण का शौक था । इसका मकबरा पूरा नहीं बन सका किन्तु जो हिस्सा बना था वह आज भी विद्यमान है । इस मकबरे के परे को देखते हुए कहा जा सकता है, यदि मकबरा पूरा बन जाता तो वह बीजापुर की विश्वविख्यात गोल गुंबज से भी विशाल तथा भव्य होता ।

अली आदिलशाह (द्वितीय) कवि था कवियों का आश्रयदाता था । उसके दरबार में दक्खिनी के कई बड़े कवि विद्यमान थे जिनमें नुसरती अमीन हाशमी और अयागी उल्लेखनीय हैं । नुसरती का स्थान दक्खिनी के श्रेष्ठतम कवियों में किया जाता है । इस कवि की दो पुस्तकें—'गुलशने इश्क' और अलीनामा फारसी लिपि में छप चुके हैं । इसने बहुत सी गजलें और कसीदे लिखे हैं । वीर रस और शृंगार रस में इसे बहुत सफलता मिली है । यह अली आदिलशाह के बचपन का मित्र था । दोनों बचपन में साथ साथ खेलते थे । युवा और वृद्धावस्था में भी दोनों साथ साथ रहे । फारसी के कवियों में मंगलाचरण के लिए जो पद्धति काम में लाई जाती है उसके अनुसार समकालीन शासक की मदह (प्रशंसा) करना आवश्यक होता है । नुसरती ने अपने काव्यों में अली आदिलशाह की मदह लिखी है । मदह अथवा नृपति प्रशंसा से सम्बन्धित कविता से अली आदिल के सम्बन्ध में बहुत कुछ जानकारी प्राप्त हुई है । नुसरती ने औरंगजेब के प्रथम आक्रमण का वर्णन भी बहुत सुन्दर ढंग से किया है । अली आदिलशाह (द्वितीय) ने नुसरती को 'मलिकुश्शोअरा (कवि सम्राट) की उपाधि प्रदान की थी ।

नुसरती ने अपने आपको अली आदिलशाह का शिष्य बताया है—

मुझे यू मुगुन बादशाह याद है
पिछे पीर मैं अम्के उस्ताद है
मुज उस्ताद उस्ताद आलम अछ
जिता इल्म अजबर जिम जम अछ
तुज जद इब्राहीम अथमा अली
तू मुनतों मुहम्मद का आया अली

(गुलशने इश्क)

---

१ दादा

यदि नुसरती की रचनाओं को ध्यान में रखकर इस कथन पर विचार किया जाय तो ऐसा प्रतीत होता है कवि ने अपने आश्रयदाता के प्रति अत्यधिक सम्मान प्रकट करने के लिए ये पंक्तियाँ लिखी होंगी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि नुसरती अली आदिलशाह की अपेक्षा कविता के क्षेत्र में बहुत ऊंचा स्थान रखता है किन्तु उपयुक्त पंक्तियाँ केवल अत्यधिक सम्मान के लिए ही नहीं है। उसमें सचाई अवश्य है। बचपन में अली को अधिक सुविधाएं प्राप्त रही होंगी। अनेक विषयों में नुसरती ने उससे सहायता ली होगी। कवि के नाते अली आदिलशाह नुसरती की तुलना में नहीं आता किन्तु जहाँ तक साहित्य शास्त्र का सम्बन्ध है वह नुसरती की सहायता करता रहा होगा।

नुसरती और अली आदिलशाह (द्वितीय) की मित्रता को लेकर बहुत-सी कथाएँ प्रचलित हैं। आजीवन दोनों व्यक्तियों में सौहार्द बना रहा। इस सौहार्द में न जाने कितनी घटनाएँ चिरस्मरणीय हो गईं। कई बार दोनों कविता में ही बातचीत करते। एक समय अली और नुसरती उद्यान में घूम रहे थे। फव्वारा चल रहा था। फव्वारे की असंख्य बूँदों को देखकर अली ने कहा—

उड़ता सो यो फव्वारा पानी का क्या निशान है

नुसरती ने तत्काल उत्तर दिया—

तुझ शाह पर उड़ाने मोती का मोरछल है

नुसरती के 'अलीनामे' से बीजापुर यहाँ के राजवंश और विशेषकर अली आदिलशाह (द्वितीय) के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है। उसने अली आदिल का बखान बड़े उत्साह से किया है—

ऐ है शाहे आदिल मुसम्मी अली
अली इब्ने सुलतां मुहम्मद अली
तेरे दिल के दरिया का हर यक है मौज
फ़लक पस्त आन तुझ खयालों की औज
तेरा अर हर मुर्दा दिल कूं जनम
करे जिउं मुहर खुश मसीहा का दम
सिफ़ शायरी अर ते तुंज अउर
अर्था सब ए मौजूं ते तुज नरम नूर

अली आदिल का कविता संग्रह

अली आदिल कवि था उसमें उच्च कोटि की कल्पना शक्ति थी, साहित्य-शास्त्र से उसका परिचय था इन सब बातों का परिचय नुसरती के वर्णनों से मिलता है। प्रस्तुत कविता संग्रह नुसरती के कथन को पुष्ट करने के लिए पर्याप्त है। कविता संग्रह की

हस्तलिखित प्रति आन्ध्र राज्य के केन्द्रीय अभिलेखालय में सुरक्षित है। लिखित पुस्तक के २१७ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पृष्ठ ९ × ११ आकृति का है। सामान्यतया प्रत्येक पृष्ठ में सात पंक्तियाँ हैं। कुछ पृष्ठों में पंक्तियाँ कम भी हैं। पुस्तक पर लिपिकाल अथवा लेखन-काल नहीं दिया गया है। अब तक इस संकलन की अन्य प्रति कहीं नहीं मिली। इस संकलन को देखते हुए ज्ञात होता है, यह कवि की उत्कृष्ट रचनाओं का संग्रह है। उसकी अन्य रचनाएँ भी अवश्य होनी चाहिएँ, किन्तु इस संकलन के अतिरिक्त उसकी कोई दूसरी रचना उपलब्ध नहीं हुई। इस संकलन में अली आदिलशाह (द्वितीय) ने अपना काव्य नाम 'शाही' प्रयुक्त किया है। गीतों में उसने 'शाही' के स्थान पर 'मदन' अथवा 'मदन रूप' काव्य नाम लिया है। दो-तीन स्थानों पर उसने 'अली आदिल' का प्रयोग भी 'नाम' के रूप में किया है। कवि ने बीजापुर के महलों का विस्तार से वर्णन किया है। यह वर्णन एक कवि का वर्णन ही नहीं है। गृहपति अपने घर का वर्णन कर रहा है। हस्त-लिखित प्रति के देखने से यह ज्ञात नहीं होता कि पुस्तक कहाँ से आरम्भ हुई है और कहाँ उसकी समाप्ति है। उस पर जो अंक डाले गये हैं वे उस समय के नहीं हैं जब पुस्तक लिखी गई थी। संकलन को आद्योपान्त पढ़ने के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि संकलन अपूर्ण नहीं है। दक्खिनी के कवियों ने मंगलाचरण के सम्बन्ध में फारसी काव्यों का अनुकरण किया है। फारसी काव्यों की तरह प्रारंभ में ईश-स्तुति की जाती है। यह ईश-स्तुति 'हम्द' कहलाती है। ईश स्तुति के पश्चात् हजरत मुहम्मद की प्रशंसा की जाती है। इस प्रकार की प्रशंसा के लिए 'नात' शब्द का प्रयोग होता है। नात के पश्चात् हजरत मुहम्मद के साथियों और उत्तराधिकारियों का वर्णन रहता है जो मुनाजात कहलाता है। शिया कवि मुनाजात में हजरत अबूबकर आदि खलीफाओं का बखान न करके केवल हजरत अली का वर्णन करते हैं। हजरत अली सहित १२ इमामों की प्रशंसा की जाती है। मुनाजात के बाद समकालीन शासक की प्रशंसा—मदह—रहती है। और फिर कवि अपना परिचय देता है। इस परिचय के पश्चात् वास्तविक विषय प्रारंभ होता है। हम्द,नात मुनाजात और मदह लिखने का ढंग बहुत कुछ रूढ़िबद्ध हो चुका है। किसी भी कवि का मंगलाचरण सम्बन्धी अंश देखा जाय तो उसमें शब्दों का हेरफेर अवश्य दिखाई देता है, किन्तु भावों में अधिक अन्तर नहीं रहता। हिन्दी के प्रेममार्गी कवियों—मुहम्मद जायसी आदि ने भी इस रूढ़ि का अवलम्बन किया है। प्रस्तुत संकलन का प्रारंभ कसीदों से हुआ है। पहला कसीदा ईश्वर से सम्बन्धित है दूसरा हजरत मुहम्मद से, तीसरा अली से और चौथा अली सहित बारह इमामों से। इस तरह हम्द नात और मुनाजात से संकलन प्रारंभ हुआ है। कवि स्वयं शासक है अतः मदह का प्रश्न नहीं उठता। फुटकर कविता में कवि के आत्म-परिचय के लिए स्थान नहीं होता। इससे यह ज्ञात होता है कि प्रारंभिक पृष्ठ नष्ट नहीं हुए हैं। उर्दू काव्य की विभिन्न शैलियों को ध्यान में रखकर संकलन तैयार किया गया है। प्रारम्भ में कसीदे हैं फिर मसनवियाँ उसके पश्चात् गजल आदि। ब्रज भाषा के कवित्त दोहे और गीत एक स्थान पर हैं। अन्त में फ़ारसी की कविताएँ हैं। फारसी की कविता किसी विषय से सम्बन्धित न होकर केवल 'तारीख' से सम्बद्ध है। फ़ारसी और अरबी कविता में तारीख कहने की विशेष प्रथा है। फ़ारसी

वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर के कुछ अंक निश्चित हैं। भारतीय ज्योतिष-विद्या में भी कुछ शब्दों के अंक निश्चित कर दिये गये हैं। इन शब्दों से संख्या का काम लिया जाता है। कवि एक या दो शब्द अथवा एक वाक्य में किसी व्यक्ति के जन्म-मरण अथवा किसी घटना से सम्बन्धित संवत्सर का उल्लेख करता है। इस प्रकार की कविता का महत्व काव्य की दृष्टि से कुछ भी नहीं है, किन्तु इतिहास के लिए इस प्रकार की कविता बहुत सहायक सिद्ध होती है। इस संकलन की फारसी कविता का इसीलिए महत्व है। इन कविताओं में जो संवत्सर दिये गये हैं वे ऐतिहासिक दृष्टि से भी प्रामाणिक हैं। इस तरह संकलन में क्रमशः काव्य के सभी अंग आ गये। इस बात की संभावना नहीं की जा सकती कि संकलन के कुछ अन्तिम पृष्ठ नष्ट हो गये होंगे। पुस्तक के मध्य में कुछ पृष्ठ नष्ट हो गये हैं। दो-चार पृष्ठ ऐसे हैं जिनके अक्षरों को कीड़े चाट गये। ऐसे स्थलों में (—) रेखा अंकित की गई है। जहाँ पृष्ठ का पृष्ठ दीमक खा गई है, वहाँ भी इस बात का उल्लेख कर दिया गया है।

दक्खिनी की बहुत सी पुस्तकें फारसी और नागरीलिपि में छप चुकी हैं। यह संकलन अब तक उर्दू में भी नहीं छपा है। यह पहली बार छप रहा है और वह भी नागरीलिपि में हिन्दी की टिप्पणियों के साथ। हस्तलिखित पुस्तक में फारसी लिपि का जो रूप प्रयुक्त हुआ है उसके पढ़ने में कठिनाइयाँ उठानी पड़ी हैं। उसमें स्थान-स्थान पर अलंकरण के लिए बिन्दुओं का उपयोग किया गया है और चिन्ह लगाये गये हैं। संकलन के सभी स्थल पढ़ लिये गये हैं। दो चार पंक्तियाँ ऐसी रह गई जिन्हें प्रयत्न करने पर भी नहीं पढ़ा जा सका। इन पंक्तियों को जैसा पढ़ा जा सका उसी रूप में लिखा गया उन्हें रेखांकित किया गया है और बड़े अक्षरों में छापा गया है।

संकलन का विषय

प्रस्तुत संकलन की कविताएँ किसी एक विषय से सम्बन्धित नहीं हैं। उन दिनों दक्खिनी में कविता लिखने की जितनी प्रवृत्तियाँ विद्यमान थीं उन सबका समावेश इस संकलन में है। विषय के अनुसार कविता का बाह्य रूप बदला है। दक्खिनी में कविता का जो बाह्य रूप लिया गया है वह गीतों को छोड़कर पूरे का पूरा फारसी काव्यों से मिलता-जुलता है। आगे चलकर जब उर्दू एक स्वतंत्र साहित्यिक भाषा के रूप में विकसित हुई तो उसने इस बाह्य रूप को ज्यों का त्यों अपना लिया किन्तु हिन्दी में रीति-बद्ध कविता का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने इन बाह्य तत्वों को बहुत अंशों में स्वीकार नहीं किया। उर्दू की ग़ज़लें उनके क़सीदे और मर्सिये दक्खिनी की ग़ज़लों और मर्सियों आदि से परवर्ती हैं। मुहम्मद कुली कुतुबशाह की ग़ज़लें बहुत विकसित दिखाई देती हैं। वजही ने अपने 'नवरस' में एक ग़ज़ल दी है जो ग़ज़ल के पूर्ण-विकास का परिचय देती है। नुसरती के क़सीदे यदि भाषा पर ध्यान न दिया जाय तो आधुनिक उर्दू के क़सीदों से बहुत मिलते-जुलते हैं। यही बात मसनवी के बारे में कही जा सकती है।

प्रस्तुत संकलन छोटा-सा है किन्तु इस संकलन में उस समय की सभी प्रवृत्तियों का समावेश हो गया है। सत्रहवीं शती में दक्खिनी ने कितना विकास कर लिया था,

इसका पूर्ण परिचय इस आगे से संकलन से मिल जाता है। काव्य के स्वरूप में ही नहीं भाषा की दृष्टि से भी यह संकलन अपना महत्व रखता है। फ़ारसी और अरबी के शब्द दोनों भाषाओं के शब्द इस भाषा में सम्मिलित कर रहे थे किन्तु उसका मूल रूप सर्वथा स्वस्थ था। संस्कृत और हिन्दी के शब्द त्याज्य नहीं माने जाते थे। मराठी का प्रभाव इस बोली पर पड़ रहा था भाषा की शब्दावली स्थिर नहीं थी किन्तु उसका बहुत कुछ परिमार्जन और परिष्करण हो चुका था। व्याकरण पर भी ध्यान दिया जाता था।

काव्य-सौन्दर्य

दक्खिनी के बहुत-से काव्यों का महत्व केवल भाषा सम्बन्धी विकास की दृष्टि से है किन्तु यह संकलन भाषा के साथ साथ काव्य की दृष्टि से भी महत्व रखता है। संकलन क़सीदे से प्रारंभ हुआ है। क़सीदा प्रशंसात्मक कविता का एक स्वतंत्र रूप है। प्रशंसा किसी राजा की भी हो सकती है किसी महात्मा की भी और किसी स्थान अथवा वस्तु को भी। अली आदिलशाह (द्वितीय) ने काव्य के विभिन्न अंगों में अपना कौशल दिखाया है किन्तु उसे क़सीदा लेखन में ही अधिक सफलता मिली है। क़सीदा लिखने की रीति निश्चित हो चुकी थी। उसकी बँधी बँधाई शैली फ़ारसी से ली गई है। प्रारंभ में कवि एक भूमिका बाँधता है ऐसा प्रतीत होता है जैसे उस भूमिका का मूल विषय से कोई सम्बन्ध नहीं है किन्तु कवि बड़े नाटकीय ढंग से उपयुक्त अवसर पर भूमिका और मूल विषय का सम्बन्ध जोड़ता है। क़सीदे की सफलता बहुत कुछ भूमिका पर निर्भर होती है। 'शाही' शिया सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखता था अतः हज़रत मुहम्मद के पश्चात् उसने हज़रत अली का क़सीदा लिखा। दोनों क़सीदे उत्कृष्ट हैं। 'शाही' [illegible] प्रेम करता है जहाँ वह रहता है। चारों ओर के वातावरण से उसका रागात्मक-सम्बन्ध है। इसीलिए हज़रत मुहम्मद और हज़रत अली की प्रशंसा के पश्चात् वह अपने [illegible] महल अपने उद्यान और अपने फल-फूलों का वर्णन करता है। मनोभाव का [illegible] करने के लिए उपमा रूपक आदि अलंकारों का उपयोग किया गया है।

पहले बताया जा चुका है, क़सीदा भूमिका से प्रारम्भ हुआ है। हज़रत मुहम्मद के क़सीदे में एक उद्यान का वर्णन भूमिका के रूप किया गया है। [illegible] उद्यान के हौज़ को देखकर कवि कहता है—

> [illegible] जल अब भर हौज़ों नहीं है जाना [illegible]
> [illegible] का मुख [illegible] [illegible] [illegible] है

हौज़ों में पानी नहीं है। [illegible] —
दर्पण पड़े हैं।

> [illegible] के [illegible] [illegible] है
> मयूरी नाचत ठार [illegible] [illegible] है

पातों मने डाल्यां दिसें नारंज की मुख यूं
सरुन सुन्दर के जोबन पर सबज वाला उढ़ाया है

हरे पत्तों में ढकी हुई नारंगी ऐसी लगती है जैसे हरे वस्त्र में ढके हुए तरुणी के स्तन। उद्यान का वर्णन करने के पश्चात कवि ने हजरत मुहम्मद की प्रशंसा प्रारंभ की है। उद्यान का वर्णन पढ़ते समय पाठक का हृदय अलौकिक सौन्दर्य से ओत-प्रोत हो जाता है और तब—

सबा मासी न कर दावा बड़ा वो नावें पाया है
—(बड़ा) वो इस्म महमद का जिने दो जग निपाया है
दिस्या जो नूर का झलका चन्दर तुम सम पड़या हलका
सुरिज ने काम था हल्का बंद्यां में जग सिखाया है

हजरत अली के कसीदे में सुरा की भावुरी भूमिका के रूप में की गई है। यह सुरा न तो लौकिक है और न साधारण। इस मधु का पान सामान्य व्यक्ति नहीं कर सकता। कवि सूफी साधक की तरह हजरत अली के सम्बन्ध में कहता है—

हँस पास ले पिया ने माते लटकते देखे
परदा नयन के म्याने राखू न तूतिया का

अपने प्रिय (हजरत अली) को देखने के लिए उसे सुरमे का आवरण भी प्रिय नहीं। प्रिय यदि अपने हाथ से मधुपान कराये तो क्या बात है—

पिय सात रात जागूं प्याला पिया सूं मांगूं
प्याला सचा वही है पिव हात के दिया का

और—

अंम्रित अधर पिलावे होवे कसप कया का

हजरत अली विद्वान थे और परम पराक्रमी भी। उनके पराक्रम का वर्णन करते समय कवि की वाणी का ओज इस तरह व्यक्त होता है—

तुज कहर के आतिश कने इस्पन्द होय हासिद जिते
शमशीर के पानी मने दुश्मन के सिर हैं बुदबुदे
रज तम के सट अरबार सब
भकपक गँवा दुश्मन भड़े

जहाँ-जहाँ वीर रस का अनुभव है, कवि की भाषा बहुत सरस है। उसने दक्खिनी के प्रचलित शब्दों और मुहावरों का प्रयोग किया है। ये शब्द देखने में ग्राम्य प्रतीत होते हैं किन्तु उनमें भावों को व्यक्त करने की पर्याप्त क्षमता है।

अलीशाद महल के क़सीदे में कवि गगन महल उद्यान और जल-कुण्डों का इतना अच्छा वर्णन करता है कि पाठक के मन में उन सब का चित्र अंकित हो जाता है। अलीशाद महल के वर्णन में उसने दिन और रात का प्रभावशाली वर्णन किया है—

हुआ परकास जो दिनकर दिखाया मुक का मशअल
लाजों से दीस मे भंग होती है रात मअत्तल

दिन पूरी तरह नहीं निकला। कुछ कुछ अँधेरा है। सान्ध्यबेला का हल्का सा अँधेरा कितना सुहावना है—

दिसाने दीस के आगे सियाही रात की यूँ
थोड़ा ज्यूँ साफ नयन में पैने हैं सार कजल

रात सुन्दर नवेली नववधू है। दिवस वर की भाँति उपस्थित हुआ है—

देख जब दीस के मोखो यूँ बना आता है
लिये है रात अपनी साजे है दिन के अगल
उसी के दुख ते जसी रास में हासर से हरक
देखो यूँ दीस सटकता आता समदुर सा उबल

कवि उद्यान का वर्णन करते समय फ़ारसी शब्दों की परिपाटी को छोड़ता है। वह भारतीय फल फूलों में सौन्दर्य का दर्शन करता है। आम की इस सुन्दरता का साक्षात्कार कितने कवियों ने किया होगा—

देखो कारीगरी जिस मौत की कीता है बहार
अंब के जर्फ़ में मनपस यूँ भर्या है जर हुन
खुश नजर अम्ब की खूबी दिस तन में दो रंग
लहरता भार का नीमा नीमा है ज्यूँ के पवन

उसके उद्यान की पंजीर के साथ [illegible] है? [illegible] से मोम के परदे में छिपा जाके चमन[1]? कवि का ध्यान आम और [illegible] नहीं था। दक्षिण भारत में [illegible] के मिलता [illegible] है [illegible]

---

१ [illegible]।

कहलाता है। सेंदी के पेड़ पर एक फल लगता है—मुंबल। मुंबल खाने में शीतल और मधुर होता है। इस फल में जल का अंश अधिक होता है। मुंबल गर्मियों में होता है। यह प्यास बुझाने के काम भी आता है। इन फल का इतना सौभाग्य कहाँ कि मावर जन साहित्य में उसका नाम भी लें। किन्तु 'शाही' ने उसका भी वर्णन किया है। आम और अंजीर के पश्चात् उसकी दृष्टि सेंदी के ऊँचे वृक्ष पर गई—

दिसे शरबत के यू कूजे जिते नारियल के ऊपर
मीठे मद नीर के चश्मे ते मर्मा है मुंबल

मुंबल क्या है शर्बत के कूजे हैं। इन्होंने नारियल को भी बाँध लिया है। शाही एक मनुष्य के नाते कहता है यह महल रहती दुनियाँ तक रहे—

जो लगों नूर सूँ विनकर भच्छे होर चांद व गगन
तो लगों रात दिन व पहर घड़ी जस्न मने
भच्छो मानन्द सूँ इस घर में सदा तास मेंवस

फिर वह कवि के नाते स्वार्थ से ऊपर उठता है—

जान होर दिल से उथा हात दुमा मगता है
ता भच्छे भमन में सुख चैन ते यू सस्क सकल

पाँचवा कसीदा शृंगार रस से सम्बन्धित है। कवि की दृष्टि में प्रेम का बड़ा महत्व है। प्रेम एक रहस्य है जो उसकी थाह लेने गया वही उलझ गया। कवि के विचार में—

गर इस्क के पचाँ मने भबूमली उलझे कधीं
ना खोल सक इस गिरह कू बेताब हो भक्सर भछे

इस प्रेम में वेदना भी मधुर हो उठती है। आँसू मोती का रूप धारण करते हैं—

गर कोई नजर कर इश्क की दर्पन में देखेगा नयन
साया दिसे आँसू का यू गलतान मोती जू लगे

शृंगार रस सम्बन्धी कसीदे में प्रेमिका मान किये बैठी है। प्रेमी उसका मान भंग करता है। प्रेम की जिस वाटिका में प्रेमी और प्रेमिका विहार करते हैं, वह—

यहाँ का माली पिरम का पानी
नयन भड़याँ में सदा पिलावे

जिते अम्सों चमन के ऊपर
खिले-फूले हो करे भरारा

प्रेमिका का प्रतिबिंबित सौन्दर्य देखने योग्य है। केवल उसके मुख को देखकर चन्द्रमा छिप गया और अमावस्या हो गई, मुख के सौन्दर्य का वर्णन सुनकर ही ध्रुव नक्षत्र लज्जित होकर उत्तर दिशा में पड़ा हुआ है —

हरे अँचल में सुंदर का मुख यूँ चंदर गगन बिच झलक दिसे ज्यूँ
हँसी में तिसके अधर छिपे यूँ हुआ धाफक मिल सबा का पारा
सुंदर नखों कूँ चंदर ने देख्या अभ्रम हुआ सब अमास में छप
खबर यू सुनकर गँवा गया पग लिया है कोना क़ुतुब का तारा

मसनवी

संकलन में दो मसनवियाँ हैं। मसनवी एक प्रकार का कथात्मक काव्य होता है। मसनवी प्रेम-कथा को आधार बनाती है, किन्तु यह आवश्यक नहीं कि मसनवी का विषय प्रेम कथा से ही सम्बन्ध रखता हो। वीर रस तथा अन्य रस से सम्बन्धित इतिवृत्त पर भी मसनवी लिखी जा सकती है। मसनवी की रीति बहुत पुष्ट हो चुकी है। यह एक प्रकार से स्वतंत्र रचना होती है और उसके आरंभ में हम्द नात मुनाजात और मदह रहती है। इस संकलन में एक मसनवी 'खैबर नामा' हजरत अली के एक युद्ध से सम्बन्ध रखती है और दूसरी मसनवी शृंगार रस से सम्बन्धित है। मसनवी को संक्षेप में कहना सम्भव नहीं है। संक्षेप में न तो घटना का वर्णन किया जा सकता है और न पात्रों का चरित्र-चित्रण हो सकता है। संकलन की छोटी छोटी मसनवियों में 'शाही' को उल्लेखनीय सफलता नहीं मिली।

ग़ज़ल लिखने में कवि सफल रहा है। उस समय दक्खिनी में ग़ज़ल का विकास हो चुका था। इसी लिए शाही की ग़ज़ल में प्रौढ़ता है। ग़ज़ल का मुख्य रस है शृंगार। एक ही ग़ज़ल में विप्रलंभ और संयोग दोनों प्रकार के शृंगार रस की सृष्टि की जा सकती है। ग़ज़ल का प्रत्येक शेर स्वतंत्र होता है किन्तु ग़ज़ल के सभी शेर मिल-कर श्रोता अथवा पाठक के मन पर एक सुन्दर, मधुर और उभरता हुआ चित्र अंकित करते हैं। ग़ज़ल का निर्माण कवि की रचना और साधना का प्रतिफल होता है। दक्खिनी और आगे चलकर उर्दू में जो ग़ज़लें शुरू शुरू में लिखी गईं उनमें क्रम निर्धारित नहीं होता था। बाद चल कर फ़ारसी वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर के अन्त्यानुप्रास तथा सम-अनुप्रास के आधार पर ग़ज़लों को दीवान में संकलित किया जाने लगा। यह प्रवृत्ति इतनी बढ़ी कि समस्त अक्षरों के अन्त्यानुप्रासों और वर्णानुक्रम के लिए ग़ज़लें लिखी जाने लगीं और कृत्रिमता बहुत आ गई। महाकवि ग़ालिब ने इस प्रकार की ग़ज़लगोई की बुराई अनुभव की थी। दक्खिनी में कुछ कवि ऐसे हुए हैं जिन्होंने प्रत्येक अक्षर के अन्त्यानुप्रास पर ग़ज़लें

लिखी हैं किन्तु शाही तक यह पद्धति पूरी तरह स्वीकृत नहीं हुई थी। शाही की ग़ज़लों का विन्यास और बाह्यरूप ईरानी है, किन्तु उनके वर्ण्य विषय पर भारतीयता का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। फ़ारसी काव्य के शृंगार के साथ साथ भारतीय ढंग का शृंगार रस भी इन ग़ज़लों में दिखाई देता है। कहीं प्रेमिका का सौन्दर्य प्रेमी को बन्दी बनाता है—

फांदे करे दो ज़ुल्फ़ घुंघरवाल रखवाले
मुज नैन पखेरू के बदल सिस रखे चारा

कई स्थलों पर भारतीय नारी का बिम्ब और साधारण रूप मूर्तिमान हुआ है। वह भारतीय नारी की अपनी भावनाओं से प्रिय को बन्दी बनाने की बात तो दूर अपना सर्वस्व समर्पण करने में ही महोमान्य मानती है। तप में अपने आपको मला देती है, जिससे जन्म जन्मान्तरों तक वह अपने प्रिय की दासी बन सके। उसे अपना पृथक और वरिष्ठ पद अभीष्ट नहीं वह अर्धांगिनी के गौरवमय पद पर आसीन होकर तृप्ति अनुभव करती है—

अर्ध ग हो में पिया की दिसती हूँ साथें सम हो
कइ भाव ते रिझा कर लेती हूँ मन में जम जम
रूं रूं छकी हुई हूँ पी बस्ल का पियाला
पिव जीव हो के हरदम बसता हूमन में बम जम
कीती हूँ चक कसौटी रंग रूप जो परखते
पिव सूर-सा झलकता दरिस सघन में जम जम

प्रिय प्रेमिका को स्मरण कर ले तो प्रेमिका निहाल हो जाए और सिर के बल प्रेमी के पास पहुँचे—

सजन मिलने बुलावे जो
चलूँगी पाँव कर सिस सूं

कई कवियों ने कवित्त दोहे अथवा घर में दो भाषाओं का प्रयोग किया है। एक दो अथवा तीन चरणों में संस्कृत अथवा हिन्दी होती है तो एक चरण में फ़ारसी या हिन्दी। रहीम की इस तरह की कविताओं से हिन्दी भाषी परिचित हैं। अली आदिल ने इस तरह एक द्विभाषी ग़ज़ल लिखी है। एक शेर यहाँ दिया जाता है—

जो मनवसी आने की धुन सुनते हुआ मुज काम सुरू
अत शौक सूँ पीने अवस पुर[1] भी कुनम पमाना रा

ब्रजभाषा के कवियों ने रूपकों का निर्वाह दूर दूर तक किया है। हिन्दी की रीतिकालीन कविता का यह प्रभाव शाही पर भी दिखाई देता है। एक पूरी ग़ज़ल वृक्ष पर लिखी गई है जिसमें वृक्ष को एक संन्यासी के रूप में चित्रित किया गया है।

मुखम्मस और मुसम्मन

फारसी में पाँच चरणों और छह चरणों की कविता के लिए अलग अलग नाम हैं। इस संकलन में एक मुखम्मस और एक मुसम्मन है। मुखम्मस सुनने में गीत प्रतीत होता है। मुखम्मस में विरहिणी की वेदना किस सफलता से ध्वनित हुई है—

ज्या दीपक बिरहा अपने में
तन जाली झुक-झुक अपने में
तुज याद कर तलमलती हूँ
लहु तेल में दिल तलती हूँ
तन मोमबत्ती हो जलती हूँ

ख़ाजा बन्दे नवाज़ और गुलबर्गा

मुसम्मन में कवि ने दक्षिण के एक प्रसिद्ध सूफ़ी साधक ख़ाजा बन्देनवाज़ की प्रशंसा लिखी है। शाही अपने आसपास के वातावरण से बहुत प्रभावित है। वह इस प्रभाव को अपनी कविता में व्यक्त करता है। उसके समय तक गुलबर्गा के ख़ाजा बन्दे नवाज़ गेसू दराज़ की कीर्ति दूर-दूर तक फैल चुकी थी। उनके मज़ार पर आज की तरह सहस्रों नर-नारी एकत्रित होते थे। मुसम्मन में ख़ाजा का यही महत्त्व मुखरित हुआ है।
स्वर्गीय ख़ाजा की मज़ार के कारण गुलबर्गा का मिट्टी भी—

पाक है काफ़ूर ते ज्यों तूँ समाया सो जमी

मर्सिया

कवि ने एक मर्सिया भी लिखा है। मर्सिया शोक को व्यक्त करता है। हज़रत अली के दो पुत्रों—हज़रत हसन और हुसेन को लेकर अनेक मर्सिए लिखे गये। मर्सिया उर्दू काव्य साहित्य का विशद अंग है। प्रस्तुत संकलन में जिस पृष्ठ पर मर्सिया लिखा गया था उसे दीमक चाट गई, अतः 'शाही' की मर्सिया सम्बन्धी दक्षता का मूल्यांकन करने का कोई साधन नहीं है।

दक्खिनी कविता के अन्त में कतिपय रुबाइयाँ और फ़र्द संकलित हैं।

---

१ मुराद पूर्ण कर के मरा।

कवित्त-दोहा-पहेली

दक्खिनी के प्रारंभिक लेखक ब्रज तथा हिन्दी की अन्य विभाषाओं के साहित्य से अच्छी तरह परिचित थे। वजही ने 'सबरस' में स्थान-स्थान पर ब्रजभाषा के दोहों को उद्धृत कर अपना मत पुष्ट किया है। दक्खिनी के इन कवियों की तरह 'शाही' भी ब्रजभाषा की परम्परा से अच्छी तरह परिचित था। उसके कुछ दोहे, कवित्त और पहेली इस संकलन में एक स्थान पर दी गई है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन दोहों और कवित्तों में ब्रजभाषा के कवियों जैसा प्रवाह नहीं है किन्तु इन दोहों तथा कवित्तों से इतना परिचय मिलता है कि सुदूर दक्षिण में रहते हुए भी दक्षिण के कवि उस भाषा से कितने प्रभावित थे जो उत्तर भारत के बहुत बड़े क्षेत्र की सांस्कृतिक भाषा बनी हुई थी और यह भी पता चलता है कि शाही की कविता में जो भारतीय तत्व दिखाई देते हैं उनका उद्गम ब्रज भाषा की कविता से हुआ।

गीत

बीजापुर के शासक संगीत में रुचि रखते थे। इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय) हिन्दुस्तानी संगीत का बहुत प्रेमी था। संगीत के कारण बीजापुर दरबार में ब्रजभाषा को अच्छा स्थान मिल गया था। शाही ने जिन राग-रागिनियों में गीत लिखे हैं वे इस प्रकार हैं—

सूहा भूपाली आसावरी, नट बिहागरा देसी टोड़ी केदारा कांगड़ा सारंग भीमपीड़ी भैरों धनाश्री गौंड मलार, यमन रामकली पूरबी पूरिया मलार, बिलावल।

राग-रागनी में स्वर और ताल पर ध्यान रखना पड़ता है। फलतः काव्य-सौन्दर्य उस मात्रा में दिखाई नहीं देता जितना काव्य के अन्य अंगों में देखने को मिलता है। शाही ने अपने गीतों में शब्द चयन करते समय विशेष रुचि से काम लिया है। न तो उनमें व्याकरण का उल्लंघन है न शब्दों की तोड़ मरोड़। वर्ण मैत्री पर पर्याप्त ध्यान रखा गया है।

'शाही की प्रतिभा बहुमुखी है। यह छोटा सा संकलन उनकी प्रतिभा के सम्बन्ध में पर्याप्त प्रकाश डालता है।

छन्द

हिन्दी के छन्दों के अतिरिक्त शाही फ़ारसी के छन्दों पर पर्याप्त अधिकार रखता है। शाही ने अपनी प्रत्येक कविता नये छन्द में लिखी है। दक्खिनी के प्रारंभिक कवियों में शाही जैसे बहुत कम कवि हैं, जिनके छन्दों में शिथिलता नहीं है। एक अव्याहत नाद जिनके छन्दों में मुखरित हो रहा है। जिनके छन्दों की लय विषय को स्वयं व्यक्त करती है। शाही ने कुछ अन्त्यानुप्रास और वर्णसाम्य ऐसे चुने हैं जिनमें कविता लिखना आज भी कठिन माना जाता है। कवि का एक कसीदा अकारान्त वर्णसाम्य पर है। इस प्रकार का वर्णसाम्य अत्यन्त कठिन माना जाता है। कवि अपने छन्द-कौशल से स्वयं परिचित है—

बैंध्या हुर बैत में कई सफ्ज मू सनमत के नक्स

भारतीयता

शाही ने जिस तरह की भाषा अपनाई है भावों की अभिव्यक्ति के लिए जो शैली स्वीकार की है, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि वह भारत की साहित्यिक परम्परा काव्य-रूढ़ि कवि-मान्यता और हिन्दुओं की पौराणिक गाथाओं से अच्छी तरह परिचित है। उसने कुछ छन्दों और बाह्य रूपों में फ़ारसी का अनुसरण किया है किन्तु उसके काव्य की आत्मा भारतीय है। उसने प्रेम और सौन्दर्य के लिए पूरी तरह भारतीय उपमानों से काम लिया है। वह चातक चकोर और कमल के द्वारा प्रेमी तथा प्रेमिका की तन्मयता और तल्लीनता को प्रकट करता है—

आशिक हुआ है मुज दिल कहता है पीव पिव कर
सेवक हुआ हूँ दायम तू साईं मुज जिया का
× ×
सजन सूँ दिल यू लग्या है मेरा
चकोर अन्तर रहू जनम भर

वह खंजन से भी परिचित है—

खंजन जैसे नयन न्याने
दिसे काजल सूँ सूभा जब
सफ़ा काग़ज़ ये इस खूबी सूँ
मैं जदवल नहीं देख्या

शाही ने ऐसे शब्दों और मुहावरों का प्रयोग किया है जिनके पीछे दीर्घकालीन परम्परा है—

तू नूर कुलदिपक है माता-पिता भया का

हिन्दी साहित्य में न जाने कितने स्थानों पर वीर का खड्ग और भाला शेष नाग के पात समान फनों को विदीर्ण कर चुका है। शाही भी इस कवि-मान्यता से परिचित है और उसका प्रयोग हजरत अली के लिए करता है—

जब रन में खींचे खड्ग तूँ
फिर हाथ दगहत मर्ग[१] कूँ
उस वार की झनकार ते
भू नाग के फन झड़ पड़

१ मृत्यु

शेष नाग का स्मरण कवि ने एक दूसरे स्थान पर भी किया है। उसके उद्यान में अंगूर ऐसे रसीले हैं कि एक अंगूर फूटता है तो उसकी मिठास शेष नाग को भी मिलती है—

सारे अंगूर की बेलाँ पे पक यूँ सोंधे
मिठाई सेस कूँ अँपड़े पड़ गर भुईं पे पिघल

पौराणिक देवताओं और घटनाओं का उपयोग भी शाही ने अपनी वाणी को सजाने में किया है। गौतम ऋषि ने इन्द्र को सहस्रलिंगी (भग) होने का शाप दिया। शप के कारण इन्द्र सहस्रलिंगी से सहस्राक्ष हो गये। कवि ने सहस्राक्ष इन्द्र और अप्सरा रंभा का उपयोग अपने महल की शोभा को चित्रित करने में कितनी कुशलता से किया है—

अथी अरायश हुई महल में इंदर ने देखन नयन किया तन
रंभा ते बेटी हुसन में माली बँधी अपस सों बिरद अपारा

एक अन्य स्थान पर इन्द्र की सामर्थ्य से लाभ उठाया गया है—

इन्दर सँवार्या आरती तुज मुख सलौने के बदल
चंद-सूर दो दीपक दिसें आकास सो थाला हुआ

दक्खिनी के बहुत से कवियों ने भारतीय उपमानों आख्यानों और काव्य-रूढ़ियों का उपयोग किया है किन्तु 'शाही' की कविता में इन सब का जैसा समुचित प्रयोग हुआ है, वह अन्यत्र नहीं दिखाई देता।

भाषा

इस संकलन में फ़ारसी के समासित तत्सम शब्दों और समासित शब्दों का प्रयोग हुआ है, किन्तु उनकी संख्या अधिक नहीं है। धार्मिक आस्था को प्रकट करने के लिए ही इस प्रकार के शब्द आये हैं। समासित शब्द द्वन्द्व समास और षष्ठी तत्पुरुष में ही आये हैं। जैसे हूरोपरी, शहरो सजन आहोमस्फ़ोस, फ़तहोबार, बक्रो-मसंग। कवि ने संस्कृत से ऐसे तत्सम शब्दों का प्रयोग भी किया है जो सामान्यतया बोलचाल में नहीं आते जैसे दिनकर, उदक, पावक। फ़ारसी के कुछ दुरूह तत्सम शब्दों का प्रयोग भी हुआ है—मौजिबा मुनव्वर, इस्क़ा मद्द अफ़्रू मुरस्सा, मुस्तग़ाब। संस्कृत के तद्भव और हिन्दी के ठेठ शब्दों की संख्या बहुत अधिक है। इन तद्भव शब्दों से दक्खिनी के भाषा वैज्ञानिक विकास के समझने में सहायता मिलती है। नदाँ (नदियाँ) बरस (वर्ष सरन (शरण) कवँल (कमल) नाँवें (नाम) करतार, सँसार साँझ बोली आदि।

एसे शब्दों की संख्या भी बहुत अधिक है जो बोल-चाल की दक्खिनी में। प्रयुक्त होते हैं किन्तु जिनका साहित्य में कम प्रयोग हुआ है। जैसे अड़ अड़ ले, पुर क

लिया समू अर्थों में अड़बड़े ऊष्मत बड़बड़े, अम्बर, भड़कल बटा भटभट, भकसक, मोटाल भीवान आदि।

हिन्दी के कुछ शब्दों का प्रयोग भिन्न अर्थों में हुआ है। 'सूती' शब्द का प्रयोग शाही ने कई स्थानों पर किया है किन्तु वह सौत या सपत्नी के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। मुहम्मद कुली कुतुबशाह ने भी सूती शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में किया है। इसी तरह मोम शब्द शाही की कविता में प्रेम का पर्यायवाची है। जैसे—'साईं करे मोम जब दूर होवे मेहुन'। इस प्रकार के शब्दों पर यथा स्थान टिप्पणी लिखी गई है। दक्खिनी में लकार रकार में नहीं बदलता किन्तु शाही ने एक स्थान पर 'फल' के स्थान पर 'फर' का प्रयोग किया है। यह ब्रज भाषा के प्रभाव को सूचित करता है।

हस्तलिखित प्रति के पढ़न और फ़ारसी अरबी के शब्दों के अर्थ निर्धारण में मुझे मेरे मित्र और गुलबर्गा कालेज के सहकर्मी फ़ारसी और उर्दू के प्राध्यापक श्री मुबारिजुद्दीन 'रफ़अत' से बहुत सहायता मिली है। दक्खिनी ठेठ हिन्दी मराठी आदि शब्दों के अर्थ निर्धारण और उन पर टिप्पणी लिखने का काम पूर्णतया मैंने किया है अतः उसका दायित्व मुझ पर है।

मैं आगरा विश्वविद्यालय के क० मुं० हिंदी विद्यापीठ का आभारी हूँ। विद्यापीठ के सञ्चालक डाक्टर विश्वनाथ प्रसाद जी ने इस संकलन के प्रकाशन में जो सहायता की है उसके लिए मैं आभारी हूँ। श्री उदयशङ्कर शास्त्री जी ने प्रूफ देखने में जो सहायता की है उसके लिए मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

२५ मई १९५७
गवर्नमेण्ट सिटी कालेज
हैदराबाद

श्रीराम शर्मा

अली आदिल शाह

का

काव्य-संग्रह

(अक्ल) का मकतब हुआ फ़हम के पढ़ने बदल
अक्ल मुअल्लिम अपें क़िस्सा सिखाया कुहन
अक्ल खबरदार है अक्ल हमाकार है
अक्ल का जासूस हो मुज पे अछे यू फिरन
अक्ल से कूते जिते नेम-धरम होर किते
अक्ल कूँ औसाफ़ का लेके पिन्हाये बरन
अक्ल कसौटी हुई सदा के कसने बदल
बूझ रख्या है सराफ़ खुल्यो खरा ज्यूँ कँचन

पढ़ने बदल—पढ़ने के लिए अपें—आप ही स्वयं। अछे—है कूते=परीक्षा की जाँचा। किते—कहाँ यू—यह, बरन—रंग कसने बदल—कसने के लिए, ज्यूँ—जिस तरह। मकतब—पाठशाला फ़हम—बुद्धि मुअल्लिम—अध्यापक विद्वान (इल्म)। कुहन—पुराना हमाकार—सब काम करने वाला औसाफ़—विशेषता सदा—स्वभाव, खुल्यो खरा—खोटा और खरा।

बदल<बदले—स्थान पर दक्खिनी में 'बदल' शब्द का प्रयोग चतुर्थी विभक्ति के चिह्न स्वरूप होता है। अपें—आप+ही>आपे>अपें मुज<मुझ नेम<नियम किते—कुत्र>कित>किते दक्खिनी में सकर्मक क्रिया के मध्यम पुरुष में बहुवचन का रूप। बरन<वर्ण रख्या—रखना आसन्नभूत तथा सामान्यभूत रूप। रख+इया रखिया>रख्या। ज्यू—ज्यूँ>ज्यों।

कँचन<कंचन, पुरानी दक्खिनी में पूर्ण अनुस्वार का उच्चारण नहीं किया जाता। अर्द्धानुस्वार का उच्चारण किया जाता है। जब पूर्णानुस्वार का उच्चारण होता है तो 'न' का उच्चारण कहीं कहीं यों किया जाता है।

सूचना—हस्तलिखित प्रति में आरम्भ के तीन पृष्ठ नहीं हैं। पुस्तक चौथे पृष्ठ से उपलब्ध है।

मक्त्न का मोती मगर मग्ज के समले भितर
खूब दिसावे झमक दुर चक दुरें मदन
सब के कीवाड़ों मगा पसक का परग बँधा
मीस नयन का छजा मक्त्न का यू है बतन
तन के फ़िले में सदा हुक्म चलावे मफ़्स
रसत झमक ते दिसें सकल अँगूरे दसन
मद करे ही मबल मक्त्न कूँ मसे मिमा
दर क हवासे हुई घर की बकी हा रसन

दुर=दो, चक=चाँच दिसावे=दिखावे कीवाड़ों=किवाड़ (ब० व०) छजा=छज्जा सकली=सब दसन=दाँत दिसें=दिखाई देते हैं रसन=जीभ। मग्ज=मस्तिष्क समला=डिबिया दुरें मदन=मदन नामक स्थान का मोती, सब=ओठ, बतन=देश, रसत=पंक्ति दर=द्वार।

भितर<भीतर, दुर=दो<द्वि >द्दि>दुर, चक=चक्षु>चख>चक।

दिसावे=दिसाना (दिखाना) दिसना प्रे० वर्तमान विधि क्रि०। दुरें मदन=दुर्र-ए मदन।

कीवाड़ों=कपाट>किवाड़>कीवाड़ ब० व०। छजा=छज्जा>छाजा>छजा। सकली=सकल ही>सकल ई>सकली। दसन=दशन>दसन।

दिसें=दिसना (देखना) धातु मूल और विधि ब० व०, पु०।

मद=माई>मई>मद। कूँ<कूँ<को।

खूब बुरी गर जुदा, भीर हो रहता सगा
मक्त्न की खिमदत मने फ़िक्र मद्द राय चन
याम त बारोंबस्तर राह मद्द जा कुमम
बाप न पुजत ह पग मक्त्न किया बी गमन
मक्त्न का जिस पट मन पूर मद्दगा पटा
दर कूँ बहाँ पा ममन राह मगाव मगन
१ हा की हवायक की बून मन ता हमन कूँ कहाँ
बार कहता हैं हमा चंद मुग्न मुग बचन

मने—में अच्छे—रहे कुमल—कोमल, बाव—बायु धुजते—कांपते, वाँ—वहाँ, गवन—गमन घट—शरीर हुवा। हमनकू—हमको कता हूँ—कहता हूँ इता—इतना अर—अगर, यदि। खिलवत—एकान्त फ़िक्र—चिन्ता रायेजन—मंत्रणा देने वाला हक—ईश्वर, चंद—थोड़ा सुखन—वचन खुशबखन—मनोहर शब्द।

मने—मध्ये > मने ते—से कुमल—कोमल > कूमल > कुमल बाव—वायु > वाय > बाव। धुजते हैं—धूजना (कांपना) व अन्य पु पुल्लिंग। वाँ—वहाँ धूव < धुव, गवन—गमन > गवन, अगन—अग्र > अगन, धूव—धूम > धूव। हमनकूँ—हमको > हमन हमन + को—हमकू कता हूँ—कहता हूँ > कता हूँ, इत—इतना > इता > इत।

खाक के पुतले बना रूह से तन में भरा
बाल बसा कर अबल आप सिखाया मगन
आब व आतिश मिला खाको हवा ते कला
चार अनासिर लगा देह सँवार्या हमन
और फिरें जो तमाम सिजदा करें सुबहो शाम
लेके सितार्यां सँगात चाँद सूरज होर गगन
नूर का झलकात ते हूरो परी लग सँवार
सात तबक़ सरग में पूर रख्या सुल मिनन

तन—शरीर अव्वल—अव्वल पहले। मगन—मग्न तल्लीन आनन्द पूर्ण। ते—से, सँवार्या—सजाया हमन—हमारा सुबहो शाम—सुबह (प्रात) व (और) शाम (संध्या)। लेके—लेकर सितार्यां—नक्षत्र सँगात—साथ झलकात—झलक परी लग—परी तक सरग—स्वर्ग, खाक—मट्टी, रूह—आत्मा आब—पानी आतिश—अग्नि खाको हवा—खाक (मट्टी) व (और) हवा। अनासिर—अनसर (तत्त्व) का ब. व. सिजदा—अभिवादन नूर—प्रकाश, हूरो परी—हूर (अप्सरा) व (और) परी। तबक़—स्तर, सुल मिनन—ईश्वर।

चार अनासिर—भारतीय दार्शनिकों ने पाँच तत्त्व माने हैं, जबकि इस्लाम में आकाश को महाभूत नहीं माना जाता। सात तबक सरग में—इस्लाम के अनुसार स्वर्ग *के सात भिन्न-भिन्न स्तर। अव्वल < अव्वल मगन < मग्न सँवार्या < सँवारिया लेके—लेकर सितार्यां < सितारियां (ब० व०) सँगात < संग सूरज < सूरज < सूम।* दक्खिनी में आरंभ के दीर्घ ऊकार का ह्रस्व उकार बनाने की प्रवृत्ति पाई जाती है। झलकात < झलक सरग < स्वर्ग रख्या < रखिया।

सरग मे बरसात पाड़ भूम सँवारे अपार
गरम कूँ सीतल करे झूले झुला कर पवन

बहिश्त मुनव्वर बना खाक किया सब सानी
पाच व मानिक बिछा खूब सँवार्या सहन
झाड़ झडूले बना साया जमीं पर सटा
पाच के तख्ते असंड बाग के दिसते चमन
एक हुकम ते हुए आब के चश्मे निछल
शाहदो सबन की नदी पूर चढ़ मौजबन

पाड़=डालकर, भूम=भूमि कूँ=को पाच=हीरा, मानिक=माणिक सटा= डाला चमन=स्वामी निछल=स्वच्छ पूर=बाढ़ । बहिश्त=स्वर्ग मुनव्वर=प्रकाशमान (नूर—मुनव्वर) खाक=मिट्टी राख । सहन=आँगन, साया=छाया शहद सबन=शहद (और) दूध, मौज बन=तरंगित ।

सरग<स्वर्ग थे=से (से) अपादान कारक की विभक्ति । पाड़=पाड़कर पाड़ना=उखाड़ना भूम<भूमि मीठल<मीठस झडूले<झाड़ (पेड़)+ला (ह्रासात्मक) । पश्चिम धकार के स्थान पर ककार । सटा-सटना (गिराना रखना फैलाना) का भू० का० । दिसते=दिसना (दीखना) वर्त० कृ० ब० व० दिखाई देते हैं । निछल=नि+छल । नदी<नदियाँ, चढ़<चढ़े ।

गौर बदन व बना स्याम सलोने निपा
आप सरफराज कर सबन दिखाया बरन
झाड़-फर रात दिन आप इबादत बदल
इश्क लगा कर अबन साफ स राख्या अमन
शाहा गदा कई निपा जौक सूँ राख्या मिला
पेम बधावा पड़ा जग कूँ किया अंजुमन

निपा=उत्पन्न कर, सबन=सब बरन=रंग झाड़ फर=पेड़ और फल आप इबादत बदल=आपकी भक्ति के लिए, अमन=पवित्र-निर्मल पेम=प्रेम बधावा= मंगल गीत बधाई का गीत । बदन=शरीर सरफराज=कृतार्थ शाहा गदा=बादशाह और फकीर, शाह (शासक) व (और) गदा (फकीर) । जौक=प्रसन्नता अंजुमन=सभा । निपा<निपजाया (निपजाना=उत्पन्न करना) ।

सबने=दक्खिनी में सबन का अर्थ सम्पूर्ण होता है । शाही ने इस शब्द का प्रयोग कई स्थलों पर किया है किन्तु उसका रूप स्थिर नहीं है । कहीं सबनी और कहीं सबने और कहीं सबना । बरन<वर्ण फर<फल, दक्खिनी में ब्रज की तरह लकार के स्थान पर 'र' का प्रयोग नियमानुसार नहीं होता किन्तु शाही में लकार के स्थान पर यहाँ रकार का प्रयोग किया है । बदल=सम्प्रदान कारक की विभक्ति । अमन<अमनिया (विशुद्ध) बधावा<बधना (बढ़ना)+आव=बधावा ।

शाही' आशिक़ हवा चोस मुनाजात कुच
शाके करम तुज प हाय अहरे हुसेनो हसन
कार जहाँ के सकल फ़िक्र ते भारी अछे
साईं करे लोम अब दूर हो जावे मेहन
आहा अफ़सोस के क़ुबह ते महफ़ूज धर
साया करम का दिखा औश सू रख मुज बदन
साईं सचा है तुहीं सेवा तुजे है सही
जिते जहाँ के शाहाँ रोज करें तुज सरन

कुच—कुछ, अछे—रहे, साईं—मालिक, सरन—शरण ।

मुनाजात—हज़रत मुहम्मद के उत्तराधिकारियों की प्रशंसा तथा स्तुति । करम—दया अहरे हुसेनो हसन—हुसेन और हसन के लिए । कार—काम मेहन—दुःख, आहे अफ़सोस—आह (हाय) व (और) अफ़सोस (पश्चाताप) । क़ुबह=बुराई, महफ़ूज—सुरक्षित (हिफ़्ज़-महफ़ूज़) । साया—छाया आश्रय । औश—आनन्द रोज—नित्य ।

'शाही' कवि का काव्य-नाम (तख़ल्लुस) । कवि ने गीत में 'अधम रूप काव्य नाम का प्रयोग किया है ।

हुसेन-हसन—हज़रत अली के पुत्र तथा हज़रत मुहम्मद के दौहित्र । हुसेन की मृत्यु कर्बला के मैदान में हुई और हसन अपनी पत्नी के विश्वासघात के कारण मरे । शिया सम्प्रदाय के लोग इन दोनों को विशेष आदर से देखते हैं ।

हवा<हवा, कुच<कुछ, तुज पे<तुझ पर, अछे—अछना (रहना, होना) का आशिष लिंग अन्य पुरुष । साईं<स्वामी । सू—से करणकारक और अपादान कारक की विभक्ति । सचा<सत्य तुहीं<त्वमेव जिते<जितने । शाहाँ=शाह (ब व) सरन<शरण ।

क़सीदा[1] दर नाते पयम्बर सल्लल्लाहे अलैह

देखो नौरोज़ चमन यू बहारिस्ताँ दिखाया
बरक बिन फल व फूलाँ ने पवन के हूस सिखाया है
सरग की औज की कुर्सी सँवार्या चोस (?) हो दिनकर
अन्दर सारे बुसाने पर बसन्त सारा बनाया है

बरक—वर्षा चोस—भूला आमना (?) दिनकर—सूर्य । बहारिस्ताँ—बसन्तोद्यान औज—ऊँचाई, कुर्सी—सातवें आकाश पर ईश्वर का आसन ।

---

१ क़सीदा—प्रशंसात्मक काव्य लिखने की शैली जो किसी भी छन्द में लिखी जा सकती है ।

कँवल<कंवल दक्खिनी में तत्सम शब्दों के साथ भी पूर्ण अनुस्वार का प्रयोग बहुत कम हुआ है। बरक<बरख<बरखा<बरसा<वर्षा। फूगाँ<फूग (ब व)। हत< हाथ<हस्त। सरग<स्वरग<स्वर्ग। चन्दर<चन्द्र।

नात—हजरत मुहम्मद की प्रशंसा में लिखी गई कविता। नौरोज— ईरानी लोगों का नव वर्षोत्सव।

सला से हाँस अस कल्या सुरया का बँध्या सेहरा
गगन हीरा हुआ चाँदरा सगन अपना गिनाया है
हुआ परदा मंजे का कर सितारों का तगट तिस पर
सुधावा मुश्तरी होकर हुमद सूरज लगाया है
बराती सब बुलाया है तरफ़ आना दिखाया है
जरा किमखाब सराचा कर सुरज नौशो हो आया है
उदक जल थल भरे हुँवाँ नहीं है जानो भूमी पर
चन्दर का सुख दिखाने तईं सुरज आरस्याँ मँगाया है

सला—हाला हाँस—हँसली गगन—लग्न मुहूर्त। मंजे—पलंग तगट—विस्तर कर्व हुमर—हल्दी उदक—पानी आरस्याँ—आरसियाँ आईने।

सेहरा—वर के मुख की झालर सुधावा—शृंगार करने वाली, नाइन। मुश्तरी—बृहस्पति। सरक—सरदाज जरी—जरतार, किमखाब—रेशम सराचा—सरापा नौशो—वर। हाँस<हँसली (हँसली—अस+ली)। मँजा<मंजा<मंच। आरस्याँ—आरसी का ब० व०।

कँवल चन्दर के रस्तों सूँ छिपाया पंक में अपन
लगाया नीर ते सारी कँवल कूँ फिर तिगाया है
मधू सम्बल शफ़क़ का सु मँगाये प्रान सं कागन
गुलों में यूँ भँवर जिसने सुधाव प्याला भराया है
मरावल अनल कूँ देन दिया तशरीफ़ पानी की
सबर अरकल का मरकी कर दरख़्ताँ तई पिलाया है
चँवली जा दवीली है यली माशूक नवेली है
गुलों की नित सहेली कर गिन्ता मजलिस में स्याया है

पंक—कीचड़ अपूँ—अपनी इस अमर प्याज को। का मे—कहाँ के कू—इस तरह सिर और पानी की—पानी की थैली—हरनी। दरख़—प्रतिस्पर्धी ईर्ष्या। सम्बल—चन्दन शफ़क़—सन्ध्या की लालिमा अनल—उन्माद, सुरक—कस्तूरी मरावल—चोगा

बरम—समा वसरीफ़—भेष मबर—बादल मशक—मशक (चमड़े का वह थैला जिससे भिश्ती पानी भरता है)।

कँवल<कमल मजू<मम हूँ<यद्यपि। कां<कहाँ कारन<कारण भँवर<भमर<भ्रमर। पानां<पान (ब व)। गदकां—मशक (ब व)। चँबेली<चमेली। स्याया है—से आया है।

बनपशां भास के दावे भरूसी ले के नित बैठी
नबाकत देकते उसकी नयन नरगिस सिसाया है
पँखी खुशमरज हो स्यारे भपस में भप लगे गाने
मयूरां नाचते ठारें बदल बिरदग बजाया है
बँघे पिम (?) लग पितम्बर से बसँत के काज में मिलने
कबूतर बिरह तें कूके पपीहा धूम सुनाया है
मदन के बाम की फांकां भसे केतुक गिरे बन में
भसद कर बास में भपसें (?) भुजँग के मन समाया है

बास—गंध पँखी—पक्षी स्यारे—सब भपस में भप—भपने में आप। पिम—(?) केतुक—कितनी। बनफ्शां—एक बनस्पति भरूसी—दुलहन नरगिस—एक पुष्प जो नेत्र का उपमान माना गया है मदन के बान—मदन बाण-एक पुष्प मदनमस्त। खुशमरज=प्रसन्न बुद्धि।

देक्ते<देखते पँखी<पंखी<पक्षी। स्यारे<सारे भप<आप<आत्मन्।

सरो माते छके मद के खड़ झूलते चमन म्याने
मिनब बेलां कूसालां कर सुराहयां दप सँघाया है
चँपे के झाड़ की खूबी दिखावे नयन में यूं छो
मगर धजरे जमरँद का कँवल सूं बार आया है
सुँदर रेंती (?) जो आसी है सजन वाले की वासी है
धड़े मराजों सयासी कर पवन मराजों चढ़ाया है
हूरे पातां मने डास्यां दिसें नारज की मूक यूं
हस्न सुन्दर के जामन पर सबज जामा उढ़ाया है

माते—मस्त छके—तृप्त म्याने—में अन्दर। कूसालां—कसलोमें सुराहयां—शराब की सुराहियां दप—रूप बाला—बाल युवक। बाली—बाला युवती। पाता—पत्ते जामा—नूपछाही कपड़ा। सरो—एक वृक्ष जो अपनी लम्बाई और सीधे पन के कारण प्रेमिका का उपमान माना जाता है। मिनब—अंगूर धजरे जमरँद—जमरँद (पन्ना) का पेड़ बार—फल नारंज—नारंगी।

माता < मत, मुरझी < मुरझाइयों पातों < पात (ब व) < पत्र। डाल्यों < डालियाँ तरन < तरुण मूज < मुझ।

अधर पर ला धरे रंगीं किया है लाल लाला जब
मुकाबिल रंग दिखान कूँ हिया दाहिम धुराया है
गुलाबी फूल पर दावा लग्या करने समन सेती
लग्या माली न कर दावा बड़ा यो नावें पाया है
ली बोल्या बाग मालो सूँ बड़ा है नाँवें सो किसका ?
लगा यो इस्म अहमद का जिन दीं अप निपाया है
मुहम्मद शाहे मुरसिल का लेग्या जब नात कहने में
मिठाई पाके मन मेरा सू मजनूँ धुन के ल्याया है

अधर = ओंठ, हिया = हृदय, दाहिम = अनार, सेती = से लाला = लाला निपाया = उत्पन्न किया, मिठाई = मधुरता। रंगीं = रंगीन साफ़ = बड़ाई, लाला = एक पुष्प समन = चमेली इस्म = नाम अहमद = हजरत मुहम्मद दीं = दीन धर्म। शाहे मुरसिल = रसूलों के बादशाह हजरत मुहम्मद। नात = हजरत महम्मद की प्रशंसा में लिखी गई कविता। मजनूँ = मजनून विषम।

लग्या < लगिया < लगाया < लिगाया < लाया यया < कहा। नावें < नाँवे लगा। < नाम जिन < जिन्होंने निपाया < निपजाया लेग्या < लेगिया।

मुहम्मद सा नहीं पैदा किया करतार तिरजग में
उसी के इश्क से सौ मार तिरजग का भराया है
शरीअत होर हक़ीक़त का इनायत सब किया साईं
बड़ा रखया दे आलम में करम अपना जनाया है
शरीअत का है मिस्तर तूँ हक़ीक़त का है मज़हर तूँ
तेरे बिन का चलेगा राह गुमरह जन लखाया है
सफ़ा सीना किया तेरा अपस के राज रमज़ में
इसमआनी मुग्रमलजुमा अजल तें तुज सिखाया है

तिरजग = तीन लोक जनाया है = प्रकट किया है। इश्क़ = प्रेम शरीअत = इस्लामी धर्मशास्त्र इनायत = प्रदान असर = प्रभाव था। आलम = संसार, मिस्तर = रेखांकित कागज जिसे नीचे रख कर लिखने के कागज पर रेखा सीधी जाती है। हक़ीक़त = वास्तविकता मज़हर = केन्द्र, राह = मार्ग गुमरह = गुमराह पथभ्रष्ट। सफ़ा = निर्मल, सीना = छाती राज़ = रहस्य इसमआनी = विरला मुग्रमलजुमा = वाक् रचना। अजल = प्रारम्भ।

विरखन < त्रिभुवन, सोंसार < संसार, दक्खिनी में तत्सम शब्दों के पूर्व अनुस्वार का उच्चारण यथानुस्वार होता है। कभी-कभी अनुस्वार युक्त अकार का उच्चारण ह्रस्व ओकार के रूप में होता है। गुमरा < गुम + राह। तुज < तुम।

तवल्लुद कर से आया तुज जगत के अजुमन स्यान
उसी पल ताज होर तोहफ़ा रिसालत का पठाया है
हुआ है मौजिज़ा ऐसा तेरे खुश इस्म का जग में
मुबारक नाँवें सूँ तेरे मुआ कूँ फिर जिलाया है
मुतह्हर जिस्म है आला मुनव्वर इस्म है सारा
सफ़ाई जब दिखाया सूँ गगन ने सिर नवाया है
निपाया रब मुहम्मद जब खिसा पाया कुफ़्र का तब
तड़क था 'ताक़ किसरा' सब अगन सारी बुझाया है

पठाया — भेजा मुआ — मृत नवाया — झुकाया निपाया — उत्पन्न किया खिसा — खिसका पाया — नींव तड़क था — तड़क गया। तवल्लुद — जन्म ताज — मुकुट, तोहफ़ा — भेंट, रिसालत — रसूल का पद (रसूल ईश्वर का सन्देश वाहक — रिसालत) मौजिज़ा — चमत्कार, इस्म — नाम मुबारक — शुभ मुतह्हर — पवित्र आला — श्रेष्ठ, मुनव्वर — दीप्तियुक्त रब — ईश्वर, कुफ़्र — ईश्वर की एकता को अस्वीकार करना ताक़े किसरा — बगदाद के निकट एक महल जो हज़रत मुहम्मद के जन्म लेने के अब पर हिल उठा था। होर — और।

पठाया — पठाना सा० भू० अन्य पुरु० ए० व०। नाँवें < नाम मुआ < मुआ < मृत निपाया < निपजाया — उपजाया खिसा — खिसना खिसकना सा० भू० अ० पु० ए० व०। पाया < पाद अगन < अग्नि।

जगत के सिर उपर साया गगन का रोज़े महशर लग
तेरी नालेन का साया गगन (के) सीस छाया है
अनन्त की बात थी सारी मुहब्बत, राज की प्यारी
पिरत का दर्स करने तईं पियारा घर बुलाया है
चल्या सूँ रब सूँ जा मिलने ज़मीं तय हुई तेरी चलने
हुआ मेराज यक पल में अरश पर तुज लिजाया है
तेरा फ़िरदौस में घर है सदा सूँ कुफ़्र पर बर है
तेरे तईं कू फिराया जिन उसे हक़ ने जलाया है

तब — तक तेरे तई — तुम्हारे प्रति क — आत्मा छाया — छाया, आश्रय। रोजे महशर — प्रलय का दिन नाजेम — नाज करने वाला। फिरदोस — स्वर्ग कर — प्रभावपूर्ण।

मेराज — हजरत मुहम्मद ईश्वर का साक्षात्कार करने के लिए सातवें आकाश पर देवदूत क साथ गए थे। इस भेंट को 'मेराज' कहते हैं। इस्लाम में इस मेराज का बहुत महत्व है।

प्यार <प्यार, अनन्द <आनन्द, पिरत <प्रीति पियारा <प्यारा सिखाया — से आया।

[1]फरिश्त्यां का न था फरा तदी था नूर सो तेरा
तेरे अहकाम महशर सम जगत क सिर चढ़ाया है
बड़ा तुज दीन का कस है दुजे दीं सब हुए पस है
[2]तेरी अंगुश्त के कस तें कदर दो फाँक कराया है
जहाँ के सफ़ में दिसता तूं चंदर तार्यां में झमक ज्यूं
जिते गुल जो भूक थे सो वो गुल सब तूं भुकाया है
झमकती है पिशानी जा नुबूवत की निशानी था
दुनिया होर दीन थानी हो हुकुम जग में चलाया है

फरा — बराबर, तदी — तब, वहाँ। कस — शक्ति, सार। अहकाम — आदेश (हुक्म-अहकाम)। महशर — प्रलय-दिवस सम — समान अंगुश्त — उँगली, दीन — धर्म सफ़ — पंक्ति।

सखियाँ कूं पत दिखाया जब सख्यां कूं सत सिखाया तब
सुर्ता छोड़्या हुर्यां जैसी सखी भैंऱ्यां सुलाया है
अखियाँ में तूं च स्याना है नहीं फिर तुज सा माना है
तेरे से दीन पाना है समज मुज यूं सुझाया है
अज्ल से हात आया है इसम जग कूं सिखाया है
गया सो राज स्यान तदे सुरिज कूं फिर मँगाया है
रिसालत का तू सरमाया हुकुम हक़ का तूं ही पाया
सभू ते सीस बत कर मिरम जंगम त स्याया है

१ जिस समय हजरत मुहम्मद ने ईश्वर का साक्षात्कार किया था, देवदूत भी उपस्थित नहीं थ। देवदूत स्वर्ग में एक विशिष्ट स्थान तक ही जा सकता है।

२ हजरत मुहम्मद से प्रार्थना की गई कि वे कोई चमत्कार दिखायें हजरत मुहम्मद ने अपनी उँगली उठाई और चाँद के दो टुकड़े कर दिये।

पतियाँ — पति (ब० व०), पत — प्रतिष्ठा सत्याँ — सती स्त्री (ब० व०)। जतियाँ — यति संन्यासी, (ब० व०)। तू च — तू ही स्याना — चतुर, दाना — दूसरा, दीन — धर्म यू — इस तरह, इलम — ज्ञान गया सो — जो बीत गया स्याने तईं — स्याने के लिए, सभू — प्रात:। मूरत — मूर्ति, मदल — न्याय, रोज — दिन परमाया — पूँजी।

पतियाँ < पति (ब० व०) सत्याँ — सतियाँ, बुतां — बुत (ब० व०) हत्याँ < हातियाँ < हाथियाँ < हस्ती (ब० व०)। मद्याँ < मदियाँ मीत्याँ < महतियाँ < महती (विशेषण ब० व०) जतियाँ < यतियाँ < यति (ब० व०)। तू < त्वम्, यू < इत्थम्। इलम < इल्म स्याने < से याने रिसालत — रसूल (ईश्वरीय सन्देशवाहक) का भाववाचक, सभू < सुबह मिरग < मृग स्याया < छाया, च — ही, मराठी में च का उपयोग ही के अर्थ में आता है और दक्खिनी ने इस अव्यय को इसी अर्थ में ग्रहण किया है।

दिस्या जो नूर का झलका अज्यब तुज सम पड़्या झलका
सुरिज' ने कान मा हल्का बँदियाँ में आप लिखाया है
पतियाँ सत-पत के ओड़्या ये वतियाँ के पड़े बाँटे (?)

हुए ताबे सई बाँचे जिते हरबे जुमाया है
अदू जो जोर में अगला अथा पौलाद बाजू का
मुक़ाबिल जब हुआ है तुज भरम अपना गँवाया है
दिसे मशरिक़ तें मग़रिब लग बड़ाई रोज़ अफ़ज़ूँ हो
नुबूवत के सदर ऊपर सभों में तूँ सुहाया है

दिस्या — दिखाई दिया झलका — चमक तुज सम — तुम्हारे सामने मा — जानकर, बँदियाँ — बन्दी (ब० व०) सई — वे ही बाँचे — बचे अथा — था, लग — तक सभो में — सब में। नूर — प्रकाश हल्का — कान की बाली, अदू — शत्रु, बाजू — भुजा मशरिक़ — पूर्व मग़रिब — पश्चिम अफ़ज़ूँ — अधिक नुबूवत — नबी का पद ईश्वर का सन्देश वाहकत्व सदर — अध्यक्ष, अध्यक्ष के बैठने की जगह।

गुलामी के चिह्न स्वरूप अरब में कान में बड़ी बाली पहनाई जाती थी।

दिस्या — दिखता है < दिसिया है < दिस्या है, पड़्या — पड़ा < पडिया बन्दियाँ — बन्दी (ब० व०)। आप < आप।

किया काबा[1] फ़तह जिस दिन हुए हैराँ परी होर जिन
हुमा यू मुतशिकन पायम रसूलुल्ला का आया है

१ मक्का शरीफ़ का एक स्थान जहाँ हज करने वाले यात्री प्रदक्षिणा करते हैं।

निश्या हूँ नात यू सारा तबा मुझ रोगनी पान
रसन यूँ कां मझ ताक़त तुहीं हक़ का सराया है
मआमी के भर्या मोती चतुरपन के से चव सेती
क़सीदयाँ में मुरस्सा कर क़सीदा यू बनाया है
तुमारे इश्क़ का निस दिन देंगा दिल में धया 'शाही'
चरन तल सीस ला अपना हुआ मगन को पाया है

पाया—पैदा किया हुआ बेटा। रसन—जीभ सराया—प्रशंसित चाव—उत्साह, सेती—से पाया—दौड़ा बिन—मूर्तों के समान मदूरय प्राणी जो मानव जाति को कष्ट न देकर कई बार सहायक सिद्ध होते हैं। मुतअिक़न—मुक्ति मंडक दायम—शाश्वत स्थायी। तबा—अन्तःकरण स्वभाव। मआमी—विषय मुरस्सा—जटित।

हैरां<हैरान होर—और निश्या<मिश्रिया रसन<रसना कां<कहाँ तुहीं<तुम ही सराया है<सराहिया है—सराहा। दैंगा<पड़ा भर्या<भरिया—भरा भर्या<भरिया—भरा चव<चाव।

हज़रत अली[२] की प्रशंसा

क़सीदा दर मन्क़बत हज़रते अमीरुल मोमिनीन अली अलैहिस्सलाम

भा रे कलाल, मुज कूँ प्याला पिला मया का
ता मस्त होव दस्ँ मुखड़ा अली[१] पिया का
पिव जीव का गुसाईं पिव सूँ पिरत लगाएँ
पीना शराब पिव मिल पान अरत पिय का
पिव संग साज सज्जन दरस सगुन अपन में
मौला हुआ बचन ×क×का हिरदे के जोसियाँ का
पावन फड़क बत हूँ पिव मस्त हो मिसंग
भासिग बस्त रहूँ अब बेंद गाल अंगिया का

कलाल—सुरा विक्रेता मया—प्रेम मुखड़ा—आकृति गुसाईं—स्वामी परम—भगवान जोगियाँ—योगी ब० व। जोबन—स्तन आसिप—आलिंगन बेंद—बंद, अंगिया—चोली जा—जिससे।

पियाला<प्याला मया<माया मुखड़ा—मुखड़ा<मुख+ड़ा गुसाईं<गोस्वामी पिरत<प्रीति परत<पत्र, पिला<प्रिय पिव<प्रिय साज<सार्ज सगुन<शकुन

१ हज़रत मुहम्मद की प्रशंसा में लिखा गई कविता।
२ हज़रत अली हज़रत मुहम्मद के दामाद और ख़लीफ़ा व पति थे।

साँचा <सच <सत्य । हिरदै <हिरदय <हृदय । जोती <ज्योतिपी, जोबन <यौवन क
हैं <कहते है । जोगिया <जोगिया <जोग + इया ।

बदल—दक्खिनी में 'बदल' शब्द का अर्थ बदले तत्स्थानीय और परिवर्तन होता
इसका प्रयोग चतुर्थी विभक्ति में भी किया जाता है ।

मुज देख पीव छातियाँ सुन मस्त मद की बतियाँ
जावे सदा जिया छिज हसरत सूँ तूतिया का
तन के भवन पुरिन में पिव की फिरा दुराई
लाग्या है मोत मीठा वो बोल मद पिया का
हँस चाल से पिया ने म्याने मटकते देखे
परदा नयन के म्याने राखूँ न तूतिया का
पिव साथ रात जागूँ प्याला पिया सूँ माँगूँ
प्याला सचा वही है पिव हात के दिया का

छातियाँ—स्तन छिज—क्षीण विगलित छीजना—उत्तरोत्तर ह्रास होना घटना
तूतिया—सौत, पुरिन—पुरी नगरी (ब व)। दुराई—बड़ाई, दुहाई। बोल—बात
हँस—हँस म्याने—में, सचा—सच्चा तूतिया—सुरमा। छातियाँ—छाती(ब व) बतियाँ—
बात + इयाँ छिज <छीज (छीजना)। पुरिन <पुरी (ब व) दुराई <दुर (तैमुर) बड़
व्यक्ति (प्रतिष्ठित व्यक्ति) + आई। लाग्या <लगिया <लग्या। हँस <हंस राखू <रखूँ
हात <हाथ दिया का <दिये हुए का।

तूतिया—दक्खिनी के कई कवियों विशेष कर शाही ने अपनी कविता में सर्व
'तूतिया' शब्द का प्रयोग तूती के अर्थ में न करके सौत के अर्थ में किया है।

बाजे शराब प्यासे बेकैफ हो रहे हैं
प्याला पिया दिया सो आराम है जिया का
पिव जीव मुज चुराया तन नेह सा मराया
क्या वस्फ़ अब करूँ मैं उस मस्त मोहिया का
मय पूर कर पियाला पिव सेज में पिलावे
सकूँगी मन भुला कर उस सूर भोगिया का
प्याले शराब के मूँ दिसते नयन में सारे
कंचन का रस किया है उस्ताद कीमिया का

जिया—प्राण मन जी। मुज चुराया—मेरा चुराया मोहिया—मुग्ध करने वाला
मोहने वाला। पूर कर—भर कर, सूर—वीर, भोगिया—भोगी भोग करने वाला,

दिसते=दिखाई देते। बाके=कुछ, बेकैफ=बनना कीमिया=रसायन रासा- ११
यनिक क्रियाओं द्वारा सोना बनाने की विद्या।

जिया<जी<जीव। मोहिया<मोही पूर<पूरा<पूर्ण मोगिया<मोगी पिया
दिसा सो=पिया ने दिया है वह दिसत=मराठी की दिसण क्रिया का वर्तमान
काल अन्य पु ब व।

प्याला के स उसासों उसने हरन उछाल्यो
दिस्सा नवल तमाचा तासीरे सीमिया का
नह के शराब थे हुई पिव के मदन की माती
छाती है माज हुस की क्या काम कर रिया का
यह हात का पियाला गर कोई नजर सूं देख
होवे वो मस्त पल में दसा सट हया का
शीशा शराब का यूं दिसता है सुख रँग में
गोया शफ़क़ के म्यान खुरशीद है जिया का

उसासों=उसास (उत्साह, जोश) ब व, हरन=मृग थे=थ माती=मस्त,
सट=डाल दे, तासीरे सीमिया=परकाय प्रवेश की विद्या करिया=युक्ति अथवा पापा-
चीया हया=लज्जा मुर्ग=प्राण शफ़क़=उषा और सन्ध्या की अरुणिमा, खुरशीद=
सूर्य जिया=प्रकाश।

सटना (पंजाबी)=छोड़ना डालना रख देना फेंकना। उसासों<उसास ब व।
उछाल्यो<उछालियो नह<स्नेह, माती<माता<स्त्री लिंग दसा<दशा

जब सब त सब मिला कर मन पीव सात निर्ई ’भ
जायन हुमाम हो मुज नाता हुआ हिया का
होवे खुमार मुज पर तब हट को सट मिसूगी
निस दिन करूंगी सुमरन म नावें पमिया का
क्या मन को कहूं बढ़ाई म मगन जब भराई
कनी शरम शिराब ज्यूं इल्म हीमिया का
जा पीव मुज बुला कर प्याला पिरम पिलावे
मैं मस्त हो दिखाऊं बिठ पाव शिन मिया का

थे=थे निर्ई=री जायन=यौवन हट=हठ स्थिर। हट=जिद सट=छोड़
कर, पेमिया=प्रेमी, कैसी=किसी दिन निशा=मन लगे वाला, भव=मौठ पमार=

—नशा मग्ज—मस्तिष्क, इस्म हीमिया—भूत विद्या और ग्रहों को अधीन करने की विद्या।

सात<साथ पिई<पीई—पी हुई हुसाय<हस्साय हट<हठ, सुमरन<स्मरण नाँवँ<नावँ<नाम। पेमिया<प्रेमिया<प्रेमी। कहूँ<कहूं केती<कति, पिरम<प्रेम।

पिव मस्त मद चकावे यो कठ मुज लगावे
अंम्रित अधर पिलावे होवे कलप कया का
पिव प्यार के जुगत कर जब रस-परस किया मुज
छुसबू लगी मग्ज में कस्तूर मिरगिया का
भद्‌या है मद बदन में पिव सात रहे अनन्द से
आशिक हो मैं पिया की परवाना क्यूँ दिया का
प्याले की भाँत कहते होय मस्त मुज रसन सब
मँगता हुस्यार होने स नाँवँ एमिया का

चकावे—चखाता है कलप कया का—कायाकल्प कस्तूर मिरगिया का—मृग की कस्तूरी दिया—दीपक भाँत—प्रकार, रसन—जीभ एमिया—हजरत अली का विरद। आशिक—प्रेमी।

पिव<प्रिय चकाना<चखाना मुज लगावे<मुझे लगाये अंम्रित<अमृत कलप<कल्प कया<काया जुगत<युक्ति परस<स्पर्श मिरगिया<मृग+इया भाँत<भाँति रसन< रसना नाँवँ<नाम हुस्यार<होशियार (होश)।

शाहे नजफ़ वली है तिस नाँवँ सा अली है
वो राजदान महमद सुलतान औलिया का
जिस आस में मुहब्बत गर ना अछे अली की
हैराँ सदा फिरे वो क्यूँ संग आसिया का
तुज शाह जवान अगे मग्रलूब हे अदू सब
तूँ शेर है मजस में मौसूफ़ अंबिया का
तुज तेग़ की झलक में बिजली छुपे गगन में
अमरीरुल्मम तुही है सरदार असिफ़िया का

तिस—उस (उसका) ना अछे—न रहे लगे—प्रयुक्त हुए। शाहे नजफ़—हजरत अली नजफ़ नामक स्थान पर हजरत अली दफ़नाये गये थे। वली—पहुँचवाला सिद्ध। राजदा—रहस्य रखने वाला महमद—हजरत मुहम्मद औलिया—साधु, सन्त। संग आसिया—चक्की का पत्थर। मग्रलूब—पराजित, प्रभावित। अदू—शत्रु, मजस—मृगादि मौसूफ़—

मर्गंमित । मविमा — मुम्व (नबी) शमशीरजन — तलवार चलाने वाला मस्तिमा — पविम माहमी ममी — हजरत महम्मद के जामाता मौर कुछ समय पश्चात् उनके उत्तराधिकारी एक ख़लीफ़ा शिया लोग इन्हें बहुत महत्त्व देते हैं।

———— अब हाथ तें उचाया कहे सब सफ़ीं मँगाया
गगिया का
पे कतारीं
रेकिया का
विसर जा
पेड़िया का
रान सारे
मूमिया का

हृदय सोंहार - नाथ मीमान —
— होंट हस्ता — पशु दीन — धर्म
र — तलवार, मङ्ग — पशु।

द, कहे < कति सोंहार < संहार,
राय < राज < राजा मूमिया <

स्वन में म का तें मारेश होने के

गा दिया है
रामिया[1] का
कुछ मन्म प
रीमिया का
। में महज है
दो खंड भए बराबर शमशार[3] क लिया का
तुम शाह की नज़र मूँ ग्रम हो रह्या उमक सब
पीला हुमा तनीं पे रंग मन मूमिया का

१ जड़े (जिनके) स्थान पर 'जीन' भी पढ़ा जा सकता है।
२ रूपमिन के स्थान पर रूपमिन भी पढ़ा जा सकता है।
३ शमशार के लिया का — शमशीर हाथ लिये हुए।

छिया—छीजा हुआ क्षीण। दिसा है—दिखाई दिया है आम—समस्त सकला—सम्पूर्ण अछे—रहे, तवां में—तब से सूरिया—सूरज सुजात—बहादुरी, करासिया—सेनापति, अदालत—न्याय हक़—ईश्वर, अदम—अनादि अलम—ध्वजा तक़दीर—परिणाम भाग्य। दीसिया—अदृष्ट दर्शन की क्रिया मीज़ान—तराजू सिफ़त—विशेषता शमशीर—तलवार, ख़म—झुका हुआ फ़लक—आकाश।

छिया—छीजना (नाश होना) भूतकाल ए॰ व॰ पु॰। दिसा<दिसबे (म॰) (दिखाई देना) भू॰ का ए॰ व॰ तोड़्या<तोड़िया, सूरिया<सूर्य।

पूरे बँधा क़वायद जेते इसम जहाँ के
तूँ रहनुमाँ सचा है उस्ताद अतक़िया का
कीता है बालपन में कइ बुद सूँ लख तमाशे
सर चश्म-ए-करामत तूँ पीर अतक़िया का
उस्ताद मुस्तफ़ा हो सारा इसम दिया तुझ
ल्याया अथा हुकुम सब तूँ साँइ किब्रिया का
तुज जात में सख़ावत बुनियाद है अजल थें
तेरे दिये सूँ होवे मन सेर सोभिया का

कीता है—किया है बुद—बुद्धि साँइ—मालिक सोभिया—सामग्री। क़वायद—क़ायदा (नियम) ब॰ व॰। जहाँ—संसार, रहनुमाँ—मार्गदर्शक अतक़िया—परहेज़गार लोग धर्मात्मा लोग। सर चश्मए करामत—चमत्कार का उद्गमस्थल। अतक़िया—पवित्र लोग मुस्तफ़ा—हज़रत मुहम्मद हुकम अथा लाया—आदेश पूरा कर लाये किब्रिया—ईश्वर (कबीर)। जात—व्यक्तित्व सख़ावत—दानशीलता अजल—युगादि, सेर—तृप्त

इसम<इस्म सचा<सच्चा कीता है—करना धातु का आसन्नभूत का पंजाबी रूप बुद<बुध<बुद्धि। तूँ<त्वम्, साँइ<स्वामी सोभिया<सोभी।

ठाका बदल इबादत कीता है सब सख़ावत
मज़बूत कर लिया है करतार अग़निया का
तुज हात के असर का कस है परस ते अगला
कंचन सरीर होवे तुज हात के छिया का
रौशन हुआ है वो घट जिस घट नजर करे तूँ
सरताज है सदा तूँ मुख़्तार अतक़िया का
जिस सीस पर अली का साया अगर होवे तुज
ना धेर हो सिने में परवा सटे भया का

ठाहा—खड़ा करतार—ईश्वर, कस—शक्ति सम्पन्न। परस—पारस (पत्थर), अगला—अधिक, खिया का—सीने के कारण घट—हृदय चातिक—चातक अया—डर। इबादत—प्रार्थना सखावत—दानशीलता, उदारता। मक़बूल—स्वीकृत (क़बूल) ग़दुनिया—अनी लोग सरताज—शिरोमणि श्रेष्ठतम। कुम्बार—महान् (कबीर)। सतकिया—पवित्र लोग, धर्मात्मा।

कीता है—करना क्रिया का पंजाबी में भासन्न भूत, करतार<(कतृ, संस्कृत क० क०) कर्त्तार., हात<हस्त परस<स्पर्श सरीर<शरीर, तुख<दुख, कुष<कुछ मया<भय, सिना<सीना (छाती) परवा<परवाह।

ठाहा के स्थान पर कोई दूसरा पाठ भी हो सकता है। तुम्ह हाथ—'तेरा' के स्थान पर षष्ठी विभक्ति में भी तुम का प्रयोग। खिया का—लिए (स्पर्श किये) हुए का।

चातिक हुआ है मुज दिल कहता है पीव पिव कर
सेवक हुआ हूं दायम सूं साईं मुज जिया का
तुज बात में करामत दिसता है मुज अचद लग
है तुज अता मजस थे ज काम बेरिया का
तुज सूर नर के आगं सूरिज दिसे ठसे का
तूं सूर कुल दिपक है माता पिता मया का
मशहूर है जगत में मुश्किलकुशा अली है
मुश्किल अगर दिसे तुध से नांवें सामिया का

साईं—स्वामी जिया—जीव करामत=करामात, चमत्कार। लग—तक सूर—बहादुर, ठसे का—ठप्पे का मया—माता, सामिया—स्वामी दायम—स्थायी शाश्वत। अचद—अनन्त अता—प्रदान मजस—मजलिस बेरिया—निराडंबर, मुश्किल कुशा—कठिनाइयों को दूर करने वाला।

चातिक<चातक साईं<स्वामी जिया<जीव करामत<करामात जे<यत् पु० कर्त्ता ब० व० 'ये ठप्पा<स्सा, मया<मामा<माता, नांवें<नाम सामिया<सामी<स्वामी।

मुज नित मुज जिया मुज बात तुज सूरनर—षष्ठी में उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष वाची सर्वनाम का "मुझ" और 'तुम' रूप। कहता है पीव पिव कर—दक्खिनी का बहु प्रचलित प्रयोग, 'कर' का प्रयोग पूर्वकालिक रूप में। है तुज अता—तुज का चतुर्थी में प्रयोग।

तूं शाह पुरहुनर है जेते इमम में बर है
निस दिन अछ अर्दा तुज असरार परविया का

'शाही हुमा है आशिक़ गुन नाँवें मुस्तफ़ा का
साया उसी च का है जिस सीस पर दया का

जेते—जितने धरतिया—पृथ्वी उसी च का—उसका ही जिस—उस, पुर हुनर—कार्य कुशल अयाँ—प्रकट अबरार—मेघ (फ़ा॰ ब॰ व॰)। मुर्ग़ंहा—इकरस मली।

जेते<जितने मिस<मिषा धरतिया<धरती जिस<तद् (पु॰ षष्ठी एक व॰)। सीस<शीर्ष।

उसी च का—उस+ही+च (मराठी 'च' 'ही' अर्थ का बोधक अव्यय)।

क़सीदा[1] दर मन्क़बते सोमाजदह
इमाम अलेहिमुस्सलाम

मुज दिल केरे मैदान पर जब इश्क़ के फ़ौजाँ चड़े
तब होस के रावत जिते मुक मोड़ हो बेसुद पड़े
जो इश्क़ के सुलतान का फ़रमान घट में आइया
ईलाम हो पुतल्याँ यू वो ख़िदमत अवल निस दिन खड़े
नादिर हुआ सुलतान यू अब बुद किया हैरान हो
अब इश्क़ के परधान मिल बुद सात सफ़ दर सफ़ खड़े
सीना मगर चुस्मात है जिस आप जिस में पाच है
जिससे निशान्याँ इश्क़ के जैसे सिकन्दर[2] च बड़े

रावत—सवार, वीर। जिते—जितने घट—हृदय ईलाम—इस्लाम पुतल्याँ—पुतली बुद—बुद्धि, परधान=मुखिया पाच—पंचरत्न इश्क़—प्रेम बेसुद—मूर्च्छित सुलतान—शासक फ़रमान—आदेश ख़िदमत—सेवा नादिर—असम्भव, सफ़ दरसफ़—पंक्ति व सीना—छाती चुस्मात—चमत्कार।

आइया<आया पुतल्याँ<पुतला ब॰ व बुद<बुद्धि परधान<प्रधान, सात<सप्त निशान्याँ<निशानियाँ।

केरा—षष्ठी कारक के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द जो बाद में 'के' विभक्ति का रूप धारण करता है।

गुल का बदन जिससे हुआ गुल होर भौंर जिस कर जिया
हूर के बदन में हो अप जैसे कुंदन पर नग जड़े

---

१ ईश्वर द्वारा रचित बारह इमामों की प्रशंसा में लिखी गई कविता।
२ सिकन्दर महान।

गर मुसहफस खोले जनम पा ना सके तिसका मरम
मुश्किल बड़ा है इश्क की जान वो ही जिस सर पड़े
जिस इश्क का सरताज है हर रात तिस पर ताज है
वराक भँवर हो नित फिरे मस्तान गरचे गड़गड़े
या तबा में शीरी बड़ तिस पर खबर होय इश्क का
माशूक की नित याद में ज्यूँ मीन जल बिन तड़फड़े

जिस ते=जिससे होर=और, भौर=भौंरा तिस कर=उसका पर्ने=पाप
कुन्न=सोना मरम=रहस्य पड़े=पठित होती है, तिस पर=उस पर, मस्ताम=
भाकाश गड़गड़े=गड़गड़ाहट करे, मुस=फूस बदन=शरीर, हर=प्रत्येक गर=यदि
मुसहफस=झूठी मामला वाला सर=सिर, सरताज=मुकुट, ताज=प्रकट स्पष्ट। गरचे=
यद्यपि तबा=स्वभाव शीरी=मधुर, खबर=खतरा भाशंका। माशूक=प्रेमिका।
भौर<भ्रमर, पर्ने=पाप ही कुन्न<कुंदन मरम<मर्म पड़े<पढ़ना क्रिया का
मुग्धाभिक कर भँवर<भ्रमर, नित<नित्य।
कर=सम्बन्ध कारक में प्रयुक्त होने वाला शब्द जो 'का' विभक्ति के रूप में
परिवर्तित हुआ।

जो इश्क की सूरत लिख्ना सीना सफ़ीना साफ कर
उसकी कलमकारी संगे नक्काश जग के गिर पड़े
मन इश्क में पावक हुआ दिल की अँगठी पूर कर
ता बिरह के भपराद ते धाग तिन में पड़ पड़े
माशूक की दूरी बन्न मन है जो जिसते इश्क में
मेह रूप दिलसा कर परस मुरझान को गत आखिर पड़े
आशिक पर साबित कदम माशूक की जब राह में
हिरदे में तब लागे मिठा माशूक गरचे सड़ पड़े

पावक=अग्नि अँगठी=अँगीठी तो बिरह=तेरे बिरह, पड़पड़े=चटचटाता
है, बन=तन जिसते=उससे मुरझाना=मुरझाना पड़े=पठित होता है, सूरत=आकृति
सीना=छाती सफ़ीना=साफ़ कलमकारी=चित्रकारी नक्काश=चित्रकार (नक्श)
योग=संसार साबित कदम=दृढ़ पग आशिक=प्रेमी माशूक=प्रेमिका गरचे=
यद्यपि।
लिख्ना<लिखना संगे<सगे पूर<पूर्ण ता<तब भपराध<भपराध बन<
बत रूप<भति हिरदे<हृदय मिन<मीन।

बिरहा दमन है दम में बियाकुल पड़ी नित दर पे
बाग हो टुट जा बन ते ज्यूँ पात पीसा हो ...

अचला उपर दम पाँव के एक थिर नहीं रखते कधीं
अस्पन्द हो आशिक़ देह सब विरही अगन धक तड़तड़े
गर इश्क़ के पंजाँ मने आ बूअली उलझे कधीं
ना खास धक इस गिरह कूँ बेताब हो अक्सर अड़े
गर कोइ नज़र कर इश्क़ की दर्पन में देखेगा नयन
साया दिसे आँजू का यूँ सल्तान मोती ज्यूँ सड़े

रसम के—रसने के थें—से बेकस—निस्सहाय विवश। पात—पता अचला=पृथ्वी, कधीं=कभी तड़तड़े—तड़तड़ की ध्वनि के साथ भुनना, आँजू=आँसू। ज़र्द=पीला अस्पन्द=नज़र उतारने के लिए प्रयुक्त होने वाला राई के समान काला दाना पंजाँ—पंजा (ब व) गिरह—गाँठ, बेताब=बेचैन, साया=छाया सल्तान=लोटता हुआ।

रसम<दंसन बियाकुल<व्याकुल निस<निरत पात<पत्ता कधीं<कदापि, अगन∠अग्नि।

बूअली=अबूअली सीना एक प्रसिद्ध मुस्लिम दार्शनिक।

है हुस्न के बाजार में खुम्मार खुमखाना होके
मद इश्क़ पी मनमस्त हो आशिक़ हमेशा गड़गड़े
सोंसार के दरयाव में ग़व्वास हो मक ध्यान सूँ
आशिक़ सदा मारे उड़ी तो हात कुच मोती चड़े
हर मक लगावे इश्क़ कईं गुज इश्क़ है उस शाह का
जिसके खड़ग का नाँवें सुन कुफ़्फ़ार जग के हड़बड़े
जिस शेर के दहशत थें गे धरती रहे वीरान में
सुरपाल सब तिस नाँवें सुन पाताल ज्याने जा दड़े

मद=सुरा गड़गड़े=गरजते हैं, दरियाव=दरिया समुद्र। उड़ी मारना=पानी में तैरने के लिए ऊपर से कूदना। हात चड़े=मिले, कईं—कहीं खड़ग—तलवार, हड़बड़े—भागे भयभीत हुए। सुरपाल—दिक्पाल दड़ना—घुसना,छिपना। हुस्न—सौन्दर्य खुम्मार—शराबी। खुमखाना=मदिरालय, ग़व्वास—गोताखोर, कुफ़्फ़ार—काफ़िर (ब व) दहशत—आतंक, धरता—सिंह, वीरान—जंगल।

सोंसार∠संसार, कुच∠कुछ, चड़े<चढ़े कईं∠कहीं खड़ग<खड्ग।

धुमधुम तुरँग की फेर थें गे रहे गाम के पग धूल कर
आकाश पर हाला दिसे जम मास का साया पड़े
सूरत तुरँग की देख कर अपसर हुए गुमनाम सब
चवस की चपलाई निरख चपला गगन में जा दड़े

जैसे तुरंग पर सार हो जब सफ़ ते भये हो चल्या ४१
मक हात होर मक वार सूं कई सब मर्द गिर गिर पड़
जब ते कोड़ा पिर्थी उपर फेर्या तुरंग सूं सार हो
हमवार हो रहे सुम तल डोंगर भये जे लड़बड़

तुरंग=घोड़ा फेर=चक्कर, बाव=हवा, धूज कर=काँप कर, अपछर=अप्सरा, सार हो=सवार हो डोंगर=पर्वत बरवर=ऊबड़ खाबड़ दुमदुर=दुमदार अली के घोड़े का नाम हाला=वृत्त और या सूरज के चारों ओर पड़ने वाला वृत्त। नाल=घोड़े के पाँव में जड़े जानेवाला लोहे का टुकड़ा सठ=पवित्र मदू=मधु, हमवार=समतल।

बाव<वायु, अपछर<अप्सरा सार<सवार, मख<लाख पिर्थी<पृथ्वी फेर्या<फेरिया चल्या<चलिया कइ<कई।

केता तुरंग चौपट तुरंग तब थीक सट्या सारे कुरंग
धमिम्न हो काढी उचा मुख में पकड़ दब हाय सड़
जब अस्प के सुम तल की गरद आकर पड़ी ददे उपर
जा मुख सती पानी निकस ज्यूं काठ के पुतल खड़
तुज हात के परताब ते ना खाब स्या मुगरिक जिते
आराम सट हार खाब सट सपने में नित उठ हड़बड़
तुज क़हर के माविन बने मम्पन्द हाय हासिन्‍ जिते
समघीर के पानी मन दुश्मन के सिर हैं बुड़बड़

केता=कितना सट्या=डाला तुरंग=इच्छा थीक=नाश काढी=घुप तिनका। उचा=उठा कर, रंस=पशु, मैती=से जिते=जितने हड़बड़ाना=घबराना, बने=निरद, बुड़बुड़=बुलबुल। अस्प=घोड़ा सुम=घोड़े के पाँव का निचला हिस्सा गरद=धूल खाब लाना=धैर्य रखना मुगरिक=बहुतेक पूरब। खाब=स्वप्न नींद। क़हर=क्रोध माविन=माम हासिन्‍=ईर्ष्यालु (हस्‍=हसिन्‍) समघीर=समशेर।

मुख∠मुख रंस∠रंस काठ∠काष्ठ परताब∠प्रताप।

हर न्सि में न्मिता मूर सूं फ़तहा जफ़र का पूर सूं
रज वज क सट पर-भार मव चकचक गेंवा दुश्मन मड़
गजर ब तेर मामन बकरो पमग नागुन छिपा
रंग ज्यूं हो तन वार मर सब उम्र दम मर पड़
जब रन में गौब भड़गा सूं फिर हाय दरगाह मग कूं
उग वार की भनकार ते भूनाग ब पन मार पड़

तुज हात जोरावर अदल पिरथी गढ़ा यक नास हो
सुन हैदरी मारे कूँ तुज मगस के मस्तक धड़धड़े

पूर—बाढ़ रज—राज्य बकबक—बकवास अर्थपूर्ण बातें। बड़े—बड़े भुगाग—नाग मंगल—एक ग्रह फुतही बफर—विजय संवर—तलवार, बबरो पलंग—सिंह र चीता नाखुन—नख दर्दे सर—परेशानी दहशत—भय मर्ग—मृत्यु, जोरावर—बेधवासी, हैदरी मारा—अली का उद्घोष।

रज ∠ राज ∠ राज्य।

जूझन्त करने तुज असल जेते सिमह बाँदे बते
बल टूट जा पग बाहु के ज्यूँ कौन्तेय होकर पड़े
मूसा असा हो सहस तुज भजकया है जब मैदान में
अफसूँगरा अफसूँ बिसर मुख बंद हो घर घर दड़े
तेजी तेरी शमशीर की रिपु गर देखे सोने में तो
मौहूम के नुक्ते ते कम कद लाक तुकड़े हो पड़े
सरकार तेरे हात की तासीर ते हुई सुर्ख रू
जिस दिन रगत में यू दिसे ज्यूँ लाल मखमल सा मढ़े
ज्यूँ सामने आ सफ धेरे मग़रूर हो ना मान तुम
यक हूँ बचन सुन कान में यक सफ पै सफ़ सफ हो पड़े
हो फ़ौज म्याने गर्म जो देख नजर भर पूर जिस
तन जल बसन्दर में सकल सिर कोलसा होकर पड़े

जूझन्त—युद्ध जूझना। बते—उतने कौन्तेय—अर्जुन बिसर—भूलकर, दड़े—छपे सोने में—सोते समय नींद में। रगत—खून जा मढ़े—ढाककर मढ़ा हो दूर कर बना—कोप भरे नैनों से देखना कोलसा—कोयला बसन्दर—आग सिमह—हथियार, सा असा—हजरत मूसा का चमत्कारपूर्ण दण्ड, अफसूँगर—जादूगर, अफसूँ—जादू, तासीर—गुण सुर्ख रू—लाल मुँह वाला, यशस्वी मौहूम—अपवित्र नुक्ता—बिन्दु, दूर। फ—पंक्ति मग़रूर—घमण्डी (गरूर—अहंकार)।

जूझन्त ∠ जूझना बाँदे ∠ बाँधे टूट ∠ छूट बिसर ∠ बिसमर, मुख ∠ मुख बड़े ∠ हना किया का भूतकालिक रूप, लाक ∠ लाख ∠ लक्ष रकत ∠ रगत ∠ रक्त। मैंडे ∠ डे ∠ मैंडे ∠ मंडल।

जब साफ़ कर बाँधे अमे यावे जिते भड़ दीन सूँ
तुज सैफ़ की पर काट ते ज्यूँ मुर्ग़ बिस्मिल फड़फड़े

कैसे हजारों पर एकंग आया तुरी जब तक कर
हो चल बिसल फ़ौजाँ सकल आपस में आपे हड़बड़
सारे जहाँ में नईं हुआ तुज सार का शमशीरजन
जिस पर किया यक वार तूँ सो यह बराबर हो पड़
दुलदुल का जब जाया है सब सिरपो ऊपर सुन कान में
बरी महाबल ज अब सुन छाड़ द दम हो सड़
तुज लड़ग की हार इल्म की तारीफ़ म क्यों कर सकूँ
हक़ की इनायत थ अधिक यूँ हो सिफ़त तुज हुए बड़

परकाट = कोट तलवार की काट। एकंग = एकाकी हड़बड़ाना = घबड़ाना सार का = समान सुन = कान देना। तेग़ = तलवार, बिस्मिल = घायल दुलदुल = हजरत अली के घोड़े का नाम इनायत = कृपा अनुगृहीत। हक़ = ईश्वर। अपे < थे।

फिर फिर हुआ लाज़िम मुज तारीफ़ कहना शाह का
जो मतल ए—सानी[1] किया मत शोक यूँ हर यक पड़
ना बोलन कूँ आनत थ तबा के था गड़बड़
तिर साक में ध्यान दिये जब दर्द में शह क पड़
जो काइ भया शह दर्द का था दस था सब दम का
तिस दम की तासीर त यक यक मनें कुर्बां पड़
गर तूँ तग़ाफ़ुल कुच करे आसान सब मुश्किल जिन
फ़िलहाल तूँ आसाँ करे मुश्किल जिन्हर कूच था पड़

यक = बहुत हर यक पड़े = हर कोई पर लाज़िम = आवश्यक तारीफ़ = प्रशंसा तबा = स्वभाव ध्यान = मधुर, दर्द = पागलपन, क़ुरबाँ = कुरबान न्यौछावर तग़ाफ़ुल = अनजान बनना आसाँ = आसान सरल।
मज < मति पड़े < पड़े, कब < कप, सिरसोर < सिसोर जिन्हर < जिधर।

तुज मुल्क का जब ते हुआ साया पर्या मुज सीस पर
टूटें सकल आराम हो ग़म क तेह सब कावड़
तुज नाँव की तासीर त मजबूम हो कर सपन
तासीर कर राग जतन मौताफ़ के मार बड़

1 मतल सानी = कविता के आरम्भ में समान तुक के दो चरण मतला कह लाता है। जब कविता बड़ी हो जाती है तो फिर नये मतला से किन्तु विषम तुक के साथ कविता प्रारंभ की जाती है।

अँधकार की फ़ौजाँ जिते मुष दिस ते सब भागे हैं तो
रोशन हुमा है घट सकल हुब गाँवें भ्रा जब चित चढ़े
बाँद्या मुकर्रर काफ़िए कई बार में सनमत बदल
ता रीझ कर तहसीं करे यू मनक़बत जो कोई पढ़े

हें हें—रोम रोम काकड़ा—ग्रन्थि (रुई का बिनोला—काकड़ा) मुल्क—मानस्थ, हुमा—मुस्लिम आख्यानों का एक पक्षी जिस पर इस पक्षी की छाया पड़ती है वह राजा बनता है। साया—छाया मक़बूल—स्वीकृत (क़बूल—मक़बूल) प्रिय। तावीज—तावीज गले या भुजदण्ड पर बाँधने के लिए लिखा गया मंत्र या यंत्र जिसे धातु के छोटे से पात्र में रखते हैं, औसाफ़—अच्छाइयाँ मुकर्रर—दूसरी बार, सनमत—चतुराई अलंकार (साहित्य)। तहसीन—प्रशंसा मनक़बत—हज़रत मुहम्मद से सम्बन्धित लोगों की प्रशंसा।

हें<रोम गाँवें<गाम, बलन<मल्ल अँधकार<अन्धकार, चढ़े<चढ़े बाँद्या<बाँधिया, रीझ<रीझ पढ़े<पढ़े।

दीपक लगा मुज तबा ने मूँड्या है जो कुम्हार सब
बारा इमामाँ[1] बिन कहीं देख्या नहीं दूजे बड़े
अब्बास अली अल मुर्तुजा जिस गाँवें है शेरे ख़ुदा
साजे सिफ़त उस लाफ़ता[2] जब तेग़ से दुलदुल चढ़े
दूजा हसन उस मुजतबा सरदार है सक़्लेन का
जिस सूर की खिदमत बदल हत जोड़ के हूराँ खड़े
तीजा हुसेने मुक्तदा मक़्बूल है करतार का
मरदूद हैं तो जग मने उस जात सूँ जो कोई लड़े

साजे—अच्छी लगती है शोभित होती है। सूर—वीर, करतार—ईश्वर, हत जोड़ के—हाथ जोड़ कर, तीजा—तीसरा। तबा—स्वभाव कुम्हार—बड़े लोग। शेरे ख़ुदा—ईश्वर का बहादुर, सक़्लेन—विश्व मक़्बूल—प्रिय मरदूद—तुच्छ निष्कासित। हूर—अप्सरा।

मूँड्या<मूँडिया<मूँडिया<मूँडा। सूर<शूर, हत<हस्त करतार<कर्तृ शब्द का कर्ताकारक का बहु वचन (कर्तार)।

कुम्मल इमामे आस्मी सो पीर पैनुम आबदीं
होवे हिदायत खल्क कूँ मिम्बर ऊपर जब जो चढ़े

---

१ बारह इमाम-शिया सम्प्रदाय के १२ सम्माननीय महापुरुष।
२ लाफ़ता—अरबी की एक कहावत जिसका अर्थ है हज़रत अली के अतिरिक्त किसी की बड़ाई नहीं अली की तलवार के समान किसी की तलवार नहीं।

चारो पहर दिन-रात मिल हित-चित लगा यक ध्यान सूँ
'शाही' विरद कर इश्क़ सूँ यू मनक़ब्बत दायम पड़े

विरद—मंत्र, साहिब ज़मां—अपने युग के अधिष्ठाता।

क़सीदा[1] ए हमले बमस बर तारीफ़े हौज व अलीवाद महल व बाग

दिसे मुज नयन में इस हौज पै चंदना यू निर्मल
चर्या है चांद नें ज्यू टीक अपस मुक के अगल
सफ़ाई देख के इस हौज की चंदर दायम
चले आकास पै अत शौक़ सू अमरित ते उबल
परियाँ अचरिज हो बर्गा देख के इस हौज के तईं
अछे अमरित से भर्या हौज यू समदुर ते कुशल
फ़व्वारे कल सूँ उछल बूँद सुहाते हैं चिते
दिसे सार्यां के नजर में ढले मोती ते निर्मल

दिसे—दिखाई देता है निर्मल—पवित्र टीक—टीका। अपस—अपने, अगस—आगे अमरित ते उबल—अमृत से ऊब कर, तंग आकर। बर्गां—बौली कल—मशीन सार्यां—सब दायम—सर्वदा।

निर्मल <निर्मल चर्या <चरिया मुक ∠मुख अत <अति अचरिज < अचरज <आश्चर्य। बर्गा <बावड़ा कहियाँ। समदुर <समुद्र सार्यां <सारियाँ ∠सारे।

मुज—दक्खिनी में 'मैं' सर्वनाम को द्वितीया तृतीया आदि विभक्तियों की तरह षष्ठी में भी 'मुज' (मुझ) आदेश होता है। पै—अधिकरण कारक की विभक्ति 'पर' का स्थानीय।

मछी रँग रँग अछे सब भात के इस हौज मने
दिसे नुक़रे के सरापा फिरे जद जल में सकल
मछी के जल्द सलकने कूँ दिठा भर के नजर
छर्नी ते जात गगन पर किया है जल ते निकल
मिठाई जग में हुई उसकी पक्कर ते पैदा
लगे यू नीर सबद म्याने शकर ते अफ़ज़ल
फ़व्वारा हौज में नादिर सुहावे रूप में यूँ
गोया ज्यूँ मास के ऊपर लिख्या है जल में कँवल

---

१ अलीवाद महल और बाग तथा हौज की प्रशंसा में लिखा गया लकारान्त क़सीदा।

मछी = मछली, रंग रंग = रंगबिरंगी कई जात के = कई प्रकार के समस = सम समी सरकर्ने = सरकने दिठा = दिखा तर्दा ते = तबसे कोत = प्रकाश मक्कर = निस्सरण करना। नुकरे = चाँदी का सरापा = सर्वांगिन, नबर = होंट, अफ़जल = श्रेष्ठ (फ़ज्ल) नादिर = अनुपम गोया = मानो।

समकना ∠ सरकना दिठा ∠ दृष्टि झिल्या ∠ झिलिया कँवल ∠ कमल।

जिने इस नीर कूँ देख्या सो किया कौक से यूँ
लगे आइने ते मतर यू नज़र में निरमल
जिने इस नीर कूँ चाख्या सो उठ्या बास के यूँ
गोया ज्यूँ शहदो लबन ते भर्या है हौज का नल
गया सैरत का सब रंग देखत फ़स का फ़त्तर
पड्या सब सिर हो सदा ते यू जमी पर निरमल
कवाया आठवाँ समदुर मर्मा जब नीर यूँ हौज
सबावार उसके मँगे है यू असीदाद महल

जिने = जिसने नीर = पानी मेतर = श्रेष्ठ फ़त्तर = पत्थर, सब सिर हो = नीचे सिर किये हुए, कवाया = प्रसिद्ध हुआ उसके मँगे = उसकी तुलना में कौक = आनन्द, शहदो लबन = शहद और दूध सैरत = एक रंगीन पत्थर, सबावार = धर्मकार्य, धर्मार्थ होने योग्य।

देख्या ∠ देखिया मेतर ∠ बहतर, निरमल ∠ निमल चाख्या ∠ चाखिया, उठ्या ∠ उठिया भर्या ∠ भरिया फ़त्तर ∠ पत्थर ∠ प्रस्तर। पड्या ∠ पडिया ∠ पड़ा। कवाया ∠ कहवाया, मँगे ∠ आगे।

जिने = 'जो' सर्वनाम के कर्त्ता कारक का रूप।

अता गज गज मूँ रचा जाके हुआ फ़रग यू जो
दिस इस फ़रग मूँ मिल परत हुए आठ अवल
पाया पूरा मध इस क़सर गया पाताल तलक
ताक विसरा होवे मेराज इसी वह के अगम
सुमन्दी सबर का मयस न हा ताक न भी जिसे
जन्नतूँ[1] जिस स माम्या क यू सबर है नवम

[1] बीजापुर में बना हुआ आदिलशाही बादशाहों का राजप्रासाद।
[2] जन्नतूँ = अफ़लातून यूनान का प्रसिद्ध दार्शनिक-ज्ञानी।

सवा सुरिज ने मँग भूर इसी क़स्र भँगे
जब से दीवार पे सनभस्त सूँ दिठा है चार हुम

गज गज—हाथी हाथी जाके हुमा—जाकर हुमा अरत—पृथ्वी अचल—पर्वत पाया—नींव उसक—छत सेलत—देखना, अम्बर—आकाश, नवल—नया दिठा—दिखाई दिया क़स्र—महल मेराज—उच्च पद पोह—देहली बुलन्दी—ऊँचाई, सक़फ़—छत, फ़िक्र—चिन्तन जरहुस < बिन्दु स्वर्णाभ ।

चता ∠ चितना अरत ∠ धरित्री ।

ताके किसरा—इस्लाम पूर्व ईरान का एक नगर इस नगर में एक महल उसकी एक बड़ी ताक थी हज़रत मुहम्मद के जन्म के अवसर पर यह ताक गिर गई ।

हर यक यक ताक़ अछे ताक़ अपस रूप मने
'मानी'[1] मन्दर के लिख्या मेज सूँ जिस पर जदवल
भरे थे जाम के गुल कर सारे मजर के ऊपर
न अछे सूर भी इस सम जामे[2] जम से यूँ भिझल
सफ़ा सन्दल के झिला जोग दे मंबर के उपर
अगर चन्दन के भरे पात झरोके के अगल
दरीचा खोल मिझाते दिसाये पास सू यू
गोया मासिंग ववल पाके छबीसी नार पेंचल

अपस रूप मने—अपने रूप में मन्दर—महल अबर—सुराही झिला जोग दे—योग्य रूप से चमक कर, पात—पत्ता सुर—सूर्य इस सम—इसके सामने ताक़—कमान मेज—चित्र फलक जदवल—चित्र का हाशिया जाम—सुरा मंबर—वृक्ष सफ़ा—पंक्ति, स्वच्छ । सन्दल—चन्दन गुल—फूल ।

मन्दर ∠ मन्दिर, पात ∠ पत्ता ।

मुबारक माम थे थीथे हैं सफ़ा सोफ़ा यूँ
अछे तिस छाँवें में दायम सारे अरवावे दवल
सारे खुशफ़क्त अछें पाँवाँ सरो शमशाद के सम
अछे जोवीना यूँ दालान पे तूबा का सकल
तनब्बी तन कूँ सँवारी सारी परभस मने यूँ
गिलावा कांद पे सारा गोया सीपे हैं सँदल

१　मानी—एक पौराणिक चमत्कार पूर्ण देवदूत चित्रकार ।

२　जमशीद का प्याला—पौराणिक कथा के अनुसार जमशीद के पास एक प्याला था जिस में उसे संसार की घटनाएँ दिखाई देती थीं ।

कभी इस भरत पे नईं हुई है इमारत भी कहीं
कधीं कोतम[1] नहीं देख्या है सपन में यू महल

भाव के — भाव से अन्दाज से ढंग से। तिस छाँव में — उस छाया में थाँबा — खंभा, परमल — सुगन्धित भींत — दीवार, गिलाव — मिट्टी का पुताव। मुबारक — शुभ, सफा — पंक्ति सोफा — ऊँचा आसन अरकाने दवल — धनी लोग, सुपारूर — अच्छी कद के सरो शमशाद — सरो और शमशाद के पेड़। तूबा — स्वर्ग का एक वृक्ष दरीची — खिड़की, संदल — चंदन।

इस्म होर जिस्म ते रौशन यू इमारत है सदा
भाव नित सूर यू हर सुबह कूँ तहवील बदल
सूर पाया है शरफ आके इमारत के ऊपर
के यू पा नाँवे अली का हुआ है बुर्ज हमल
रश्मा सूरिज ने हुवा कर देखो यू रात के तईं
दिखाने नूर अपस का किया है दीस दुगल
हुआ परकास जो दिनकर दिखाया मुक का झलक
मार्यां ते दीस के भगे होती है रात अचल

सूर — सूरज दीस — दिन मार्यां ते — मार से भंगे — भागे दुगल — दुगनी दिनकर — सूर्य, अचल — ओझल अदृश्य। इस्म — नाम जिस्म — शरीर, तहवील — अधिकार में होना शरफ — बड़प्पन नूर — प्रकाश।

रश्मा ∠ रश्मिया, रकम ∠ रचन ∠ रचम। परकास ∠ प्रकाश, अमल ∠ आम्ल।

होवे दिनकर के सबब ते बड़ाई दीस की सब
सबे कहते यूँ तदी ते छबीली रात चंचल
देखो जिस भाँत सूँ ध्यानी कूँ संवार्या है गगन
जूही व गुल कूँ किया जम लगाया करके मँदल
जिस दम जिन की जमाअत अंग यूँ रात गया
गोया ज्यूँ आग के ऊपर आता है मोम पिगल
जमों व गुल बिछाने पे तजम्मुल यूँ अप
नया कर रात कूँ गहनो बठा है नीम चकल

१ कोतम — बेमार

दिनकर—सूर्य दीस—दिन तवाँ ते—तब से जुवी—जूही, सर्प—स्वर्ण कमी—कम हेम। सबब—कारन संदेस—चदन असासत—धान, दजम्मुल—सुन्दर, धानदार चकल—चौड़ा।

दीस ∠ दिवस, भाँत ∠ भाँति सँवास्यी ∠ सँवरिया ∠ सँवारा जुवी ∠ जही, सँदल ∠ चंदन पिगल ∠ पिघल।

दिसाये दीस के आगे सियाही रात की यूँ
योड़ा ज्यूँ साफ़ नयन में पैने है सार कजल
बढ़ावा दीस का देखत महा बत दिस में पकड़
देखो यू रात हमद आ जाती है जल्द निकल
दिन के मैदान पे अब सूर ते देख्या है झलक
रात की बात में पिंजा है इसी दुक ते खलल
तोल्या है सूर ने दिन कूँ लगा आकास के बास
तिस में इस रात के बट कूँ धर्या पासंग के बदल

सियाही—कालिख, अन्धकार। पैने है—पहनती है कजल—काजल बढ़ावा—वृद्धि। महा बत—बड़ी बात, सूर—सूर्य बास—बासी बट—बाट तिस में—उसमें, हसद—ईर्ष्या खलल—बाधा।

पैने है ∠ पहने है, कजल ∠ कज्जल बत ∠ बात दुक ∠ दुख ∠ दुःख। तोल्या ∠ तोलिया धर्या ∠ धरिया।

देखे अब दीस के गोखो कूँ बना आता है
सिये है रात असकी लाजे है दिन के अगल
उसी के दुक ते अभी रात में होसर से झलक
देखो यू दीस लटकता आता समदुर सा उथल
सूर कचन के धरीने त रखा दिन कूँ सँवर
बड़ाई देक के तिसकी हुई है रात निबल
लगी छिजने कूँ रयन दर्द थे इस दीस भोंगे
चँदा सो हात का नस हो लग्या छाती पे कुबल

लाजे है—लज्जित होती है दिन के अगल—दिन के सामने होसर—बिम सँवर—सँवार कर, निबल—दुर्बल छिजना—क्षीण होना कुबल—निर्बल क्षीण। गोखो—घर बना—बर, असकी—शत्रु, धरीना—सुनहरापन।

दुक ∠ दुख ∠ दुःख। समदुर ∠ समुद्र देक ∠ देख निबल ∠ नि—बल छिजना ∠ छीजना, चँदा ∠ चंदा ∠ चन्द्र लग्या ∠ लगिया ∠ लगा।

मुक़द्दम दीस व निस का दर्या कम जियाजत के कर
बाल्या हूँ यहाँ से में तारीफ़ कुछेक बाग़ बदल
गुनाबों गुल नें दिखाया अछे मुख लोल अपें
दखो इस फूल ते है बाग़ मनें सब परमल
चँबली, जाई व जुई दिस उडगन के नमन
चँपे के झाड़ पे फूलाँ यू लगे ज्यूँ मशअल
दिखाव ताज सुदर्ग कन धात्रे मरवान खजिल
लिया है हेम का रंग सब रँगीला यू मखमल

निस—रात बाग़ मन—बाग में, परमल—सुगन्धि, जाइ व जुई—जाति पुष्प और जुही उडगन—नक्षत्रगन नमन—समान, चपा—चंपा झाड़ पे—पेड़ पर, हेम—स्वर्ण मुक़द्दम—आगे दर्या—वर्णन कम-जियाजत—कम ज्यादा मशअल—मशाल, धात्रे मरवान—मूँगे का दानी ख़जिल—लज्जित।

परमल ∠ परिमल चँबेली ∠ चमेली जाई ∠ जाइ ∠ जाति जुई ∠ जूही उडगन ∠ उडगण चँपे के ∠ चंपे के।

भरे हैं बाग़ के तख़्ते गुलाँ हर जिन्स के बहु
कुसुमन रेवँती तिस में यू दिखावे चंचल
हुए हैं काम के बानाँ सो मदनबान के फौज
जिसमें खुशबास से केतुक यू हुआ है पंचम
खड़ा है दोम हा दायम मँजा कर बाग़ के ताईं
गुलनजर पात के हाथाँ रँगा कर रंग में सारा
गवकुन्दा फूल ते चोरी भिन्न कई भाँत का रंग
चितारे भा यू चितर सक के यकें तिस के अगन

रेवँती—रैवती काम—कामदेव मदनबान—एक फूल मन्मथदत्त। फौज—पंखुड़ी केतुक—केतकी पंचम—चंचल दाम—एक पुष्प (?) मँजा—पूजा (?) चंदन चितारे—चित्रित किया चितर—चित्र हर भिन्न—विविध प्रकार कुसुमन—विराज रूप से गवकुन्दा—एक पुष्प रजनी गन्धा।

रू < रूई रेवती < रेवँती केतुक < केतुका पंचम < चंचल चितर < चित्र।

सारा तन्बीह गुलाँ की पूरी हुई जा यू तमाम
फर्शों यू बाग़ के तारीफ़ करें सब मुजमल
देखा कारीगरी जिस मौस की बीना है बहार
मन के जग में भनभन यूँ मयाँ है पर हन

खुश नजर अब की खूबी दिसे यक तन में दो रंग
कहरुबा सारका मीमा मीमा है ज्यू के पबस
मिठाई देक के अंजीर के फीका हो सदा
लाखों ते मोम के परदे में छिपा जाके असल

कीता है—किया है अब—आम सारका—समान, तशबीह—उपमा, मुख्तसर—संक्षेप में, बहार—बसन्त ऋतु। पर्ख—पाम, वर्तन। बरहम—तरल सोना कहरुबा—एक तरह का पीला पत्थर, मीमा मीमा—थोड़ा थोड़ा पबस—(?), असल—शहद।

अछे अमरित फलाँ इस बाग में अमरित के सिफ़त
साया गर तिस का पडे तो होवे शीरीं हनजल
सारे अंगूर की बेलाँ में पके यूँ झोंपे
मिठाई सेस कूँ अँपडे पडे गर मुईं पे पिगल
दिसे शरबत के यू कूजे जिते नारियल के कपर
मीठे कई नीर के चश्मे ते भर्या है मुकल
नारंगी रंग का हवस धर लगी था बाग मने
रँगाई तन कूँ सरासर देखो रंग रस में सकल

अमरित फल—एक फल जिसका परे—उसका पड़े सेस—शेष नाग अँपड़े—प्राप्त होती है, मुईं—पृथ्वी नारियल के कपर—नारियल का खप्पर, मुकल—ताड़ी के पेड़ पर लगने वाला गोलाकार फल, सिफ़त—विशेषता, गुण। साया—छाया शीरी—मिठास, हनजल—इन्द्रायण का फल झोंपे—गुच्छे, कूजा—प्याला हवस—इच्छा।

अमरित <अमृत सेस <शेष मुईं <भूमि, पिगल <पिघल कपर <खप्पर।

चरौना पात का सारा दिसावे पाच का सब
दिसे कमरक यू शजर पर सो सोने का हैकल
देखो इस बन की घटा त न दिसे धूप कहीं
दिसावें पाच के तख्ते सारे चमनाँ यू निश्चल
हरेक यक कालवा पानी का भर्या है सो गुलाब
खाक इस बाग के फूलाँ ते हुई है परमल
फलाँ-फूलाँ सूँ इमारत की हुई जब यू सिफ़त
भरे मानाँ सूँ यकायक यूँ दिसावे अफ़ज़ल

पात—पत्ता पाँच=पंच रत्न कमरक—एक फल, चमन—वाटिका निश्चल—स्वच्छ, निर्मल। परमल—सुगन्धित मानाँ—अर्थ कालवा—नाला नहर। चरौना—गहना शजर—पेड़ हैकल—हँसली, अफ़ज़ल—श्रेष्ठ।

पात<पत्र पाँच<पंच (पंच रत्न)। निभन<निम्न भर्या<भरिया<भरा परमल<परिमल मानीं<माने।

पाच—सोना, हीरा नीलम, लाल मोती।

दिवाने तखत की कुव्वत 'शाही' इस महर मने
बँध्या हर बैत में कई लफ्ज यू सनमत के नवल
जान हार दिल थ उथा हात दुआ मँगता है
ता अछे अमन में सुख चैन ते यू खल्क सकल
जा लगन नूर सूँ दिनकर अछे होर चाँद व गगन
जा लगन जुहरा है जाहिर अछे होर पीर जुहल
मुश्तरी साद है जो लगन व अतारिद है दबीर
जा लगन पाँचवें आकास पे दिसता है मँगल
ता लगन रात-दिन व पहर घड़ी अदन मने
बजा आनंद सूँ इस घर में सदा ताल-मँदल

नवल—नवीन उथा—उठा कर, ता अछे—जिससे रहे, जो लगन—जब तक कुव्वत—शक्ति, महर—प्रहर बैत—घर, छन्द। जुहरा—शुक्र, जाहिर—प्रकट पीर—पूज्य व्यक्ति बूढ़ा। जुहल—शनि मुश्तरी—बृहस्पति साद—शुभ अतारिद—बुध, दबीर—लिपिक ताल-मँदल—ताल और मँदल अदन—उत्सव।

बँध्या<बँधिया उथा<उथा कर, उथाना—उठाना।

क़सीद ए'-बाग दर बाग

लगी सर्दी का लगना है यू बन नवे गुलाँ सूँ भर्या है सारा
भरा मनोहर चमन की बेलाँ फूल हैं फूलाँ अछे हजारा
वहाँ का मामी पिरम का पानी नयन नदयाँ में सदा फिरावे
जिन अम्माँ चमन के ऊपर गिम-झूमे हार करें झकारा
उन्हीं थ बन में सुघन समामी अनक छन्दों अपस बनाई
परी को लमी, हुमन की मामी भरा झुन को बंधा दाम्हारा
हरे चंचल में सुंदर का मुख यूँ चंदर गगन जिस चमक दिस ज्यूँ
हँसी में लिसक चपर दिस यूँ हुआ चाक्क जिस मुबा का पारा

१ यह किसी अन्य में लिखा हुआ कसीदा सोलह पंक्तियों में लिखा दान बाबा छन्द।

अचंबा—आश्चर्य नवा—नवीन, हकार—आकृति मेंड्यां—अटारियां भकारा—भकोले मेती हैं उसी च—उसी सुघन—युवती अमोली—बहुमूल्य छन्द—छल अपस—अपने को परी की टैसी—अप्सरा जैसी दोल्हारा—मूला अघर—होंट, सरो—एक पेड़, सनोवर—एक पेड़, समन—चमेली अल्लाँ—झुलहनें धफक—धप्पा सवा—ठगी हुआ, पारा—टुकड़ा।

अचंबा<अचंभा लग्या<लगिया मर्या<मरिया हकारा<आकारा<आकार। पिरम<प्रेम मेंड्यां<मेंडियां<मेंडी (म अ०)। दोल्हारा<दोला।

सुघर नर्सों कूँ चंदर ने देख्या बकस हुआ तब अमास में छप
खबर यू सुनकर गवा गया पग लिया है कोना क़ुतुब का तारा
नजीक आकर कह्या सुघन सूँ करम हमन पर करो पियारी
सुनी सुघन बस घो उठी तड़क कर कही करूँगी इता पुकारा
कह्या यता क्या गुसा है मुज पर मुजे तुजे बस लम्या है सौंचल
पिरम रसी कर कमन्द डालूँ गुमान सिर थे करूँ उतारा
अँचल पकड़ कर मदन नर्सों सूँ सुँदर के जोबन मतर लिख्या जब
गई सितर कर फुली वो मन में कही सू मन का मेरा पियारा

बकस हुआ—ओझल हुआ, अमास—अमावस्या छप—छिपकर गँवा गया पग—पाँव चले गये पंगु बन गया। क़ुतुब का तारा—ध्रुव नक्षत्र नजीक—निकट हमन पर—हम पर, तड़क कर—गरज कर इता—इतना यता—इतना, सौंचल—चंचल सितरना—इतराना सिर थे—सिर से मदन—कामदेव जोबन—स्तन मतर—मंत्र करम—दया कमन्द—रस्सी गुमान—घमण्ड।

चंदर<चंद्र बकस<ओझल अमास<अमावस्या छप<छिप नजीक<नजदीक, कह्या<कहिया सौंचल<संचल<चंचल पिरम<प्रेम, मतर<मंत्र लिख्या <लिखिया।

लगी मुहब्बत भुज-उसे यूँ अकत कुँदन सूँ जड़ गया ज्यूँ
वहाँ सूँ वाहाँ गले मिला कर करे अपस ते गुसे कूँ मारा
मदन की माती अरत कूँ पाती फहम करारे हुआ उसे जब
सिने के धुरजक मने जतन सूँ रखे रतन कर पिरम हमारा
सखी सूँ बोली पिया बुलाना मँदिर में मेरे मँदिर सँवारो
कदम व केसर गुलाब मिला कर अँगन पे सारा छटो फुवारा
सजन सूँ दिल यूँ लग्या है मेरा चकोर चंदर रहे जनम कूँ
पिया सूँ मिलते हुई खुशी मुज खुसिन का दिल सब हुआ अवारा

وہیچ چمن میں موں دھن آموں لے ایک چھند سوں اپنی
پری نے تیں حسن کی آلی سد کھلے واں بندھا دو ہارا
ہری اجل میں سندر و میں خندر کلنج جھملدی
ہتے میں تلے ادھر دیے یوں ہوا استغراق مل صاکا یا
مندر کھو ملوں خندنے ذیلمیا رجھمل ہوا سا ما خس
خبر نو سکن لتو آلیا ما نے لیا ہے کو نا قطن کا تارا

उसी के बन में मु धन ममार्गी अनेक छन्दों अपन बनाई ।
परी का नर्मी हुस्न की माला मन कूरे की बंधा दोम्हारा ।
हरे पवन में सुन्दरों मूक यूं मदर गगन बिच झमक दिस ज्यूं ।
हमी में तिमक अधर दिस यू हुआ गऊक मिस सबा का पारन ।

मन: मरलों के अन्दर न देख्या, कम्लन हुआ सब ममाम्र में एर ।
गवर मूं मुनकर अंका ग्या पग पिया है बोना कुतुब का तारा ।

पृष्ठ २२ और २२

बख्त—भाग्य नव। कुंदन—सोना, बहो—बाँह, अपसते—अपने से, अवम—कामदेव मातो—मस्त, अरत—अर्थ तात्पर्य, सिना—छाती, कदम—कदम्ब, अंबन—यौवन सगे—साथी, फुवारा—फुहारा जूँ—ज्यूँ जिस तरह। बुफिन—सीखनें अवारा—विनष्ट, फहम—विवेक करार—शान्ति आराम। दुरबक—पेटी, मुश्क—कस्तूरी।

बहो < बाँह (अ० अ०) सिना < सीना, कदम < कदम्ब।

बंध्या था कोकस बुलंद इमारत छजे थे अनवर नयन सिफत के
अहन के चारो तरफ चमन में अगर चंदन का अथा कतारा
भ्रमर के जामाँ अगर दिसे अम मनम गँवा कर जनम रहे सम
गगन सिपी कर सुरज का जल भर चितर लिख्या पर चतुर चितारा
बँधाई मेहँदी रँगाई चूनरी निहाल फानूस सँवारे चौंधर
रँगी पताँ सूँ सुनी कताँ दे अर्श के ऊपर लगा फरारा
जरी बिछाना बिछा सदर कर हिलाल चदर अथा अँगन बिच
मँदिर में अपन मुजे सिखा कर गुले व मोती करे निसारा

छजा—छज्जा, अथा—था कतारा—पंक्ति सजर—सुराही, अगर—एक सुगन्धित द्रव्य अम—अमधीर, चिरकालीन। मनम—मनमथ चौंधर—चारों ओर, चितारा—चित्रकार, पताँ—पताकाएँ, सुना कताँ—स्वर्ण के टुकड़े अर्श—पर्यंक अथा—था, गुले व मोती—फूल और मोती निसारा—न्यौछावर, कोकस—मेमार, बुलंद—ऊँचा अनवर—प्रकाशमान अहन—आँगन, जामाँ—वेष, अम—झुका हुआ, निहाल—प्यार, जरी—सुनहरा, हिलाल—द्वितीया का चन्द्रमा।

छजा < छज्जा चितारा < चित्रकार, निसारा < निसार।

मोहन पिया जब रहे अनंद में अनद अकाने कियाँ अघावे
सुधन की मनकियाँ अखियाँ वो मनकियाँ सखियाँ पसाने कनर कदारा
अपी अरामश हुई महल में इंदर ने देखन नमन किया सन
रँभा ते चती हुसन में मासी बँधी अपस तो विरद अपारा
जिते बहुर में बहर मिठा यू बने है मुश्किल अगर यँचे कोई
बँध्या है शाही थेंअर यू ताबा मदद हुए जब इमाम बारा

अघावे—अंबन मीत, मनकियाँ—पहुँसियाँ, अखियाँ—आँ मनकियाँ—छोटी पसाने—पास विस्तार। कनरकदारा—दो राम अपी—इतनी इंदर—इन्द्र रँभा—रंभा, एक अप्सरा। चती—जितनी बँधी मासी—सहेली। विरद—विरद यश। अपारा—अपार, यँचे कोई—यदि कोई पा बनाव अरामश—सजावट बहर—छन्द बने—कठिन, इमाम बारा—शिया सम्प्रदाय के १२ इमाम, जो अत्यन्त आदरणीय माने जाते हैं।

पिया <पिव <प्रिय अनंद <आनंद अखियाँ <अखी इंदर <इन्द्र रैना <रै
मिठा <मीठा ।

(१) अहल्या के शाप के कारण इन्द्र सहस्र लिंग हो गये थे किन्तु उनके लिंग 'नेत्र' बन गये । तभी से इन्द्र सहस्राक्ष कहलाते हैं ।

खैबरनामा

अवल हक की तौहीद सूँ कर सुखन
पिछें सुख अदा सू बयाँ कर वचन
तुझे है सज़ावार हम्दो सना
तेरे हुक्म सू है नन्हा होर बड़ा
करीमा करम सू यू आलम किया
नबियाँ होर वलियाँ कूँ आरफ तूँ दिया
खुसूसन नबियाँ म रिसालत पनाह
जो कोइ नावँ लेवे तो जावे गुनाह
अली ए वली पेशवा वो इमाम
सखावत शुजाअत है जिस पर तमाम

नन्हा—छोटा, नबियाँ—नबी का (ब व) वलियाँ—वली (ब व॰) हक—ईश्व
अवल—प्रथम, सुखन—वचन सुख अदा—बात जाहिर करने वाला, बयाँ—वर्ण
सज़ावार—शोभास्पद, हम्दोसना—ईश्वर स्तुति करीम—दयालु, करम—कृ
आलम—संसार, नबी—ईश्वर का संदेशवाहक वली—सिद्ध पहुँचा हुआ सं
खुसूसन—विशेष रूप से, रिसालत पनाह—हज़रत मुहम्मद, गुनाह—अपराध, पेशवा
नेता, इमाम—धार्मिक मुखिया, मुखिया । सखावत—उदारता, तमाम—पूर्ण ।

अवल <अव्वल, नहा <नहना ।

खैबरनामा —अरब में खैबर नामक स्थान जिसे हज़रत अली ने जीता था ।

तरी दास्त मेंयस्याँ कहे है किसे
खुदा के खजाने की कोम्याँ दिसे
सुना एक किस्सा सुनों जग का
के वो जंग था दीन के नंग का
अथा एक खैबर का किस्सऽऽ विकस
पड़े मक्कासीं पर अगस थे अवल

पथर पे सुरज के नजर से पड़े
पड़े सल्ग यो छव नन्हे होर बड़े
सुरज होर तटी कन कुवस थी सुरम
अँपड़ता न था वहाँ पवन का तुरँग

अँपड़्या = अँपुसियाँ, कौस्याँ = तासियाँ, बिकस = बेडब, मजकम = सुसंबार, बड़े = बनाये गए, कन = निकट, कुवस = कठिन, अपड़ना = प्राप्त होना, मिलना। तुरँग = घोड़ा रास्त = सीधा, कजा = मौत, संग = सख्त।

अँपड़्याँ < अपसियाँ < अँपुसियाँ < अँपुष। कौस्याँ < कौसियाँ < कौस।

अथा कोट ऐसा कुवस माग का
अँपड़ता न था आसरा लाग का
उमक उस अँटक का न कोई कह सके
फिकर के तराज़ू प अटके थके
अथा कुफ्र का उस जमीं पर थना
न सकता अथा कोई उनका बना
रिसालत पनाह होर सहाबी मिले
मजा की मुहिम पर कदम हो चले
न ये फ़ौज में शाह दुलदुल सवार
अथा शाह के सेनों कूँ पौक्न अजार

अथा = था, कुवस = कठिन, माग = रास्ता, लाग = मकान पर चढ़ने के लिए पत्थर आदि का मार्ग, बटाना = बांधना पौक्न = निरंतर, उमक = गहराई, फ़िकर = चिन्तन, मजा = लड़ाई मुहिम = अभियान शाह दुलदुल सवार = हज़रत अली शाह = बादशाह (अली)। अजार = पीड़ा।

पौक्न < प्रतिदिन।

सहाबी किते मान कर पद, चले
न ले सक कठिन कोट फिर कर चले
सहाबी जमा कर रसूल खुदा
कहे यूँ गुनाह में कर्मा खुदा
के जिस मद पर महर करतार का
वो आलम है पूरा मेरे प्यार का

उसे देऊँगा यू जफ़र का अलम
के जिस हात में है खडग होर क़लम
पयम्बर अली कूँ बुला कर अँगे
खडे रह खुदा कन दुआ यूँ मँगे

सहाबी — हज़रत मुहम्मद के साथी प्रमु प्रमुत्व । आत कर — आकर, पत्र — पत्रे, फिर कर चले — लौट चले, मेहरे करतार — ईश्वर की दया, खडग — तलवार, खुदा कन — ईश्वर के पास, रसूले खुदा = ईश्वर के सन्देश वाहक, दुआइ — प्रात काम, आलम — संसार, जफ़र — विजय, अलम — ध्वजा पयंबर = पैगंबर, ईश्वर का सन्देशवाहक ।
करतार < कर्त्तार ।

न होय तुज गरम होर सरद का अजाब
उसी वक्त हक़ कन हुआ मुस्तजाब
मुमाबे मुबारक अपस हात सूँ
पिन्हाये नयन में अली शाह कूँ
हुई नैन रोशनतर अज आफ़ताब
के ज्यूँ अज आकर दिसे माहताब
अलम हात में दे पिन्हा कर जिरह
जिरह के बँधी हात सूँ दे गिरह
सिलह जाहरी बातिनी सूँ सँवार
इनायत किये शाह कूँ जुल्फ़ेक़ार

हक कन — ईश्वर के निकट पिन्हाये — पहनाया, प्रवेश कराया, अजाब — दुःख, मुस्तजाब — स्वीकृत होना, मुमाबे मुबारक — शुभ थूक अज = से, माफ़ताब — सूर्य अज — आसम, माहताब — चाँद, अलम — ध्वजा, जिरह — कवच गिरह — गाँठ, सिलह — शस्त्र जाहिरी — दिखाने के, बातिनी — गुप्त जुल्फ़ेक़ार — हज़रत अली की तलवार ।
पिन्हाये > पिन्हा ।

रवाना हुए जग के नामदार
वो शाहे विलायत अधिक कामगार
चले शह वहीं कुफ़र कूँ तोड़ने
उथा सट फ़त्तर के बुतों फोड़ने
कँगूरे सिपर कर यहूदी जिते
खडे मौज (?) पर हो गगन सूँ तिते

उन्होंमें यहूदी अथा एक कलाँ
कहा धाह सूँ कर नाँवें मुज पर अयाँ
दाहुदा कहे नाँवें है मुज अली
अजल में किये हैं मुझे महबली

कामगार=कार्यशील, उथा=उठाकर, झट=फेंक कर, जिते=जितने, फौज=(?), तिते=उतने, महबली=महाशक्तिशाली, जंग=युद्ध नामदार=प्रसिद्ध, विलायत=वली (मुस्त) का पद, कुफर=इस्लाम पर विश्वास न रखने वाले की धारणा, सिपर=ढाल, मनम=अहंकार, कलाँ=बड़ा, अयाँ=प्रकट, अजल=सृष्टि के आरम्भ से ।

फत्तर<प्रस्तर, कहा<महिमा, महबली<महाबली ।

यहूदी अथा इल्म सूँ मोतबर
दिया उन अपस लोग कूँ यूँ खबर
के यू मर्द क़िला-ए कूँ लेवेगा आज
उठ्ठ सूँ यहूदयाँ की खोवेगा लाज !
कहा तो यहूदयाँ सूँ यूँ कर पिता
के बाहर निकल कर करो तुम इता
क़िला थें निकल हारिस आया अगल
महका शीश सीदा हुआ जूँ मँगल
सहाकी उपर आ गया जोरे जंग
हुई ता सहामा अपस ग्याने दंग

अपस लोग=अपने लोग आत्मीयजन । क़िल ए कू=दुर्ग का पिता=सावधान करके इता=इतना अगल=आगे महका=तलवार, मँगल=मंगल (ग्रह) । अपस ग्याने=अपने में । इल्म=ज्ञान मोतबर=श्रेष्ठ, हारिस=एक यहूदी, जोरे जंग=युद्ध का जोश ।

यहूदयाँ<यहूदी (ब० व०), महका<माहा सीस<सीधा ।

वहीं शाह मर्दाँ को उथा कर फरंग
गरम हो पठाये अपस अदिरंग
निघ उस यहूदी प यक बार दाट
गया यो यहूदा जहन्नुम को बाट

हुआ चाक महूदी का इस भाँत सीस
के ज्यू चीर रखता क़लम खुशनवीस
जो मरहूब देख्या बिरादर के ताईं
कह्या वो गया तो मरूँगा च मईं
जिरह बाँद दुहरी मेंग्या दो फ़रंग
रख्या दिल में अब शाह सूँ करने भरंग

उचाकर—उठाकर, गरम हो—क्रोध में आकर पठाये—भेजे, काट—काट कर जमकर, बाट—रास्ता मरूँगा च—मरूँगा ही चाहे मईं—मरपु मव, फ़रंग—तलवार बेदरिंग—निर्भ्रम महलम—मरक चाक हुआ—फट गया, खुशनवीस—सुलेखक, मरहूब—एक महूदी बिरादर—भाई भरंग—अकेला।

देख्या <देखिया।

सिया हात भाला जो था तीन मन
शिताबी सूँ आकर खड़ा बीच रन
जो देख्या नजर भर अहूंशा का मूँ
वो बोल्या सुखन यू अपस बूज सूँ
के सपने में देख्या हूँ मैं रात शेर
किया फाड़ पंजे सूँ अपस कूँ जेर
वही शेर दिसता है मुज आज यो
मुसे यू करेगा मगर भड़ कूँ दो
अहूंशा ने मरहूब कूँ बेगी वलक
दो धक कर सटे सीस थें पा तलक

शिताबी सूँ—शीघ्रता से, मूँ—मुँह, अपस बूज सूँ—अपनी बुद्धि से, अपस कूँ जेर—अपने को पराजित दिसता है—दिखाई देता है, दो धक कर सटे—दो टुकड़े करके डाले, सीस थें पा तलक—सिर से पाँव तक, सुखन—वचन, मरहूब—एक महूदी का नाम। धक करना—टुकड़े करना।

देख्या <देखिया।

गया जीव मरहूब का हारिस कने
दो धड़ हो बराबर अकर कूए मने
तेरा खड़ग दिन में सदा सूर है
तो ददे तेरे हात सूँ चूर है

यहूदियों का सरकर मंग्या न्हाटने
शहसा उनन कूँ लगे काटने
पड़ कइ यहूदी किते सार के
हुए कोलसे वा नरक नार के
मुकाबिल न हो सक शहन सूँ मिला
यहूदी गया न्हाट सब हुल चला

धकर = धाकर, कूए मने = कुए में, खड़ग = तलवार, सूर = सूर्य, दंदा = शत्रु
सरकर मँग्या = सेना ने इच्छा की न्हाट = भागना उननकूँ = उनको किते सार के =
कैसे कैसे न्हाट गया = भाग गया नार = अग्नि।

सूर<सूर्य मँग्या<मँगिया, हुल<हुल्ल दंदा<द्वन्द।

अया शाह के हात में जो सिपर
मग्या मारके धमका सिपर के उपर
सिपर गिर पड़ी जो जमीं के उपर
गया न्हाट लेकर यहूदी दिगर
जिसे है सिपर हक करे गाज सूँ
उसे क्या है परवा सिपरसाज सूँ
गुसे सूँ शहशा खंदक कूँ असल
ले जाये अपसकूँ किसे के तसक
लिये हात में पाट मड़कम का तोड़
किये पूल खंदक पर वही पाट जोड़

अया = था दिगर = दूसरा केरे = के धमकना = फाँदना पाट = दरवाजा
मड़कम = दुवजार, खंदक = खाई। सिपर = ढाल राज = रहस्य सिपरसाज = ढाल
बनानेवाला।

मग्या<मगिया दिगर<दीगर।

उसी पुल प आलम पड़ बेशुमार
निशानी परे फ़त्तह के ठार ठार
नर हाथ सूँ जो निशानी हम
पड़े ता सकम्या उगल वे ढमे
जिसे कम घरम में दिया है खुदा
तो मुश्किल कूँ आसी करे वो सुगा

गया तो यहूदयाँ के सिर थें गुमान
जुवाँ कर कुशादा कहे अस-असमान
असमाँ जीव का दे थो दोरे खुदा
किया सब यहूदयाँ कूँ घर सूँ जुदा

ठार ठार—जगह जगह, दिवालाँ—दीवारें, तले—नीचे, बल—शक्ति, थें—थे यहूदयाँ के—यहूदियों के, सफ्फा—साफ हो जाना आलम—संसार, बशुमार—अगणित, निशान—ध्वजा, फ़तह—विजय, अज़ल—सृष्टि का आरंभ आसाँ—सरल, गुमान—घमंड जुवाँ—जीभ, कुशादा—फैला हुआ विस्तृत। अस असमान—धरण।

चढ़े <चढ़े।

तुटा कुफर सारा यहूँशा सू यू
हुआ रोज रोशन गये रैन ज्यू
लिया शाह ने किल-ए कूँ तिस में रगड़
के ज्यूँ बक कूँ लेता बूगस में लकड़
अथे सात किल-ए उन्होंमें कमूस
जिसे शाह मर्दां लिये आ खुसूस
यहूदी भिले थे हुए सिर निगूँ
गनीमत लगी हात हद सूँ फ़ुजूँ
फ़तह कर किले कूँ शहंशाह सूर
फिरे लेके लशकर पयंबर हुजूर

तुटा—टूटा ज्यू—जिस तरह, तिस में—क्षण भर में, बक—बगुला (?) लकड़—लकड़बग्धा (?) रोज़—दिन, रोशन—प्रकाशमान कमूस—एक स्थान, खुसूस—विशेष, सरनिगूँ—सिर झुकाने वाले गनीमत—लूट का माल, फ़ुजूँ—अधिक, फ़तह—विजय, पयंबर—पैगंबर।

तुटा <तुट बग <बक।

पयंबर खबर सुन के खुशहाल दिल
हुए तो अँगे आ अली शह सूँ मिल
दरी मरहमत कर कहे यूँ रसूल
हुआ है तेरा काम हक कन कबूल
खबर इस फ़तह की हुई जो मुबीं
वो आलम में सुज पर किया आफ़रीं

जगत में नहीं कोई तुज सार का
तूं शाह मजनफ़र बड़ी भार का
जेठ पीर पीरां में तूं धूर है
तेरा होर नवी का च यक नूर है

मेंपे आ—आप आकर हक कन—ईश्वर के पास, सार का—समान, बड़ी भार का—बहुत बहार का, धूर—श्रेष्ठ, यकनूर—एक ही प्रकाश पर्यंबर—पर्गबर, खुशहाल दिल—प्रसन्न मन, अलीशाह—हजरत अली मरहमत—कृपा, रसूल—ईश्वर का सन्देश वाहक हजरत मुहम्मद। कबूल—स्वीकार, मुर्दा—प्रकट, -आफरी—प्रशंसा शाह मजनफ़—हजरत अली।

धूर<धृ।

नबी के पिछे सब में तुज है शरफ़
को शाह रसूलां मूं शाहे नजफ़
तप याद दिन रात शाही का काज
धरे हैक मूं है उसे तख्तो ताज

शाह रसूलां—रसूलों के बादशाह, शाह नजफ—हजरत अली, तख्तो ताज—सिंहासन और मुकुट।

पिछ<पीछे।

-मसनवी

१

बनाई है सारी अपस कूं रयन
इमी ये बनाई रयन ने मोहन
रयन के अंबर पर सुमायी दिस
मान को समायी हवायी दिस
चंदर जात टीका लगाय रयन
फ़टाकों के तिरें उतारे मोहन
नमियां के मुसन्नफ़ अंबर साथ जोड़
जमीं कू फ़लक सूं लगे आग हार
जमीं मू हवायां हुनर सूं असा
गगन के मिनायां कूं स्याय मुमा

अपस कू—अपने को इमां य—इमी से, बनाई—बनवाई, बहलाई प्रसिद्ध हुई। मोहन—मोहनी दिन। हवायां—हवाई (ब ब) एक आतिशबाजी फ़टाका—पटाके

नमियाँ—नमी मेंबस—मंबलि सितार्यां—सितारे नुमायाँ—स्पष्ट मुशक्क—विकस करने वाले हुनर—कौशल।

मेंजस<मंजलि सितार्यां—सितारा (ब व)।

रमन ने मोहन कहवाई—दक्खिनी में कर्त्ताकारक के साथ कई स्थानों पर अनावश्यक रूप से ने का प्रयोग होता है।

चकर बान सिसफूल निस के असक
खड़ी आके खिदमत यूँ शाह की झमक
दिखाई गगन का तमाशा निगार
तो पाई है शाही' का मत गत पियार

२

सोने की सुराही सोने का है जाम
सोना घोल पीती है भर भर मुदाम
चँवर मुख सखी का अधिक प्यार का
सोने का है सिसफूल सुरिज सार का
सोने किर्या कलियाँ कर करन म भरी
सोने की पँजीरी गले में धरी

चकरबान—एक प्र शिरआभूषण सिसफूल—सीसफूल, असक—बाल मतगत पियार—बहुत स्नेह, सार का—समान सोने किर्या—सोने की कलियाँ कर—कलियाँ बना कर, करन—कान, निगार—प्रेमिका जाम—प्याला मुदाम—प्रायवत।

सिसफूल<सीसफूल आके<आकर, मतगत<मतिगत चँवर मुख<चन्द्र मुख, सखी<सखी करन<कर्ण।

सिना है सखी का सोने सार का
सोना हीर मोती गले हार का
सोने का जरीना सोने का है माँग
सोने का है टीका सोने की है माँग
सुघन अब सँवारी है पजन का नग
सोना आ सरन लग धर्या सीस पग
करम सुज पे 'शाही' का दिसता है आज
सोने का मेंबल ओट करती है लाज

सिना—छाती माँग—मंग सुघन—युवती, आ सरन लग—सरन में आकर, करम—कृपा।

सिना<सीना, सखो<सखी, भोग<भय, सरन<शरण, भर्या<भरिया सीस<शीश।

गज़ल

(१)

साजे रयन तेरा मदन मुज तवा में भरपूर है
तुज सुबह मुख के सामने दीपक सदा मख़मूर है
तुज नैन की नरगी कने मँगते हैं मोती आबरू
या रूप की तूं खान है या हुस्न की समदूर है
तुज बाल काले देख कर बादल फिरें हैरान हो
तुज भाल होर टीलक कने क्या चांद होर क्या सूर है
तुज गाल की तारीफ़ सुन पंकज छिपे जा नीर में
तुज रंग के परताब सूं कंचन का मुख रंजूर है
'शाही' के दिल सब हात सूं मँगती मनाने मह सूं
पन छोड़ दे हट-तट जिते भी केती मग़रूर है

मदन—कामदेव प्रेम। नरगी कने—कामसता के आगे समदूर—समुद्र मख़मूर—मस्त शराबी। आबरू—इज्जत रंजूर—दुखी।

मुख<मुख समदूर<समुद्र, परताब<प्रताप।

मुज—इस स्थान पर 'मुज' का प्रयोग 'मैं' सर्वनाम के षष्ठी के रूप में हुआ है।

(२)

जिस दिन ते तुमन साथ लग्या मनवा हमारा
उस दिन ते पिरत का हुआ मुज तन में पुकारा
जो मन भवस पस के देखे तन तुमारे
लटके त चमक मार करे इश्क़ पुकारा
फिर करे जो चश्क़ पूँ परवास सवासे
मुज नैन पपीहे के बदल जिस दने धारा
ले हात में फुलमाल मले लाल पिन्हाये
चौसार चँचल मार करे प्यार अपारा

चितचोर पिया सात भरे मद पियाले
'शाही' सेती मय पीके लगा नैन मधारा

मधारा—मद तुमन सात—तुम्हारे साथ पिरत—प्रीति पवल—पहले, चक्के—चुककर, सैन—इशारा फौदा—फंदा पलक—पदी तिल—शरीर पर तिल की आकृति का श्याम चिन्ह, चौसार—चतुर मधारा—मधार, पत—बस मतवर—समर्थी। शाही सेती—शाही से।

सात<साथ सग्या<सखिया, पिरत<प्रीति पवल<प्रबल, फौदा<फंदा, फुलमाल<फूलमाला पियार<प्यार।

तुमन—तुम सर्वनाम का षष्ठी का रूप।

(२)

छब भाँत हो पियारी भाती जीवन में जम जम
नित पेम में अटकती दिसती नयन में जम जम
नैनों की छब निरखने अचरज भई सबीयत
दो चाँद हो पिया के झमके बदन में जम जम
चायें बुला पिया में दो बोल मुख ते कहते
अंमित के घूट पिया के दिसते रसन में जम जम
फूली हूँ मत खुशी सूँ हो बाग बाग मन में
जब हुत में हुत मिलाकर फिरते चमन में जम जम

भाँत—भाँति पेम—प्रेम दिसती—दिखाई देती है, छब—छवि घूट—घूँट, रसन—रसना (जीभ) मय—शराब जमजम—शाश्वत रूप में।

पियाले<प्याले भाँत<भाँति पियारी<प्यारी पेम<प्रेम छब<छवि, अचरज<आश्चर्य अंमित<अमृत, घूट<घूँट रसन<रसना मत<मति हुत<हस्त।

कई जिन्स फूल रँगीले सेज में बिछा कर
आनन्द करी हूँ पिउ सूँ हिल मिल बतन में जम जम
अरंग हो मैं पिया की दिसती हूँ आवें यम हो
कई भाव ते रिझा कर लेती हूँ मन में जम जम
लें लें थकी हुई हूँ पी बस्स का पियाला
पिउ जीव होके हरदम बसते हमन में जम जम
कीती हूँ चख कसौटी रंग-रूप को परखते
पिउ सूर-सा झमकता मजिस सखन में जम जम

> सब भाग मुख सँवारे सब ते तरफ़ में तारे
> 'शाही' पिरत किये मुख गुसे सगन में जग जग

कर जिन्स—कई प्रकार के आनन्द करी हूँ—आनन्द प्राप्त किया है, अर्दे म—अर्दांगिनी छायें—छाया, कर भाव है—अनेक भावों से रूँ—रोम, कीती हूँ—किया है बच—पाँच, हमन में—मुख में बतिस लच्छन—बत्तीस लक्षण पुरुष के बत्तीस गुन, वसल—मिलन ।

अर्दे म<अर्दांगिन रूँ<रोम बच<पच, लछन<लच्छन<लक्षण । पिरत<प्रीति ।

(४)

> मुख मोड़ से पगी है चंचल ने गुमान कर
> पलकों के तीर छानत भौहें कमान कर
> नाजुक यू पत की लटकी में आ टिक्या है जिव मुज
> झल्का अंजस कूँ देके चली है यू जान कर
> कुच दो कँवल कलियाँ अछे मन के छिने ऊपर
> कंचुक की छुर यू सत दिसे बाँध जो तान कर
> मुख देखते मोहन के हुई है मिमुफ्‍गी
> जोबन चकत भये जो दिखाये वा भान कर
> ममरित भरे अधर ते हुई है हमाल मुज
> देख्या नजर जो भर के सवद धन के ग्यान कर

पलक—पलक तीर छानत—तीर बरसाती है, मत—बाल कुच—स्तन कंचुक—चोली धन—चोली का विशेष प्रकार से बनाया गया कपड़ा मोहन—मोहनी प्रिया, धन—युवती नाजुक—कोमल मिमुफ्‍गी—प्रफुल्लता, हमाल—सैलन, सवद—होंठ ।

चंचल<चंचल पलक<पलक मत<मति कँवल<कमल छिने<सीने, कंचुक<कंचुकी ममरित<अमृत, देख्या<देखिया ग्यान<ज्ञान धन<धन ।

> प्यारी हो कर की दिसे मुख सामने झमक
> जोबन सुंदर के मुखड़े कूँ बोले हैं भान कर
> निमल बदन चंचल का यता साफ़ है मगर
> मूरत मोहन की ओट है नैनो कूँ छान कर
> दिन रात तास पहर भरी मन बसी का याद
> धारन किया है हिरद कूँ मुख तिलक ध्यान कर

नौरस के भाव धन लेकर आ मिले मोहन
नेह के मन्दिर में नित रख 'शाही' परान कर

भान कर—सूर्य कह कर अता—इतना जोटे है—चांदनी है, मनबसी—मन में निवास करने वाली आरंभ—प्रारंभ, ताल—घंटा नौरस—साहित्य के नौ रस परान—प्राण सुजन—युवती, ।

भान<भानु चँदनी<चाँदनी आरंभ<प्रारंभ हिरदे<हृदय, नित<नित्य, सूरिज<सूरज<सूर्य ।

(५)

सुजन के रूप कूँ तोले सुरैया के बटा पाने
दंडी सो कहकशां की कर चँदर सूरिज हुए पाले
लगे अधरे अधर मद के सवों में सब मिलाने थे
नमन सू धन छकी होर है नज़ारे के पिये प्याले
कुंदन को चँद से दिसते तरुन सुन्दर के जोबन दो
मकर नासिक के तार्यां पैन बैठे हैं चँदर वाले
कलायां की बलायां ले करें रुन झुन कंचन नपुर
चरन तल लाये मेंहदी सूँ ज़मीं पर सब उगे लाले
गले की गलसरी का भेद क्या 'शाही' का मन भेदया
मगर तफ़सीर लिख ल्या कर सुजन के ले गले डाले

(६)

तुज गाल पर मख का निशां दिसता है मुज इस धात का
रोशन शफ़क़ में चमके ज्यूँ चाँद भरी रात का

बटा—तोलने के उपकरण बाट । सूरिज—सूर्य ताल—घंटा कहकशां—आकाश गंगा ।

अधर—होंट मद—शराब, छकी—तृप्त कुन्दन—सोना जोबन—स्तन, मकर—मीन, चँदरवाले—कान में पहनने की विशेष प्रकार की बालियां कलायां—कलाइयां गलसरी—गले में पहनने का एक आभूषण हँसली । मख—नाखून इस धात का—इस तरह का चमके—कौंध लब—होंट, नज़ारा—दृश्य, ताज—मुकुट, निशां—चिह्न ।

तरुन<तरुण जोबन<यौवन नेपुर<नूपुर, भेदया<भेदिया लिख ल्या<लिख लिया<लिख ला, मख<नख ।

तुज जुल्फ़ मिस्की देख कर सौंपा तजे अन पान सब
तुज लब केरी लाली अंगे लालौं सटे मुद गात का
पलक कमानां खेंच कर मारे पलक के तीर सूं
जख्मी हुआ दिल का हिरन लाग्या निशां तुज हात का
मुखड़ा सकी का ईद-सा दिसता अपसा रूप सूं
तिस केस पर चर का पेंचस झलकात है शबरात का
तेरे सखन शीरीं अंगे शक्कर दसो खारी लगे
मुख में उथा काढ़ो लिया डर कर हुक्मा नाबात का
बुद बस पिरत का भोग कर 'शाहीं' सूं जब बाजी करे
ऐसी मुसा मन का तुरंग रख क्या रखे शहमात का

सौंपा=सौंप (ब० व०) अनपान=खाना पीना केरी=की, लालौं=लाल, (ब० व०) एक रत्न, सटे=छोड़ दिया मुद=होठ गात=शरीर, मुख में उथा काढ़ो लिया=मुंह में मुंह रख लिया हुक्मा=हुक्म, जुल्फ़=बालों की लट, मिस्की=कस्तूरी के समान लब=होंठ, पलक=भौंह, ईद-सा=ईद के चांद की तरह चर=सोना, शबरात=एक त्यौहार, शीरीं=मधुर, नाबात=मिश्री शहमात=पराजय।

मुद>मुख गात>गात, मुखड़ा>मुखड़ा सकी>सखी, बुद>बुध>बुद्धि।

(७)

सजन मिलने बुलावे जो चलूंगी पावें कर सिस सूं
पिरत सा पीव ते रहने ना पूछूंगी कधी किस सूं
पिया ते दूर होन में लग्या है नाग बिरहे का
उसी का याद अमरित हो न मरना है मुजे विस सूं
पड़्या अंदवार जग में मुज पियारे के बिछड़ने थें
नयन हस रात सारी यूं मुझाबिस हो रहा निस सूं
महेल्यां के मनाने सईं न होवे धीर चित मेरा
मसीहत अब न भावे मुज न होवे चैन कुछ इस सूं
नहीं परवा संवारन का मुज भूखन पिन्हावो मत
दौरन नैनों में अब मरे अमोना हो दिसे मिस सूं

चौर कर सिस=सिर को पांव बना कर, पिरत सा पीव ते=प्रिय से प्रेम लगा कर, कधी किस सूं=कभी किसी से लग्या है=लगा है, नाग बिरह का=बिरह का नागा और विस सूं=विष से, महेल्यां के मनाने सईं=सखियों के मनाने के लिए,

हुस्न—चांदा, परदा सँवरने का—सजावट की इच्छा, भूषण—आभूषण, रोज—दिन, मुकाबिल—प्रतिद्वन्द्वी नसीहत—उपदेश कमीना—तुच्छ मिस—तांबा।

सिस<शीश पिरत<प्रीति कधीं<कदापि जइया<जाइया<सदा अमरित<अमृत विष<विष, अँधकार<अंधकार, निस<निशा सहेल्यां<सहेलियां, भूखन<भूषण पिन्हावो<पहनावो।

बिरह में हास दे मुज कूँ पिया नीठुर हुए हैं अब
सँदेसा यूँ जो मेरा है कहो तिक तिक कहो तिस सूँ
मगर कुछ बोल कड़वे मुज सूँ बोलेंगे सिरीजन तो
फिर उत्तर न देऊँगी भवों में गाँट भा रिस सूँ
जो कुच हट, दिल सूँ धो, सट सब, करूँ मन भावता पिव का
रहूँगी सेवकी हो मैं पिया की रीज है जिस सूँ
ढँढोरा मार कर शाही बिरह के बोल बोल्या जो
जहाँ के आशकाँ सुन तो हुवे बेहोश सब जिस सूँ

नीठुर—कठोर, तिक तिक—ठीक ठीक तिस सूँ—उससे सिरीजन—प्रिय जी भौंट भा—भौंहों में गाँठ बाँधकर, भौंहे चढ़ा कर, रिस सू—क्रोध से जो कुच हट—जो कुछ जिद है दिल सू धो—मन से धोकर सट सब—सब छोड़ कर सेवकी—दासी रीज—प्रेम लगाव। ढँढोरा—ढिंढोरा, जहाँ के आशकाँ—संसार के प्रेमी लोग।

नीठुर<निष्ठुर तक तक—ठीक ठीक, गाँट<गाँठ रीज<रीझ, ढँढोरा<ढँढोरा।

(८)

जिस दुख्खो गाल के मँगे शामो सहर किधर
तिस-रूप के परखने कूँ हुद्दे बशर किधर
सुन्दर फलक पे चाँद के टीके की देख जात
तारे निधार वार दे फिरता भँवर किधर
गुलजार से जो गाल कूँ देख्या शरफ़[1] के रोज
सट दे शफ़क़ कूँ चट के चल्या सूर हूर किधर
मुकद्दा बन्यो है पिक ?, मैं रँग ने कवल का सब
अमरित भरे अधर मँगे मिसरी शकर किधर

१ जिस दिन सूर्य सब से ऊँचा होता है।

हँस मान से बनी है सखी जब गुमान कर
पूछे सभी सखी कूँ सखी की नजर किदर

आलिंग करे है सास रँगीली सूँ पिरत कर
केसर मिनी है अँग में तरी जिदर किदर

माही ते सभ में हुई झटपट मोहन ने जब
बारिक कमर त खिस गया है जर-कमर किदर

सर्वे—सास टीका—माथ का आभूषण निसार कर दें—न्यौछावर करके वार दे, मर दे—वार न उट के बस्या—उठ कर बसा, सूर हर किदर—सूरज के चारों ओर, सिक—सीक (?) कुसली माल—वाल की लटें और कपोल, शामो सहर—सन्ध्या प्रात। हुद बशर—मनुष्य की मर्यादा, गुलजार—चमन केसर मिनी है—केसर से सुगन्धित है, बारिक कमर—पतली कमर, खिस गया है—खिसक गया है।

वार दे<वार द उठ के<उठ के मुखड़ा<मुखड़ा अमरित<अमृत।

(२)

पिव सात रीज रहना सनअत हमे करते हैं
अप रीज फिर रिझाना सनअत हमे करते हैं
तुज नयन के नगर में मामन वतन किये जब
तब अंजुमन के माथों खलवत हमे करते हैं
मैं छावें हो पिया सँग साथी रही हूँ दायम
यक छिन जुदा न होना वसलत हम करते हैं

मामन वतन किये जब—जब प्रिय न निवास किया करते हैं—कहते हैं यक छिन—एक छन किन्नर फिदर—चारों ओर, मसरत—आनन्द, अंजुमन—सभा खलवत—एकान्त दायम—सदैव वसलत—मिलाप।

आलिंग<आलिंगन मिनी<भीनी किदर<किधर बारिक<बारीक सात<साथ छावें<छाया।

गुम होर गुलाब ध्यान महई कुच फ़रक मजलस त
यूँ पिव सूँ मिल रही हूँ इसरत हमे करते हैं
हिल आइ चित सुमाई में मायन पिया कूँ
आक़िल जहाँ न बोलें हिकमत हम करते हैं
जोबन में पाप मूज कूँ जब सज में मचल के
सो मान है सुमाव हसरत हमे करते हैं

चारो पहर पिया संग कइ भांत कर मदन के
सजोग हो रही हूँ इसरत इसे कते हैं
साजन के साथ थे मैं पूरी पुरे के इंछ्या
तिरलोक में पनवाती धुहरत इसे कते हैं
रूँ रूँ रसन करी मैं शाही का नाँव मते
फिर फिर वो नाँवें सेना राहत इस कते हैं

हित—प्रेम सौतन—सौत भी मान दे—बहुत सम्मान देकर, कइ भांत—कई प्रकार मदन—कामदेव पूरी पुरे के इंछ्या—इच्छा पूर्ण करके तिरलोक—तीनों लोक, पनवाती—बदनाम हस्ती (?)। मुहरत—प्रसिद्धि फरक—मगर, मदन—सृष्टि का आदि, उलफत—प्रेम हिकमत—उपाय इसरत—वैभव रूँ—रोम रसन—जीभ।

नईं <नहीं नूच <नृत्य, कते हैं <कहते हैं भी <बहु भांत <भांति संजोग < संयोग, तिरलोक <त्रिलोक धुहरत <शोहरत।

(१०)

दर्द इसते हुआ है मुज के मैं तुज बल नहीं देख्या
हुआ बेकल यता मैं कस के यक तिल कल नहीं देख्या
मजाल ते जोड़ हो अक्सर धनी है तुज सूँ मुज यारी
फिरा यूँ दिल कूँ देख्या जो तुमे इलमुल नहीं देख्या
अँसू मुज नैन ते टपकन लगे तुज बिरह के हाते
मुकाबिल दिरग दरपन धर वजुज कल-कल नहीं देख्या
तुमारे हुस्न की खूबी मुकाबिल जब चंदर सूँ हुई
तदी ते मैं कसकी कूँ कधीं निरमल नहीं देख्या

मुज के मैं—मुझ कि मैं बकल—बेचैन यता—इतना यक तिल—एक क्षण कल—चैन, जोड़ हो—जोड़ी बनकर, संयोग से। मुलमिल—संदेह पूर्ण, अँसू—आँसू, बिरह के हाते—बिरह के कारण दिरग—दृष्टि दरपन—आइना तदी ते—तब से राहत—छुटकारा शान्ति। यारी—प्रेम, मुकाबिल—सम्मुख वजुज—इस अतिरिक्त।

रूँ <रोम, रसन <रसना नाँव <नाम दिरग <दृग, दरपन <दर्पण चंदर चंद्र तदी > तदा निरमल > निर्मल।

गुमायी गुल कूँ जीती है तुमारे गात की खोय
पूँछ्या अत्तारखाने सब यता परमल नहीं देख्या

तुमारे मुक सलोने पर घुंगट की ओट देख्या जो
चंदर पर इस नजाकत सूं कधीं वादल नहीं देख्या
खवासे वाल में सूरत सुहानी तुज दिसे रागन
यता परकास निस म्यान किसी मखमस नहीं देख्या
हुई है तास आलम में तुम्हारी चाल सूं मस्तर
सरक वसना तुमन जसा किसे मगस नहीं देख्या
खंजन जसे नयन म्याने दिसे काजस सूं सूका जब
सफ़ा कागद पे इस खूबी सूं में अदखन नहीं देख्या
तुम्हारी जुल्फ के पेचों ने पिजे दिल कूं सब मेरे
पिरम का दाम ऐसा मैं कधीं औकस नहीं देख्या
हमारा मन होर दिल में लगे खटपट तुमन देखत

घूंदेया—घूंघट परमल—सुगन्धि खवासे—घुंघराले सुहानी—सुन्दर, परकास—उजाला ताल—ताल (संगीत) तुमन जैसा—तुम्हारे जैसा सूका—काजल का चिह्न, गुल—गुलाब का फूल ओस—पसीना मखारखाने—मंदी की दूकानें नजाकत—कोमलता मखमल—मखमल, सफ़ा—स्वच्छ, खूबी—विशेषता। पिंज—पींज डाला धुना। औकस—बंधन।

मास<मास घूंदेया<घूंघिया परमल<परिमल मुक<मुख घुंगट<घूंघट सुहानी<सुहावनी, परकास<प्रकाश निस<निशा।

(मूल प्रति का पृ० १२४ उपलब्ध नहीं हुआ अत: उपर्युक्त ग़ज़ल सं० १० की कुछ पंक्तियाँ उपलब्ध नहीं हैं।। ११ वीं ग़ज़ल की निम्नलिखित दो पंक्तियाँ हस्त-लिखित प्रति के पृष्ठ १२५ पर अंकित हैं।)

(११)

पिरम की रीत सूं मोहन कहे हँस हँस सुनो 'शाही'
मजब मुहरत हुई जग में हमारी इश्क बाज़ी की

(१२)

मकान मूरत ते दुर चक यूं बनाय आप से सारी
दिखावे नयन में जग के भरम लोभा की हो मारी

मोहन—मोहनी, प्रमिका। दुर चक—दो आंखें, दाम—फंदा।

पिरम <प्रेम, पिरत <प्रीति, दुर <द्वि छोला <सोलह।
पीवना—पीमना, घुनना।

सुरिज हल कर यू दुर चक पर लिख्या नक्काश आशिक हो
हरेक गुल बीच अदबस के दिसे टीका जड़त कारी
सुंदर आसिक में बेसर क़ुफ़ुल दो हल्के करन दिसते
कनक जंजीर जुल्फ़ाँ कर सुहावे रूप में भारी
दस्ना राजे मानी का जबाँ पर क़ुफ़ुल महकम कर
जिते गौहर मुहब्बत के रखे हैं आप में प्यारी
नजारा कर यू दुर चक पर करम ते यूँ कहे शाही
मगर सनअत सूँ मानी यू किया है सब क़सम कारी

(१२)

सुरिज—सूर्य दुर चक—दोनो आँखें तिय—स्त्री बस्ना—डरोना, सलक—निकल कर, फिसलकर। फ़िकिर पर लगे हैं—चिन्ता के पंख हल कर—घोल कर, नक्काश—चित्रकार, गुल—गुलाब का फूल क़ुफ़ुल—ताला हल्क़ा—घेरा मंडल। मानी—ईरान का एक पौराणिक चित्रकार। महकम—दृढ़, गौहर—मोती सनअत—चतुराई, मानी—अर्थ।

सुरिज <सूरज <सूर्य।

चलिया तीर ऐसा कमाँ ते सलक
पवन कूँ फ़िकिर पर लगे हैं तलक
अछे गोशमन्दा बराबर कमान
मगर कस से सट खींच देता मलक
परियाँ से दिसे शह के हत तीर सब
क़ादिलदार होकर खड़ा है फ़लक
खिला सुख सुहावे कमाँ के उपर
कमाँ पदमिनी सी खिला है अलक
झमकते हैं पौलाद के भाल यू
सुरिज की किरन ते अधिक है झमक
अजब तीर पर कर चुंगल भाल से
चल्या बाज सुरखाब पर ज्यूँ धमक

मुज़फ्फ़र[1] अली शाह के हात का
मलूक ठोर साम्या निशाँ के पलक

पथ = है कस = शक्ति सर = बहुत परियों से दिसे = परियों की तरह दिखाई देते हैं, शह के हत ठीर सब = बादशाह के हाथ के सम्मुख तीर, पदमिनी = पद्मनी (एक प्रकार की नायिका), पीलाद = इस्पात, भाल = भाला भाला । धमक = दौड़कर, झपटता हुआ । केवमन्दा = एक धनुष कमान = धनुष, कौरबतार = तोपचर, मलक = देवदूत, फ़लक = आकाश, सिता = धनुष की प्रशंसा । पु मल = पंखा, बाज = एक शिकारी पक्षी, मुरग़ाब = एक पक्षी ।

किरन <किरण ।

(१४)

तुज भाल के परताब ते पथा चँदर काला हुआ
सुंदर गले में हौस तुज ज्यूं चाँद कूं हाला हुआ
नाथक(?) भुगा देख्या हूं जब बिखरे मलक सुज सीस पर
मुज दस्त कूं तुज केस मूं ज्यूं भाल पर भाला हुआ
तुज सोप की बूंद बास ते बासी किये हैं बास सब
मृगमद अपस के बास जो तो भूरें पे सब माला हुआ
केसर त टीका टीप कर देती मोहन जब भाल पर
दिनकर दिसे तीलक यू सुत होर माँग चाँदयाला हुआ

मलूक = राजपाल, सम्राट । परताब ते = प्रताप से हौस = गले की हड्डी (हंसली) । नायक = (?) तीलक = तिलक, निशाँ = निशान, चिह्न । हाला = घेरा, मंडल । दस्त = हाथ सोप = पसीना ।

परताब <प्रताप, चँदर <चंद्र, भूरें <भूमि सुत <सूत ।

सोहे सुरंग कारे सकल लोचन में तुज तकदीर से
इस नयन की तासीर ते सब मौज़ बगाला हुआ
मेंगने ह पचसर नैन तुज मुख दिस से जाने के सबब
पुतल्यां दिसे बेबर(?) हो मुख मूका सो ज्यूं माला हुआ
मन मरें यू पक सुंदर यू है यू भाम है पूर मय भरे(?)
पाग्या मगर म जाम लो ...

तेरे अधर पर माल होर कासी धड़ी के रंग बे
गु'बफस भरे हैं बेल में चमने चमन साला हुआ
सारा पुनम का चाँद सो तेरे मुसक्कन मुख धवल
सोकर धवल का नूर सब ज्यू' रई का गाला हुआ

सोहे—सोभित हो रहा है सुरंग—सुन्दर डोरे—डोरे (आँख के), और बंगाला—गाडमह्ब घोस मर्बोल जादू। सैंतते हैं—चाहते हैं से जाने के सबब—ले जाने के लिए बेवर— (?) धूका—काजल की रेखा धड़ी—मिस्सी की परत गुंबफस—गु बा कम तसवीर—बाह्य अयान—माले शाहीर—प्रभाव परिणाम। वाम = प्याला चमने चमन—बगीचे बगीचे में लाला—एक फूल।

तुम < तुम गु'बफस < गु बाफस पुनम < पूनम < पूर्णिमा। मुसक्कन < मुसकन।

इन्दर सँवार्या आरती तुम मुख सलोने के बदल
चाँद सूर दो दीपक दिसें आकास सो थाला हुआ
तरी मोहन माथे की छब देख्या हूँ जब छाती पे तुम
तुम माथें सो मुज विरह कर दो माल जपमाला हुआ
तुम बाँह पर कंचुक हरी हार हात में म्हेंदी के गुल
सब मिल नजर में यूं दिसे ज्यूं फूल का डाला हुआ
अकसर दिसे तेरी सिफत लैला मने मजनूं के तईं
इसते दिवाना हो गया जब जग सूं निरवाला हुआ
रबि-ससि ते मिल 'शाही' ने जब तोल्या है तेर हुस्न कूं
दण्डी दिसे सूद कहकशाँ आकास सो थाला हुआ

सँवार्या—सजाया थाला—थाली माला—गले का एक आभूषण माल—माला डाला—डाली मजनूं के तईं—मजनूं के प्रति इसते—इससे, निरवाला—निराला (?) दण्डी—तराजू की डंडी सूद—स्वच्छ। विरह—जप तुम—मूल सिफत—विशेषता कहकशाँ—आकाश गंगा।

इन्दर < इंद्र सँवार्या < सँवारिया कंचुक < कंचुकी म्हेंदी < मेंहदी रबि < रवि दण्डी < दंड, सूद < शुद्ध।

छाती पे तुम }
तुम माथें } दोनों स्थानों पर 'तुम' का प्रयोग सम्बन्ध कारक में हुआ है।

(१५)

प्रीतम नजर भर रूप को उस धूम धक मस्ताना रा
गुलशन किया मन्दिर अने रोशन झुकुम शाहाना रा

मा मान कर इस बोल कूँ अपस भटक ये जब चली
आ खरम सूँ बोली मुँजे या मन भयो अफ़साना रा
जिसके फ़िराक़ों सूँ दिसे गुमबार सब संसार हो
य दिस मुअस्सम हो मेरा बेब सबक़ परवाना रा
येती मुसक्कन नार कूँ देख्या नहीं कोइ ख़ाब में
जिसके नयन पुरस्याक़ ते बिखसत सूभट दुरदाना रा
जितियाँ अखियाँ हितकियाँ सखियाँ कइ साख हिरफ़त कर मना
स्यायाँ दुखा मेर कने भाँ दिलबरे जानाना रा
वो मन बसी आने की धुन सुनते हुआ मुज कान सुक
मद धौक़ सूँ पीने बदल पुर भी कुनम् पैमाना रा
मौक़ूँ मुक़फ़्फ़ा बालने हर यक कूँ काँ ताक़त अछे
अबरिज कया शाही ग़ज़ल सुनने बदल फ़रज़ाना रा

(१९)

कँवल कँवल ते नमतर प्यारे हैं तर हात रग
जिसदू सुरंग रँगने बदल म्हँदी के पकडी पात रग
होरे दसन का साज सूँ आकर छिपे हैं खान में
दरान तुमें कह ना सकूँ सुन्दर है तेरा गात रग
मधुकर सा आकर नह सूँ बैठा है जूँ अरविंद सूँ मिल
मज मुख उपर ए मनमोहन दिसता है मुज इस भात रग
एसी मुसक्कन नार की तारीफ़ कर अप रूप म
देख्या नजर भर सूँ कया भायम है इसके साथ रग
दा क़ाफ़िया ग़ यक ग़ज़ल शाही कँख्या नो तब सूँ
नादिर था हर यक बाम सुन लगते मिठे नाबात रग

कँवल—कोमल जिसदू—उसे सुरंग—अच्छा रंग पात—पत्ता, दसन—दाँत
मनमोहन—मन मोहित करने वाली इस भात रग—इस तरह का रंग अपरूप—अपना
रूप सूँ कया—इस तरह कहा नमतर—कोमलतर। नौतर—नई तर्ज़, नादिर—अनुपम।
कँवल <कँवल <कोमल कँवल <कमल म्हँदी <मेंहदी नाबात—मिस्री पात <
पत्ता <पत्र दसन <दशन अरविंद <अरविंद <अरविंद, मुसक्कन <मुस्कान, कया <कहा।

(२०)

पहन मगी के संग के मैं यूँ मस्त कहूँ
जिनके नयन कटाछ कूँ मारी जिग्त कहूँ

याकूत का तिलक सोहे सुन्दरी के मुख पे यूं
गोया पिचक दिये हैं यू चन्दर के हत कहूँ
भागीरती सो माँग है सिसफूल बहमन
नित वाँ मक्क किया सो वो तीरत की गत कहूँ
यक मास कर मकर कूँ सो दरपन में देखते
दरपन में लाल छाँव ते सब भर पड़त कहूँ

मरत=मर्त्य चन्दर के हात=चन्द्रमा के हाथ में भागीरती=गंगा माँग=माँग (सिर के बालों की) वाँ=वहाँ, गत=गति, कालिमा=दुःख, याकूत=एक रत्न।

यक <एक, मरत <मर्त्य कटाछ <कटाक्ष, पिरत <प्रीति पिचक <दीपक, भागीरती <भागीरथी बहमन <ब्राह्मण तीरत <तीर्थ, गत <गति छाँव <छाया।

बेसर का हल्का छाब यू दिते माहे नी नमन
तिसके लटकते मोती कूँ मैं बिरस्पत कहूँ
छाती पे कंट माल की सूरज कूँ खूब देख
वो माल मुख प दाम हो फिर में सिफ़त कहूँ
'शाही' कूँ पाम के बिड़े देती मोहन ने अब
तिसके कँगन के गुन कूँ मैं मचरिज मौगत कहूँ

(१८)

अवस ते दिल लगा मुज सूँ दला तो की फिराते हैं ?
हमारे सुख भरे जिव कूँ तुमें की दुक में लाते हैं ?
सुरीजन के नैंदर से मुख कूँ देखन कूँ हिया ताने
पिरत कर और सूँ प्यारे हमन कूँ की सताते हैं ?
हमारी चूक नई कुच होर तुमें चुप चुप रुखाई कर
नहीं सो रीत की रीतों निपट हमना सिखाते हैं

नमन=समान, बिरस्पत=बृहस्पति (ग्रह)। की=क्यों, माते हो=लाते हो सुरीजन=प्रेमी, तुमें चुप चुप रुखाई कर=तुम मन में ही रूखे बन कर, नहीं सो के रीतों=जो रीति नहीं है उस रीति से हमना=हमें, माहे नो=नया चाँद, गुन विशेषता, दाम=माला, फंदा। सिफत=विशेषता गुण। मौगत=प्रचिपत।

बिरस्पत <बृहस्पति, कंटमाल <कंठमाल, अवस=अवश्य, दुक <दुख।

यकस कूँ सेज में रख कर समुद में वास यो जिव कूँ
अपस के हात सूँ लेकर डोबाते होर तिराते हैं

दुतिन के बोल सुन सुन कर मबोले की हुए मुज सूँ ?
ममोसे बोल वालो कुच ना कुच कह की कुड़ाते हैं ?
समे है सेज में ग्रक्सर दुतिन के हात के नख यूँ
तुमारे गाल पर छब सूँ चंदर-सूरिख छिपाते हैं
मुक पर गाँठ मा पिव ने फिराये मुख दिसे मुज यूँ
ग्रबस ते मार कर तीरों कमी मब तो छिपाते हैं
दिसावें रात के खेवें तुमारे गाल पर सारे
उमाने कूँ इता हमना सबों की मूट खात हो ?
रंगीले रंगभरे 'शाही सजाये पेम का लावक
जगा तू रन सारी मुख नयन रँग में रँमाते हैं

समूर — समूह, दास दो — दास दो ग्रपस के — ग्रपने दोबाते होर तिरावे — दुबाते ग्रौर तैराते दुतिन — सौत मबोले — मूक, ममोस — ग्रमूल्य कुड़ाना — चिढ़ाना, छिपावे हैं — चमकते हैं मुक — भौंह, मुक पर गाँठ मा — भौंहों को चढ़ाकर, दिसे मुज यूँ — मुझे दिखाई देता है दिसावें — दिखाते हैं, इता हमना — इतना हमें सबों — सौगन्ध खान — खाना की — क्यों दोबाते — दुबाते लावक — लगाव, प्रेम, ।

ममोले <ममूल्य, कुड़ाते <कुढ़ाते, छब <छवि मुक <भ्रौ सबों <सौं (ब ब)

(१६)

जागे हुवा है भाड़ को सेता मिबूती खास की
बैठा है ग्रासन मार कर कोता मरी स पाल को
सर पर जटां सु पारंबयाँ होर फूल के गुल हार पे सब
गुचे का लड़ सिमी बना बूरी लगाया खास की
पुस्तक बना पत्तर की सब रेको दिसे ग्रक्सर हो सुब
दिखला दिया है भर कर पूरी जगुत को साल (?) के
मारे कपों सो कान में मुन्दर किया है ग्रापने
गाड़्या मला कर सब जड़ी सने खबर पाताल की
जब भाड़ कूँ जोगी किया साबित सकल मजमून ते
तब हुई गजम ताजी तरज 'शाही मदन भूपाल की

मरी — मढ़ी मसारी मिबूती — भस्म, मुर — पवित्र, पारंबियां — बड़ की जटा, ।ड़ — लड़ सिमी — मूंगी बीज का बना हुआ माला । बूरी — धूम पत्तर — पत्ता रेको — गार्ने रीकना दिखा — दिया दिया, मेक — बन जगुत — जगत भड़ा — बड़ें, ।ा — दमी ।

खपन में—नष्ट होने में, सर आती नहीं—जीत नहीं आती, धरना—जीतना, पूर होना। बाज—बिना, भाती—अच्छी लगती, बिना अफ़सोसे—बिना दुख किये, हम सू—हम से, दन्द—झगड़ा, लड़ाई। धन्द—धुंध, फन्द—पंजास, असपन्द—नजर उतारने के लिए जलाये जाने वाले राई जैसे दाने।

साती<साथी, दन्द<द्वन्द, बाज<बर्जना।

(५)

कोई जाओ कहो मुज साजन सात
मैं नेह बंदी तूं कीता घात
तुज याद कर तलमलती हूं
लहुउ तेल में विस तलती हूं
तन मोमबत्ती हो जलती हूं
इस जलने सू ना टलती हूं
सब रैन बिरह में गलती हूं

(६)

कोई जाओ मुज साजन सात
मैं नेह बंदी तू कीता घात
जो बिरहा जाल्या तन कू अब
यू दूक घनेरा घेर्या तब
ज्यूं हनवन्त जाल्या लंका सब
अब कैसे सोसू मेरे रब
मैं मुखड़ा देखूं पिव का कब

लहुउ तेल में—खून के तेल में।

(७)

कोई जाओ मुज साजन सात
मैं नेह बंदी तू कीता घात
कोइ भाव, सुनो रे मेरा हाल
पिव कीता मुज सूं जो गोटाल
म थक से नित अठ अंसू डाल

गल पेनी भाँसू मोती माल
मुज मन यक पल है लख सख साल

(८)

कोई जाम्रो कहो मुज साजन सात
मैं नेह बेंदी तू कीता घात
सब सुख के मैं भौसान सटी
इस बयन मूँ गुन ग्यान सटी
मैं तन ग्रमरन ग्रनपान सटी
सब सौतिन में मान सटी
होर यक ग्रजन मुक पान सटी

पोयन—दायक ग्रन। बक—भांव, भंसू—भांसू, भौसान—स्मृति, बयन—पीदा सगी—छोड़ी ग्रमरन—गहना ग्रन पान—खाना पीना।

बोगान<बोटाना (मराठी), बक<बसु, भौसान<भ्रवधान, बेयन<बेदना, ग्रमरन<ग्राभरण ग्रनपान<ग्रन्नपान।

(९)

कोइ जाम्रो कहो मुज साजन सात
मैं नेह देंनी तूँ कीता घात
सुन सहेलीं यू दुख भारी है
पिव सात बिछोहाकारी है
यू पीर बिरह की न्यारी है
दुख सात सागी यारी है
पिव बाज जग भँधियारी है

(१०)

कोई जाम्रो कहो मुज साजन सात
मैं नेह देंनी तूँ कीता घात
जब दूतिन सँग मय पाव चम
मैं भाँसों पट सुमगाय मले ?

नजीक—निकट ५६
नन्ही—छोटी ५७
नन्हा—छोटा ४८
नमन—नरमी ७६
नरमी—कोमलता ६२
नवल—नया नवीन ५५
नवा—नवीन ५६
नवाना—झुकाना १०
नावक—(?) ७७
निघल—स्वच्छ, निर्मल २५, ५४
निमल—पवित्र स्वच्छ ४८
निपाना—उत्पन्न करना उपजाना २५
१० ६१
निपाया—निपजाया उपजाया २६
निबल—निर्बल १२
निरवाला—निराला ७८
निस—रात ५१
नीठुर—निष्ठुर ७२
नेह—स्नेह ८१

प

पंक—कीचड़ २७
पंखी—पक्षी २८
पखेरू—पक्षी ३८
पठाना—भेजना १० ६२
पढ़ना—पढ़ना ४५
पत—प्रतिष्ठा १२
पताँ—पताकाएँ ५७
पत्तर—पत्ता ८१
पदमिनी—पदमिनी ७७
पन—किन्तु ६१
पनवाना—बदनाम होना ७४
पय्याँ—पाँव ६५
परकाट—चोट, तलवार का वार ४५
परकास—प्रकाश ७५
परगट—प्रकट ६६
परताब—प्रताप ७७
परधान—प्रधान ४

परना—पड़ना ५४
परमल—सुगन्धि सुगन्धित ५३, ५४ ७५
परस—पारस १६, ८४
परान—प्राण ७०
परिमल—सुगन्धि ५१
पल—क्षण ४७
पलक—पलक १६ ६६
पलाना—चीखना चिल्लाना दूरी तय करना
गाना ५७
पावना—पग रखना ८६
पाँच—पंचरत्न (स्वर्ण हीरा नीलम लाल
मोती) ५४
पाच—हीरा पंचरत्न („) २५, ८७
पाट—दरवाजा ६१
पाड़ना—डालना २५
पात—पत्ता ५ ५४ ७८
पाता—पत्ता २८
पान—पत्ता १४
पाया—नींव ५
पारंबी—वटवृक्ष की जटा ८१
पावक—आग ४१
पिचना—चुनना ७५
पिई—पी १५
पिन—? २८
पिन्हाना—पहराना ६
पिरत—प्रीति १८ ७१
पीतपाल प्रेमी ६५
पीर—पीड़ा ८५
पीव—प्रिय १७
पुरी—नगरी ३१
पूर—बाढ़ ४४
पूरना—भरना १४
पेखना—देखना ६१
पेड़िया—वृक्ष १७
पैनना—पहनना ५२ ७३

फ

फंद—फंदा जाल ८४

फग्गाग्रा = पटाका ६५
फतर = पत्थर ४६
फनक = पटम ६८
फौक = पंगड़ी (फूम) ५१
फौम = ? ६१
फ्वारा = फुहार ५०
फूंद = फूंदा ६१

ब

बंद = बंधन ११
बंदना = बंधना ८१
बंदी = बांधी ११
बक = बगुला ६४
बचन = वचन ६५
बट = बाट ६२, ७०
बढ़ावा = वृद्धि ५२
बधावा = मंगलगीत बधाई का गीत २५, ५७
बल = रंग २२ २५
बसंदर = अग्नि ४४
बहीं = बाँह ५७
बांधना = बचना ११
बाज = बिना ८१ ८५ ८६
बाट = रास्ता ६२ ८६
बारिश = वर्षा ७१
बाम = यथा २८
बामेबाम = पूरी तरह ८८
बाव = हवा २४ ४१
बास = गंध २८
बिरम = बचैन ५६
बियाहारी = बियाबानारी ८६
बिरगन = बहरणीर ८०
बिन = बिन ७१
बिमरना = भूलना ४४
बुड़ बुड़ा = बड़बुड़ा (पानी) ४२
बद = बद्धि २८ ४
बूम = धूम ६२
बचम = बेचैन ७४
बेगम = निश्चिन्त ४२
बेदर = ? ७८
बैन = वाणी ६१
बिदंग = मृदंग ६६

भ

भँवर = भौंरा २७
भड़कन = दुर्गद्वार ५८
भया = भय १६
भया = भ्राता १६
भरम = भ्रम, रहस्य ४१
भाँत = प्रकार ११ ६८ ७४
भागीरथी = भागीरथी, गंगा ७६
भान = सूर्य ७०
भाना = डालना ३१ ८०
भाना = अच्छा लगना ८१
भार = बहार, शोभा ६५
भारी = भामन ६१
भान = माया ७७
भाव = रूप धन ६६
भिनी भीनी सुगन्धित ७१
भिबूती = भस्म ८१
भुई = पृथ्वी ५४
भुम = मौह ८१
भूकम = भामूषण ७२
भूनाग = शेषनाग ४४
भूम = भूमि ४४
भूमिदा = भूमि ३७
भव = भेष ८१ ६५
भेमर = भेंट ४६
भोगिया = भोगी ३४
भौर = भौंरा ४१
भी = भाग ७४

म

मोच = मोग (सिर की) ७६
मास = मर्म ५६
मन्दिर = मन्दिर ५

गाखी — गरत १५, ६६
माग — गर्वड १८
माग — मावर ७४
मामा — मतोका एक प्राभूषण ७८
मिठाई — मिठास २६
गिरमिया — मृग १६
गिरहुना — मिलाना ६६
गुंमत घेपीका फल ५४
गुन — गुन ६०
मुनका — माहृति ११
मुकुत — मोती ६४
मुज — गुप्त ८१
मुया — मृत १०
गुरम्कना — मुरम्माना ४१
मू — मुंह १२
गेम — गेम मावत ६१
गेहरे करतार ईश्वर की दया ६०
मोपू — गुफ्त ए ६१
मोहन — प्रिय ६५, ६६
मोहम प्रेमिना ७५
गोहिया — गुण करने वाला १८
ग्याने में २८ १४

म

मकोग — मरैमा ६२
मता — इतना ७० ७४
मधी — इतनी ५७
मू इस तरह २७
गु — यह २२
मेती — इतनी ९७

र

रंग रंग — रंग बिरंगा ४६
रंभा — रंभा (भाजरा) ६७
रगत — रक्त ४४
रज — राजा ४४
रतन — पवित्र २१
राग — प्रीम २१ ११ १६, ६६

रसाल — रसा, मधुर ६५
राय — राजा १७
रावत — वीर ४०
रीज — प्रेम ७२
रीत — रीति, ढंग ८०
रूं — रोग ७४
रूं रूं — रोम रोम ४६
रेवती — रेवती (पुष्प) ५१
रेखा — रेखा ८१

स

सद — बहुत ७७, ८१
सबक सबक बना (?) ६४
सरा — सारा ८४
सग — सब २४ ११ ११
सजन — साजन, सुहृद २७
साग — पोर गार्थ गमाग मर बाजने का
समान ६८
साथ — सज्जा ६६, ८६
साजना सजाना ५२
सात प्रिय ७१
सालम — प्रिय ८६
सालक — समान प्रेम ८१, ६०
सिकना — सिगा ७२
सेलना — देना ६० ६१
सोभिया — साभी १८
सहज — सहज ८४

व

बई — वही ११
बहन — मोभला ६१ ६६
बत — बतो ४४
बरक — बर्षा २६
बा बा ४१
बिरह — मध ४८ ५०
बिरह — बिछोह ४१
बाँ — वहाँ २४, ७६, ८०
बेमन — बेदना ८६

دوهره

پیا بچھڑت من اوک پڑے اور نیناں کوں سکہ نانہ

سبھ دن تبہیں ہوئے گا پیو آون مجھ ٹھانہ

پہلی ہا کہ حضرت شاہ فرمودا اند

میانے ملائی بھیتر رس

آس پاس جھوٹ دس

ایضاً

سر دفتر این محل را چو شمس

دہد دہرہ را این مکان نور و مست

فزون باد عشرت دریں بزمگاه

کہ باشد ہمیشہ خلائق پناه

दोहरा

पिया बिछुरत मत सूक परे
मीर नयनों कूँ सुस नाह।
सूम दिन तबही हायगा
पिय मावन मुज ठाह।

पहली हा कि हजरते शाह
फरमूवा मन्द

मियाने मलाई भीतर रस।
मास पास मूठ दस।

(मारियस)

सवाद शाहनामों ई महल रा चू शम्स
देहद दोहरा रा ई मना नूर वो मस्त
फुजू बाद इमारत दरी बरम गाह
के बाशद हमेशा खुलायक पनाह

पृ० १०१ और १०२

शब्दावली

अँग — अंग ६६
अँचल — आँचल ५७
अँगिया — आँगी १३
अंब — आम ५१ ६५, ७३ ६०
अँगेठी — अँगीठी ४१
अँजल — अंजलि ६६
अँसू — आँसू ८५
अँटना — प्राप्त होना ५४
अंब — आम ५४
अंबर — आकाश ५०
अगर — एक सुगन्धित पदार्थ ५७
अगम — आगे ४८ ७८ ६१
अगला — अधिक १६
अचरम — अचल ५१
अचल — पर्वत ५०
अचला — पृथ्वी ४२
अछूत — अस्पर्श ७३
अतंका — आशंका आश्चर्य ५६
अटना — रहना होना २२ २४ २६ ३६ ७३
अजूँ — अभी आज भी २७
अत — अति बहुत ४५, ८७ ६६
अदरन — अधिर ६६
अथा — था २७
अधार — आधार ५७
अधर — होंठ २६, ५६ ७
अनजान — अनजान ७१ ८५
अनें — आदना ६१
अन्धार — अन्धार ४३
अरदना — प्राप्त होना ५६
अरमन — करना मन ७६

अपनु — स्वयं अपना २८ ५६
अपारा — अपार ६८
अपै — आप ही स्वयं २२, ५२
अबरू — भौंह ७१
अबलोक — मिश्री ६६
अबोला — मूक ८१
अमल — पवित्र २५
अमरित — फलविशेष ५४
अमावस — अमावस्या ५६
अमोली — बहुमूल्य ५६
अरथ — अर्थ तात्पर्य ५७ ८०
अरसी — आरसी दर्पण २७
अरोग — अरोग्य १६
असन — बाण ६६
अबम — अम्बर पहने अबम २४
असारा — विनष्ट ५७
असमान — आसमान ४१

आ

आँसू — आँसू ४२
आरंभ — प्रारंभ ७०
आलिंगन — आलिंगन ३३
आली — सहेली ५७
आस — आश्वास ५१

इ

इच्छा — इच्छा ७४
इना — इतना ८ ५६
इतने — इतन ७८

ई

ईन्धन — ईन्धन

कना — कहना ६३
कोमल — कोयला ४४
को है — कौन है ८२
कौन्तेय — पशु म ४४

ख

खंरक — खटक, खाई ६३
खड्ग — तलवार ४२ ६०, ६२
खुरबद — ऊबड़ खाबड़ ४३
खन — योगी का वस्त्र विशेष ३१
खन — कहना २८ ४८
खपना — नष्ट होना ८३
खवास — दु पराये ७५
खमरक — फल विशेष ५४
खगा — कहा ७६
खता — हासा वृत्त २७
खदम — दड़बड़ ४६
खिमाा — खिसकना ३ , ७३

ग

गँवाना — खाना ५६
गज — हाथी ५०
गड़गड़ाना — गरजना १ ४२
गत — चाल मति ६६ ८०
गजमुरी — गले का आभूषण विशेष ७०
गवन — गमन २४
गाट — गाँठ ७२
गात — शरीर ७१
गिलाब — गुलाब ५१
गुंजकम — गुंजायमान गूमची ७८
गुमाई — स्वामी ११
गागना — पागना गरबर ८५
गौरमन्दा — हृदयमध ३३
घर बंधाना घर बनाना आदि ७८

घ

घट — शरीर, हृदय ३४ ३६ ४०
घट — घट नगर ३५, ६६

घड़ना — घटित होना बनाना ४६ ५८
घन — बादल ६४
घुट — घूँट ५८

च

चँचल — चपल २७
चँवर — चाँद ८०
च — ही ३२
चख — आँख २३ ६६, ७५, ७६ ८५ ६२
चपचप — बकवास गर्वभरी बात ४४
चरग्वान — एक प्रतिभाशाली ६६
चकम — चौड़ा ५२
चढ़ना — चढ़ना ४४
चातिक — चातक ३६
चाव — उत्साह उमंग रुचित ३३
चितर — चित्र ५३
चितारा — ध्यानपान करने वाला ६६
चितारा — चित्रकार ५८
चितारे — चित्रित किये ५३
चौपर — चारों चार ५१
चौसार — चतुर

छ

छंद — छल आडम्बर उपाय ३६, ८४
छपना — लुप्त होना ७६ ६८
छटे — लुप्त २८
छजा — छजना २४
छतियाँ — स्तन ३३ ३४
छरना — छिरना ३६, ५६
छव — छवि ६८
छना — छन्ना ६६
छाँद — छाया ६६
छिब — छवि विलगन ३३ ३४
छिकना — क्षीण होना ३८ ५७
छिया — छूने दिया ३६
छीजना — क्षीण होना ३८

ज

जर — जर कुम ८१

जड़त — जड़ाव नग ५७
जती — यति, संन्यासी ३२
जनाना — प्रकट करना २६
जम — स्वामी, यमभीत ५७
जमजम — स्वामी २५
जस — यश ६३
जाँ — जहाँ ६१
जाइ — जाति (पुष्प) ५३
जाड़ना — जड़ना ६३
जामा — जन्म देना प्रसव करना ३३
जिते — जितने ४० ४३
जिगर — जिगर ७३
जिने — जिसने ४६
जिया — प्राण जीव १४, १६
जुग — दो ६३
जुगुत — युक्ति ८१
जुही — जूही (पुष्प) ५२
जू — ज्यों जिस तरह ५७ १४
जूई — जूही (पुष्प) ५३
जूही — जूही (पुष्प) ५२
जेती — जितनी ५७
जेते — जितने ४० ४७
जोग — योग्य ५
जोबन — यौवन स्तन ३३ ३५ ३७ ७०
जो लगों — जब तक ६५
जोती — ज्योतिषी ३३
ज्यूं — जिस तरह २२

झ

झकारा — झकोला ५५
झझर — सुराही ५० ५७
झमका — चमक २२
झाँ — जहाँ ६४
झाज — जहाज ६३
झाड़ फर — पेड़ और फल २५
झिलता — चमक ५०

ट

टीक — टीका, सिर का आभूषण विशेष ४८
टीका — टीका " ७३

ठ

ठ्या — ठप्पा ३६
ठाड़ा — खड़ा ३६
ठार — जगह ६४

ड

डसना — साँप काटना ४२
डोंगर — पर्वत ४३
डोबाना — डुबाना ८१
डोरा — डोरा (धागा) ७८

त

तईं — प्रति ३६ ६६, ७८
तगट — विस्तार, फर्श २७
तड़कना — गरजना ५६
तड़पना — तरकना ३०
तड़फड़ाना — तड़फड़ की ध्वनि करना ४२
तहाँ — तब वहाँ ३६ १८ ५२ ७५
तन — शरीर २४
तलक — तक ५० ६०
तल सिर होना — सिर नीचा करना ४६
तले — नीचे १४
ताल — ताल (संगीत) ७५
ताल = घंटा ७६
तितने — उतने ६६
तितें — वहाँ ६५
तिय — स्त्री ७६
तिया — स्त्री ६५
तिरजग — तीन लोक २६, ६०
तिरलोक — तीन लोक ७४
तिरिया — स्त्री ६५
तिल — क्षण ७४ ७४
तिल — शरीर का श्याम चिह्न १८
तिस — उस ३६ ४० ५६

नजीक — निकट ४१
ननकी — छोटी ५७
नन्हा — छोटा ४८
नमन — नरमी ७६
नरमी — कामलता १२
नवस — नया नवीन ५५
नवा — नवीन ५६
नवाना — झुकाना १०
नावक — (?) ७७
निश्चम — स्वच्छ निर्मल २५ ५४
निरूम — पवित्र स्वच्छ ४८
निपाना — उत्पन्न करना उपजाना २५
१० ६१
निपाया — निपजाया उपजाया २६
निबम — निर्मल १२
निरवाना — निराना ७८
निस — रात ५१
नोठुर — निष्ठुर ७२
नेह — स्नेह ८१

प

पंक — कीचड़ २७
पंखी — पक्षी २८
पखेरू — पक्षी १८
पठाना — भेजना १० ६२
पढ़ना — पढ़ना ४५
पत — प्रतिष्ठा १२
पतों — पताकाएँ ५७
पत्तर — पत्ता ८१
पदमिनी — पद्‌मिनी ७७
पन — किन्तु ६१
पनवाना — बदनाम होना ७४
पय्याँ — पाँव ६५
परकाट — चोट तलवार का घाव ४५
परकास — प्रकाश ७५
परगट — प्रकट ६६
परताब — प्रताप ७७
परधान — प्रधान ४०
परना — पढ़ना ५४
परमल — सुगन्धि सुगन्धित ५१ ५४ ७५
परस — पारस ११, ८४
पराम — प्राण ७०
परिमल — सुगन्धि ५१
पल — क्षण ४७
पलक — पलक ११ ६१
पसाना — चीखना बिलखाना दूरी पर
जाना ५७
पापना — पग रखना ८१
पाँच — पंचरत्न (स्वर्ण हीरा नीलम लाल
मोती) ५४
पाच — हीरा पचरत्न („) २६, ८७
पाट — दरवाजा ११
पाइना — वासना २५
पात — पत्ता ५० ५४ ७८
पाता — पत्ता २७
पान — पत्ता १४
पाना — नीच ५०
पारखी — वटवृक्ष की जटा ।
पावक — पाप ४१
पिचना — चुनना ७५
पिई — पी १५
पिम — ? २८
पिन्हाना — पहनाना ६
पिय — प्रीति १८ ७१
पीतपाल प्रेमी ६५
पीर — पीड़ा ८१
पीव — प्रिय १७
पुरी — नगरी ११
पूर — बाढ़ ४४
पूरना — भरना १४
पेखना — देखना ६१
पेड़िया — वृक्ष १७
पैनना — पहनना ५२ ७०

फ

फंद — फंदा, जाल ८४

फटाका—पटाका ६५
फत्तर—पत्थर ४६
फलक—पटल ६८
फाँक—पंखड़ी (फूल) ५३
फौज—? ६१
फुवार—फुहार ५७
फूँद—फूँदा ६३

ब

बँद—बंधन ३३
बँधना—बंधना ८३
बँधी—बाँधी ३१
बक—बगुला ६४
बचन—वचन ६५
बट—बाट ५२, ७०
बढ़ावा—वृद्धि ५२
बधावा—मंगलगीत बधाई का गीत २५, ५७
बरन—रंग २२ २५
बसंतर—अग्नि ४४
बहाँ—बाँह ५७
बाँधना—बंधना ११
बाज—बिना ८३ ८५ ८६
बाट—रास्ता ६० ८६
बारिस—वर्षा ७३
बाल—युवा २८
बालबाल—पूरी तरह ८८
बाव—हवा २४ ४३
बास—गंध २८
बिकल—बेचैन ५६
बिरहाकारी—वियोगकारी ८६
बिरस्पत—बृहस्पति ८०
बिस—बिष ७६
बिसरना—भूलना ४४
बुर बुरा—बुदबुदा (पानी) ४२
बुध—बुद्धि २८ ४०
बूज—बूझ ६२
बेदन—दर्शन ७४
बेकस—निराश्रय ४२
बेदर—? ७८
बैन—वाणी ६३
बिरग—मृदंग ६६

भ

भँवर—भौंरा २७
भड़कल—दुगदार ५८
भया—भय १९
भया—भ्राता १९
भरम—भ्रम रहस्य ४१
भाँत—प्रकार ११ ६८ ७४
भागीरथी—भागीरथी, गंगा ७६
भान—सूर्य ७०
भाना—वासना ११ ८०
भाना—पसन्द ममता ८३
भार—बहार, शोभा ६५
भारी—वाम्भन ६३
भाल—माथा ७७
भाव—ढंग प्रेम ६६
भिनी—भीनी सुगन्धित ७१
भिभूती—भस्म ८१
भुइँ—पृथ्वी ५४
भुक—भौंह ८१
भूकन—आभूषण ७२
भूनाम—अपमान ४४
भूम—भूमि ४४
भूमिया—भूमि १७
भेद—भेद ८१ ६५
भेनर—श्रेष्ठ ४६
भोमिया—भोगी १४
भोर—भौंरा ४१
भौ—बहुत ७४

म

माँग—माँग (सिर की) ७६
माल—मार्ग ६६
मानिक—माणिक्य ६५

माती — मस्त १५, ५६
माम — पसंद १८
मान — आदर ७४
मामा — पगका एक आभूषण ७८
मिठाई — मिठास २६
मिरगिया — मृग १६
मिल्हना — मिलना ६६
मुंबस — घेंचीका फल ५४
मुक — मुख ६०
मुक्हा — आकृति ११
मुक्त — मोती ६४
मुख — मुक्ष ८१
मुया — मृत १०
मुरझना — मुरझाना ४१
मू — मुंह ६२
मेघ — मेघ बादल ६१
मेहरे करतार — ईश्वर की दया ६०
मोसुं — मुझ से ६१
मोहन — प्रिय १५ ६६
मोहन — प्रेमिका ७५
माहिया — मुग्ध करने वाला १८
म्याने — में २८ १४

य

यकंग — यकैसा ६२
यता — इतना ७० ७४
यती — इतनी ५७
यूं — इस तरह २७
यू — यह २२
येती — इतनी २७

र

रँग रँग — रंग बिरंगा ४६
रँभा — रंभा (अप्सरा) ५७
रवत — रक्त ४४
रज — राज्य ४४
रसत — पंक्ति २१
रसन — जीभ २१ ११ १६, ६६
रसाल — सरस मधुर ६५
राय — राजा १७
रावत — वीर ४०
रीज — प्रेम ७२
रीत — रीति, ढंग ८०
रूँ — रोम ७४
रूँ रूँ — रोम रोम ४६
रेंवती — रेवती (पुष्प) ५१
रेका — रेखा ८१

ल

लइ — बहुत ७७, ८१
लकड़ — लकड़ बग्गा (?) ६४
लख — लाख ८४
लग — तक २४ ११ ११
लगन — शुभ मुहूर्त २७
लाग — चोर मार्ग मकान पर चढ़ने का सधान ५८
लाज — लज्जा ५१ ८६
लाजना — शरमाना ५२
लाल — प्रिय ७३
लालन — प्रिय ८६
लावक — लगाव प्रेम ८१ ६०
लिकना — लिखना ७२
लेखना — देखना ५० ६१
लोभिया — लोभी १८
ल्हऊ — रक्त ८४

व

वई — वही ११
वझन — बोझल ५१ ५६
वते — उतने ४४
वरक — वर्षा २६
वस — वश ४१
विरव — पथ ४८ ५७
विरह — वियोग ४१
वाँ — वहाँ २४ ७१ ५०
वेदन — वेदना ८५

स

सँभाल — साथ २४ ८४
सँवरना — सजना ५२, ७२, ७८
सँवार्या — सजाया २४
सगल — सब २५, ८२
सपना — संपून १८
सगली — सब २१
सगरी — संपूर्ण ६४
सचा — सच्चा १४
सटना — डालना पटकना रखना २१ १५,
    ४१ ५७ ६१ ८५
सरना — पूरा पड़ना बीतना ८१
सरीखा — समान ८६
सम् — प्राप्त ११
सनों का — सबको ११
सम — समान ५०
समुंद — समुद्र ८१
समदूर — समुद्र ६७
समुंद — समुद्र ८१
सरस — रस्य २४
सरन — शरण २६, ६६,
सराया — प्रशंसित ११
समरना — स्मरना ४६ ७६,
सहाबी — हज़रत मुहम्मद के साथी, प्रमुख
    ६०
साँई — मालिक १८
साई — मालिक २१ १६
साजना — सजना ४६
सान — साथ ६८
सामिया — स्वामी १६
सारखा — समान ४५ ५४ ६६
सार होना — सवार होना ४१
सारे — सर्वत्र ६१
सिंगी — शृंगी ८१
सिखाना — सिखाना १०
सिरजना — उत्पन्न करना ५६
सिना — प्यारी ५७
सिरीजन — प्रिय ७१
सिस — शीश ७१
सिरफूल — सिर का आभूषण ६६
सुद — शुद्ध स्वच्छ ७८ ८१
सुर — स्वर बजना ४५, ७१
सुधन — युवती ६६ ७०
सुरस — सुन्दर ७८ ७६
सुरताल — रिक्ताल ४२
सुरिज — सूर्य ७६
सुर्जन — प्रेम ८०
सुहाना — शोभित ४७
सुहानी — सुन्दर ७५
सुरा — कागज़ का चिह्न (चाँद में) ७५,
    ७८
सूर — शूर १६, ४६
सूरिज — सूर्य ७०
सूरिया — सूर्य ६८
सेंती — से २६
सेती — से ३१ ४१
सेने — स ६१
सेवकी — दासी ७२
सस — साथ साथ ५४
सैन — इशारा ६८
सोन्न — सोना ५६
सोंहार — संहार नाश १७
सोहना — शोभित होना ७८, ६१
सौ — सौम्य ८६
सौत — सपत्नी ७४
स्यारे — सब २८

ह

हथ — हाथ १४
हक — ईश्वर सत्य ६५
हशाप — व्यापार ५६
हर — सिर १५ ७२
हड़बड़ाना — भयभीत होना घबराना ४२
    ४१, ४५

हत — हाथ ४६, ७७
हमम पर — हम पर ५६
हमना — हमें ८२
हरन — मृग ११
हसद — हस्ती २७
हवाई — एक पातिशबाजी ६५
हाँस — हँसली (गले की हड्डी) २७
हात — हाथ ८०

मसी पादिस शाह का क

हात चढ़ना — मिलना ४२
हाथे — कारण ७४
हित — प्रेम ७४
हिया — हृदय २८, ३७, ७१
हेहात — हाय हाय ८३
होर — पीर ४१
होसर — प्रिय ५२
हौंसना — प्रोत्साहित होना ६५

अरबी और फ़ारसी
(तत्सम तथा तद्भव)

आशिक़ — प्रेमी ८१
आहो अफ़सोस — लंबी साँस और खेद २१

इ

इक़बाल — वैभव ८८
इख़लास — प्रीत ६०
इनआम — पुरस्कार ८१
इनब — अंगूर २८
इनायत — कृपा अनुग्रह २८, ४५
इबलीस — शैतान ८१
इबादत — भक्ति २५ ११
इबारत — लेखन ८४ ८७
इमाम — धार्मिक प्रधान ५१
इम्तियाज़ — अन्तर ८१
इरफ़ान — ईश्वरज्ञान ८८
इल्म — ज्ञान ११ ६०
इल्मदानी — विद्वत्ता २१
इल्मे हीमिया — भूतविद्या ११
इस्म — नाम २१ १० ५१
इशरत — वैभव ७४
इश्क़ — प्रेम २८, ४०

उ

उमक़ — गहराई ५१
उस्ताद — गुरु आचार्य ४७

ऊ

ऊद — ऊद, एक सुगन्धित पदार्थ ८६

ए

एलिया — हज़रत अली का विरद १६

ऐ

ऐहतेराज़ — बचना दूर रहना ६१

औ

औज — ऊँचाई २१
औलिया — वीतराग ६१
औसाफ़ — गुण विशेषता २२, ४६

क

[illegible]मदार — दीपधर ७

अली आदिल शाह का काव्य-संग्रह

कचकोल — भिक्षापात्र कमंडलु १००
क़ज़ा — मौत ५१
क़बूल — स्वीकार ६५
कमंद — रस्सी ५१
कमान — धनुष ७०
कमीना — तुच्छ (व्यक्ति) ७२
करम — दया २१, ५८ ६६
करामत — चमत्कार १८
क़रार — शान्ति ढाढस ५७
क़रासिया — सेनापति १८
करीम — दयालु ५८
क़स्र — छोटा २२
क़लमकारी — चित्रकारी ४१
क़र्ज़ — ऋण ६
क़स्र — महल ६०
कहकशाँ — आकाशगंगा ७८
क़हर — क्रोध ४१
कहरवा — एक प्रकार का पीला १४
क़ाफ़िया — अन्त्यानुप्रास ८०
कारसाज़ — काम करने वाला ८७
किब्रिया — ईश्वर १८
क़िब्ला — पूर्ण ११
किस्वत — वेश २७
कीमिया — रसायन १५
क़ुतुब — ध्रुव (नक्षत्र) ५१
कुफ़ल — ताला ७५
कुफ़्फ़ार — काफ़िर (ब॰ व॰) ४२
कुफ़्र — ईश्वर की एकता को अस्वीकार करना इस्लामेतर धर्म को मानना १० ६०
क़ुबह — बुराई २१
कुम्मार — महान १६, ४६
कुर्सी — सातवें आसमान पर ईश्वर का आसन २६
कुव्वत — शक्ति ५५
कुशादा — विस्तृत १४

कुहन — पुराना २२
कूजा — प्याला ५४
कोहस — मेमार ५७

ख

खंजर — एक प्रकार की कटार ४४
खजिल — लज्जित ५३
खतर — खतरा ५१
खम — झुका हुआ १८, ५७
खमम — बाधा ५२
खाक — मिट्टी २५
ख्वाब — स्वप्न, नींद ४१
खासोआम — बड़े छोटे (लोग) ८६
खिदमत — सेवा ४०
खिलवत — एकांत २४
खुमखाना — मदिरालय २४
खुमार — नशा १५
खुम्मार — शराबी ४२
खसूसन — विशेष रूप से २१ ४८
खुशनवा — गाना गाया करने वाला ५८
खुशकद — अच्छे कद का ५१
खुशतर — अच्छा ८२
खुशनवीस — अच्छे अक्षर लिखने वाला ६२
खुशनुमा — शोभायमान ८६
खुशमस्त — प्रसन्न २८
खुशबयान — अच्छे ढंग वाली (कविता) ८७
खूब — विशेष ८०
खूबी — विशेषता ७६
खार — पसीना ७५ ७७
खोने — गुच्छे ५४

ग

गनीमत — लूट का माल ६४
गर — यदि ४१
गरचे — यद्यपि ४१
गर्द — धूल ४१
गलतान — धूलधूसरित लोटता हुआ, लोटता हुआ ६२
गव्वास — गोताखोर ४२
गिरह — गाँठ ४२ ६०
गुंचा — कली ८१
गुनाह — अपराध ५८
गुमराह — पथभ्रष्ट २६ ५०
गुमान — भ्रम २६ ६४
गुल — फूल गुलाब का फूल ४१ ५७ ७६ ७५, ७८
गुलजार — चमन उद्यान ७५
गुहर — मोती ४७
गोया — मानो ४६
गौहर — मोती ८७

घ

घर — घोड़ा २४
घमन — वाटिका ५४
घस्मा — स्रोत ७
घान्मी — चतुर्थ ४७
घिला — प्रार्थना ७७
घूंगल — पंजा ७७

ज

जंग — युद्ध ६१
जदवल — चित्र का हाशिया ५०
जफर — विजय ६०
जबाँ — जीभ ८७
जम — जमशेद नामक बादशाह ख्याति प्रसिद्ध ५७
जर — स्वर्ण ४७ ७१
जरतार — स्वर्ण सूत्र ५० ५४
जर्री — जरदार, सुनहरा २७ ५७
जरीना — सुनहरापन ५२
जरीना — गहना ५४
जर्द — पीला ४६
जल — नाश करना ५८
जलामत — लाम ४२
जवाब — उत्तर ७
जल्लाद — मारक ६२

जहाले अकबर — धर्मवीर ६१
जहाँ — संसार १८
ज़ात — व्यक्तित्व १८ ८२
ज़ाते बाबरकात — शुभ व्यक्तित्व वाला ८७
जाम — सुरा प्याला ५० ६५, ७८ ८८
ज़ाहिर — प्रकट ६४
ज़ाहिरी — बाहरी दिखावटी ६०
जामा — वेश ५७
ज़िया — प्रकाश ६५
ज़िरह — कवच ६०
जिस्म — शरीर ५१
जुर्म — जीभ ६४
जुल मिनन — ईश्वर ४
ज़ुल्फ — बालों की लट ७१
ज़ुल्फ़ेकार — अली की तलवार का नाम ६
ज़ुल्मात — अन्धकार ४०
ज़ुहरा — शुक्र (ग्रह) ५४
ज़ुहल — शनि (ग्रह) ५५
जेबा — सुन्दर ८८
जेह — रेशमी (धर की) ६०
जोरावर — शक्तिशाली ४४
जोरे जंग — युद्ध का ज़ोर ६१
जौक — प्रसन्नता २६ ४८

त

तकसीर — परिणाम भाग्य ११ ७८
तख्त — सिंहासन ६५
तगाफुल — उपेक्षा ४५
तजम्मुल — सुन्दर, शानदार ५२
तजल्ली — बिजली ५१
तबक — स्तर २४
तबल — बड़ा ढोल ६१
तबसा — डिबिया २१
तबा — स्वभाव २२ ४१ ४५, ४६, ७४
तमाम — पूर्ण ५५ ५६
तवस्सुद — जन्म १०
तशबीह — उपमा ६४
तबरीब — वैद्य २७
तहसील — अधिकृत ५१
तहसीन — प्रशंसा ४६
ता — जिससे ५५
ताक़ — कमान (घर) ६०
ताज — मुकुट ६६, ७
ताज़ी तर्ज़ — नई शैली २२ ८२
ताज लामा — धैर्य रचना ४१
तारीफ़ — प्रशंसा ४५
ताल मँडल — ताल और मँडला (वाद्य) ५५
तालीम — शिक्षा ४७
तावीज — तावीज ४६
तासीर — गुण ४४
तासीरे सीमिया — परकायप्रवेश की विद्या ६५
तुर्क ताज — वीर ६१
प्रतिमा — सुरमा १४
तूबा — स्वर्ग लोक का वृक्ष विशेष ५१
तेग़ — तलवार १७
तोहफ़ा — भेंट १०

द

दफ़ — डफ २८
दबीर — लिपिक ५५
दर — द्वार २१
दर्देसर — परेशानी ४४
दर्स — अध्ययन ४५
दस्त — हाथ ७७
दस्तूर — नियम ६०
दह,यद — मार्तंड ४२, ४४
दह,शम — दहम ४७
दाम — जाल ७६
दायम — स्थायी शाश्वत १६, ४८ ७१
दीन — धर्म २६, ३१ ३७ ४७
दुनिया व दीं — संसार और धर्म
दुरजक — पेटी ५७
दुर्रे अदन — अदन नामक स्थान का मोती २१
दुलदुल — हजरत अली का घोड़ा ४१ ४५

न

नंग — लज्जा ५६
नक्काश — चित्रकार ४१
नज़ाकत — कोमलता ७५
नज़ारा — दृश्य ७०
नबी — हज़रत मुहम्मद ईश्वर का सन्देश वाहक ५८
नरगिस — पुष्प विशेष जो आँख का उपमान है २८
नर्मतर — कोमलतर ७६
नसब — वंश ६१
नसीहत — उपदेश ७२
नहुम — नवम ४७
नाख़ुन — नख ४८
नाज़ुक — कोमल ५६
नाबात — मिश्री ७१
नात — हज़रत मुहम्मद की प्रशंसा से संबंधित कविता २६
नादिर — अनुपम ४० ४६ ७६
नामदार — प्रसिद्ध ६१
नामवर — सिद्ध ६०
नार — आग ६३
नारंज — नारंगी २८
नाल — घोड़े के पाँव में जड़ा जानेवाला लोहे का उपकरण ४१
नावेक — पा~ बाण बप्पसें ११
निगार — प्रेमिका ५६
निदा — आवाज़ ८८
निगीं — चित्र भाग ७० ७७
निज़ाम — रचना ६४
निहाल — पेड़ ५७
नीमानीमा — आधा आधा बराबर बराबर ५४
नुक्ता — बिन्दु गुर ४८
नुक्तादाँ = रहस्य का ज्ञाता ८७
नुसरत — रायत ४७
नुरूज — नबी का घर १३

नुमायाँ — स्पष्ट, प्रकट ६६
नूर — प्रकाश २४ ३२ ५१
नौ — नया ८०
नौ दर्द — नई दर्द ७६
नौशो — घर २७ ५२

प

पंजुमी — पंचम ४७
पयंबर — पैगम्बर ३० ६५
पलंग — चीता ४४
पस — अब समाप्त ३१ ६८
पा — पाँव ६२
पारा — टुकड़ा ५६
पीर — पूज्य वृद्ध ५४ ६१
पुरफ़नी — जादूगर ६१

फ

फ़ख़्र — गर्व ६१
फ़तह — विजय ६४
फ़तहो ज़फ़र — विजय ४४
फ़रेब — दमकार ६२
फ़लक — अंबर ७४
फ़रमान — आदेश ४०
फ़स्ल — पावस ३८ ७७
फ़हम — बुद्धि विवेक २२ ६५
फ़िक्र — चिन्ता २८, ५०
फ़िरदौस बरीं — ऊपरी स्वर्ग ६१
फ़र्द — पथिक ६४
फ़ौज — बस्तार ८६

ब

बदूर — हमारे पतिशिरेत ७४
बज़्म — सभा ३
बदन — शरीर २५, ४१
बनारस — बनारस विशेष २८
बरा — बर ५
बर — सिर ४८
बर्न — बर्तन ५३ ५८

वस्ल — मिलन ९१
वाज़ — प्रकट, स्पष्ट ४१
वाला — वस्त्र विशेष पूपशाही कपड़ा ८७
वाला — श्रेष्ठ ९१
विर्द — जप ७८
विलायत — वली का पद २९
वीरान — जंगल ४२

स

संग आतिशा — चकमकी का पत्थर ११
संदल — चंदन ५० ५१, ५२
सकसेन — विरह ४५
सक़फ़ — छत ५०
सखावत — दानशीलता, उदारता १८ १९
सखाकार — धर्मकार्य ४९
सदर — मध्यस्थ अध्यक्ष स्थान १२
सनअत — चतुराई, अलंकार (साहित्य) ४१, ८५
सनम — मूर्ति ५, ९१
सफ़ — पंक्ति ४१
सफ़दर सफ़ — पंक्ति भङ्ग ४०
सफ़्फ़ा — स्वच्छ २६, ६४
सफ़ा — पंक्ति, स्वच्छ २६, ५०, ५१, ७५, ८७
सफ़ीना — जहाज़ ४१
सबब — कारण ५१
समद — ईश्वर ८२, ९१
समन — चमेली २९
समाना — चतुर ११
सर — सिर ४१
सरताज — मुकुट १९ ४१
सरफ़राज़ — कृतार्थ ९२
सरवसर — श्रेष्ठता ४७
सरापा — नखशिख २७, ४८
सरो — वृक्ष विशेष जो क़द का उपमान है २८
सहन — आँगन २५

साफ़ी — स्वच्छ ८२
साबित क़दम — दृढ़ ४१
साया — छाया २१, २६ ४२ ४१
साहबज़मी — युग का अधिष्ठाता ४८
सिजदा — अभिवादन २४
सितारा — नक्षत्र २४
सिद्क़ — सच्चा ६०
सिपर — ढाल ६० ६१
सिफ़त — विशेषता गुण ७८ ८०
सिलह — शस्त्र ४४, ६०
सीना — छाती २६, ४०, ४१ ८७
सुख़न — वचन २४ ९२
सुख़न फ़हमी — वाक्पटुता २९
सुबहो शाम — प्रात सायम् २४
सुम — घोड़े के पाँव का निचला भाग ४१
सुरख़ाब — पक्षी विशेष ७७
सुराही — सुराही २८
सुर्ख़ — लाल १५
सुर्ख़रू — यशस्वी सफल (लाल मुँह वाला) ४४
सुलतान — शासक ४०
सूरत — आकृति ४१
सैरंग — रंगीन पत्थर विशेष ४८
सेर — [illegible]

श
१
ष
षमष

शरमा — चिह्न ४२
शरफ — कल्याण, बड़प्पन २७, ५० ५१
शरीअत — इस्लामी धर्मशास्त्र २९
शशुमी — छठा ४७
शहदो लबन — शहद और दूध २६, ४८
शाद — खुशी ५१
शामी सहर — सन्ध्या प्रात ७१
शायर — कवि ७८
शाहमात — पराजय ७१
शाहे नजनफर — हजरत अली १५
शाहे नजफ — हजरत अली ६५
शाहे मर्दां — नर पुंगव ६२
शाहे मुर्सल — हजरत मुहम्मद २६
शाहो गदा — बादशाह और फकीर २५
शिगुफ्तगी — प्रफुल्लता ६६
शिफा — स्वास्थ्य, कल्याण ४७
शीरीं — मधुर ४१ ७१
शुजाअ — बहादुरी १८
शुहरत — प्रसिद्धि ७४
शेरे खुदा — हजरत अली ४६
शोभा — शृंगार ४१
श्यामा — चतुर ४५

ह

हक — ईश्वर, सचाई २४ १८, ४५
हकीकत — वास्तविकता २६, ६०
हकीकी — यथार्थ ८८
हद्देबशर — मनुष्य की सामर्थ्य ७३
हफ्तुम — सप्तम ४७
हमकरीं — पास का, साथी ६६
हमवार — समतल ४३
हमाकार — कुशल कार्य साधक २२
हया — लज्जा १५
हयात — जीवन ६६
हर — प्रति ४१
हवस — इच्छा ६२
हसद — ईर्ष्या ५२
हश्तुम — आठवां ४७
हाला — घेरा चाँद और सूरज के चारों ओर पड़ने वाला वृत्त ४३, ७१
हासिद — ईर्ष्यालु ४३
हिकमत — उपाय ७४
हिदायत — शिक्षा उपदेश ४७
हिम्मत — साहसी ६१
हुदा — पथ ८४
हुनर — कौशल ६६
हुस्न — सौन्दर्य ४२
हूर — अप्सरा ४५
हूरी परी — अप्सरा और परी २४
हैदरी नाद — हजरत अली का जयघोष ४४

स

श

शरआ—सिर ५२
शरफ़—सम्मान, बड़प्पन २७, ३० ३१
शरीअत—इस्लामी धर्मशास्त्र २६
शम्सी—सूर्य ४७
शहदो शकर—शहद और दूध २५, ४८
शाद—ख़ुशी ५३
शामो सहर—सुब्ह शाम ७१
शायर—कवि ७८
शाहमात—पराजय ७१
शाहे नजफ़कर—हज़रत अली ३५
शाहे नजफ़—हज़रत अली ३५
शाहे मर्दां—नर पुरुष ६७
शाहे मुरसिल—हज़रत मुहम्मद ७६
शाहो गदा—बादशाह और फ़क़ीर ७५
शिगुफ़्तगी—प्रसन्नता ६६
शिफ़ा—स्वास्थ्य कल्याण ४७
शीरीं—मधुर ४१ ७१
शुजाअत—बहादुरी १८
शुहरत—प्रसिद्धि ७९
शेरे ख़ुदा—हज़रत अली ४६
शोला—अंगारा ४१
सयाना—चतुर ४५

ह

हक़—ईश्वर, सचाई २४ ३८, ४५
हक़ीक़त—वास्तविकता २६, ६०
हक़ीक़ी—यथार्थ ८८
[illegible]—मनुष्य की सामर्थ्य ७१
[illegible]—चन्दन ४७
हमनशीं—पास का, साथी ६१
हमवार—समतल ४३
[illegible] ७२
हवा—लालसा ३५
हयात—जीवन ६६
हर—प्रति ४१
हवस—इच्छा ६७
हसद—ईर्ष्या ६७
[illegible]—[illegible] ४७
हुमा—[illegible] और मुकुट के बारे [illegible] ४० ७१
[illegible]—[illegible] ४३
हिकमत—उपाय ७९
हिदायत—शिक्षा उपदेश ६७
हिम्मत—साहसी ६१
हुमा—पर ८९
हुनर—कौशल ६६
हुस्न—सौन्दर्य ४७
हूर—अप्सरा ८१
हूरो परी—अप्सरा और परी ८९
हैदरी नाद—हज़रत अली का [illegible] ४९